मौज़ी लोग

बलविन्दर सिंह फतेहपुरी



बलविन्दर सिंह फतेहपुरी ने गाँवों में बसते पंजाब को जिस सूक्ष्म रूप में देखा है तथा जिस रसीली वाणी में चित्रित किया है निसंदेह प्रशंसनीय है। मौज़ी लोग पढ़कर यह शक नहीं रहता कि लेखक के लिए अपने गाँव का संकल्प विस्तृत अर्थात विशाल है तथा वह इसका प्रयोग एक साहित्यिक युक्ति की तरह करना जानता है। फतेहपुरी का गाँव, इन शुगली (मज़ाकिया) तथा मौज़ी ठाकुरों से, जिंदगी के रंगरसों से धड़कता है। बेपरवाह किसी की ना मानने वाला पंजाब, रंग रंगीला, हँसता-खेलता, जिंदगी को साहित्यिक तरीके से मानने वाला पंजाब है। फतेहपुरी साहिब में ज्ञानी गुरदित्त सिंह भी हैं, गार्गी भी तथा सुबा सिंह भी। इस लिए उन्हें पढ़ना सम्मानीय है।

–डॉ. कुलदीप सिंह धीर

मौजी लोग

मौजी लोग

बलविन्दर सिंह फतेहपुरी

साहित्य प्रचारक
3011, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

ISBN : 978-81-88017-29-4

प्रकाशक : साहित्य प्रचारक
3011, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

मूल्य : 300.00

प्रथम संस्करण : 2017

शब्द संयोजक : ज्योति एंटरप्राइज़ेज, दिल्ली

मुद्रक : एम॰ एस॰ अंसारी प्रिन्टर्स, दिल्ली-110006

MOAGI LOG (Stories)
by : Balvindar Singh Phatehpuri

समर्पण

ज्यादा गंभीरता भी जिंदगी को नरकमय बना देती है। रोजमर्रा दैनिक जीवन का कार्य-व्यवहार, मानवीय जीवन को उदासीन तथा बोझल बना देता है। कुछ आदमी ऐसे भी होते हैं जो गंभीरता को त्यागकर, मौजीपन को अपने जीवन का अंग बना लेते हैं। यही मस्ताना स्वभाव उनकी पहचान बन जाती है। ऐसे लोग सारी उम्र अपने चौगिर्द हँसी व मुस्कान बाँटते जाते हैं। यहाँ भी वे जीवन निवाह करते अर्थात विचरते हैं, वह मज़ाकीय स्वभाव, उनके इर्द गिर्द को खुशी नुमा तथा आंनद से लाद देता है। यह पुस्तक ऐसे विचित्र व लट्टे आदमियों की अमर दास्तान को समर्पित है।

मौजी व्यक्तियों की दास्तान

मनुष्यों के जीने के अन्दाज़ अपने-अपने होते हैं। प्रत्येक जीवन शैली जन्मजात तथा विलक्षण होती है। हर कोई अपनी ही दुनिया में घूम कर खुश होता है। गांवों के जीवन में प्रकृतिकता तथा मौलिकता होती है, जबकि शहरी जीवन नकली, व्यापारिक तथा दिखावटी होता है। ग्रामीण लोगों में आमतौर पर झूठा ईज्जतमान नहीं होता। उनकी अन्तः तथा बाहरी जिन्दगी में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। वे जगत को खुश करने की अपेक्षा अपना रांझा राजी करने में विश्वास रखते हैं। इस मार्ग पर चल कर वे सारी मुसीबतों व मुश्किलों को खुशी से सहते हैं। उनमें शहरियों की अपेक्षा नैतिक कदरें कीमतें अधिक होती हैं। वे अपने आप अडोल व आत्मविश्वासी हैं। लोगों की नोंक झोंक तथा किन्तु-परन्तु का वह बहुत कम ख्याल रखते हैं। उनका आत्म विश्वास स्थिर होता है। वे जगत चर्चा की कम ही परवाह करते हैं। वे वेपरवाह व परिपक्व लोग हैं।

इन लोगों का मनोरंजन इनके जीवन में से ही प्राकृतिक रूप में (फूटता) अंकुरित होता है। इन लोगों को निजी मौज व मनोरंजन के लिए किसी नाटक, रेडियो या टी.वी. का सहारा नहीं लेना पड़ता। यह लोग अपने भाईचारे में हर दिल अज़ीज होते हैं। इनके चेले चमटे इनके गिर्द गुड़ की मक्खियों की तरह झूमते नज़र आते हैं। उनकी पूरी जी हज़ूरी की जाती है। उनका पानी भरा जाता है। इस उत्साह के कारण यह ग्रामीण व मज़ाकिया आदमी अपनी राह चाहे ठीक हो या गलत उसको त्यागने या बदलने के प्रति कदाचित विचार में नहीं होते। यह लोग चलता-फिरता मनोरंजन है। मौज मस्ती वाला व्यवहार इनके भीतर से चश्में की तरह फूटता है। इन मस्त व्यक्तियों की अपनी दुनिया चाहे संकुचित व सीमित होती है, इनके

प्रंशसकों का दायरा चाहे सीमित नहीं होता परन्तु इनको इस कमी की कभी (कतई) परवाह नहीं होती। उनको झूठे चापलुसों से क्या लेना देना है? वे अपनी सहज व कुदरती चाल आनन्द में अडौल चलते जाते हैं। जगत की चोंच-चर्चा की उनकी जाने बला। ऐसे लोग अपने इर्दगिर्द की जी जान होते हैं। जब वह जीते जागते हैं लोग उनकी हाथों से छाया करते हैं परन्तु जब यह लोग दुनिया से चले जाते हैं तो इनकी सीमित दुनिया में मातम छा जाता है। सारा नगर उनका शोक मना रहा होता है। शहरों में ऐसी घटनाएं कम ही नज़र आती हैं।

यह सच्चाई है कि ऐसे अस्मरणीय व्यक्तियों की बाहरी दुनियां में कोई खास चर्चा नहीं होती। उनका नाम कभी किसी समाचारपत्र, रेडियो या दूरदर्शन की खबर नहीं बना। लगता है जैसे वे गुमनामी में ही दुनियां से चले गए हों। वास्तव में ऐसे लोग अपने लोगों में अमर होते हैं। उनका गुणगान पूरे इलाके में सदियों तक होता है। यह लोगों के स्थानिक नायक होते हैं तथा उनकी प्रेरणा स्रोत होते हैं। डाडी, रासधारी तथा कवि सुर लोग, इन नायकों की किस्से कहानियों को लोगों का स्पर्श लगे तथा उनकी भरपूर प्रंशसा हो ताकि पश्चिमी रंग में रंगा यह जीवन भी गांवों की तरह हँसता खेलता नजर आए।

इस पुस्तक के पात्र आम लोगों की तरह अस्थि माँस के पुतले हैं। कल्पना से इनका कोई संबंध नहीं। केवल असली नामों को जान बूझ कर छुपाया गया है ताकि किसी किस्म की कटुता पैदा न हो। कोशिश की गई है कि इन लोगों की जीवन लीला को हु-ब-हु रुपांतरित किया जाये ताकि इनमें कुदरतीपन बना रहे! इन लोगों का कर्मक्षेत्र मेरे गाँव का चौर्गिदा है। इनका आपस में कहीं न कहीं संबंध है। इनको मैनें बड़े नज़दीक से देखाभाला है।

—लेखक

अनुक्रम

गज्जु दौरा

उसके घर का नाम गज्जन सिंह था। उसका मुँह दौरे की तरह चौड़ा था। उसे घर के छोटे नाम से गज्जु कहते थे, लोग उसके नयन नख्श देखकर गज्जु दौरा कहते थे। सारे इलाके में वह गज्जु दस नंबरी से प्रसिद्ध था। स्थानीय थाने में उस का नाम बस्ता वे के बदमाशों में गिना जाता था। वह प्राय: बार्डर कि तरफ जाता यहाँ उसका लाखों रूपए की अफीम का कारोबार चलता था। भारतीय तथा पकिस्तानी सरहद पर तैनात अधीकारी–ऑफीसर उसके जानकार व सहयोगी थे। वह बनता हिस्सापत्ती दे कर बड़ी ईमानदारी से अपना कारोबार चलाता था। इसी कारण सरकार के दरबार में, थाने कचहरीयों में उसकी तूती बजती थी। ऑफिसर लोग तो उसको झट से कुर्सी भेंट करते थे। तथा सेवा पानी की दिल से सुलाह मारते थे। दौरे को देखकर उनका दिल बाग–बाग हो जाता था। वह बाकी लोगों को तो छितर फेरता था परन्तु पुलिस अफसरों व सियासी नेताओं के पाँव छूता था। वे उसको बड़े अदब से जनाब कह कर पुकारते थे।

उसकी मूँछों को दो कुंडल पड़ते थे। दाड़ी वह छाँट कर रखता था। उसकी लोहे जैसी लाख रंग आँखे देखकर कमजोर दिलबाले घबरा जाते थे। वह गाँव के लोगों के साथ जल्दीकर बुरा बर्ताव नहीं करता था। उसकी दहशत ही इतनी थी कि लोग उसको दूर से सलाम करके दांए–बाएं हो जाते थे। उसकी एक आँख में जन्म में तिरछापन था पर इस बात का ज्ञान कम लोगों को ही था। उसके एक हाथ की छ: उंगलियां थी तथा दूसरे हाथ के केवल तीन। बाएं हाथ की दो उँगलियां धारा छबी की भेंट चढ़ गई थी। पर नज़दीकियों के इलावा किसी को इस बात की भनक नहीं थी। उसकी छाती पर कई निशान थे। यह सब निशान गोलियों व छुर्रो के थे। परन्तु उसकी पीठ पर कोई निशान नहीं था। वह मैदान का शेर था।

कभी-किसी मुहिम मे से वह कभी भागा नहीं था।

उसको आता देखकर लोग दूर से सलाम करके इधर-उधर हो जाते थे। उसके सामने आने की कोई हिम्मत नहीं करता था। उसके साथ पंगा लेना एक बड़ी मुसीबत शुरू करने वाली बात थी। गांव के एक नौजवान कामरेड़ ने उसकी एक बार पंचायत में निन्दा व नुक्ताचीनी की। पंचाचत में तो दौरे ने उसको कुछ नहीं कहा अपितु मुँह में मुस्कराता ही रहा। परन्तु बाद में पता लगा कि कामरेड को उसने एक झूठे मुकाबले में मरवा दिया। उसका कुछ समय तो शौर-गुल हुआ परन्तु बाद में उस कत्त का कुछ न बना। उसके दुश्मन साबुन की झाग की तरह बैठ गए। जबकि दौरे की दहशत और बढ़ गई।

एक बार दौरा सुबह-सुबह कचहरी में तारिक भुगतने जा रहा था। गाँव के एक कौने के रास्ते पर गाँव का प्राइमरी स्कूल था। दौरे ने गुजरते हुए स्कूल की तरफ एक नज़र मारी। एक पक्के रंग का मास्टर गाँव के बच्चों को पढ़ा रहा था। वह रूक गया तथा मास्टर को कहने लगा, "काका तुम कौन हो?" मास्टर ने झिझकते हुए कहा, "बापु जी मैं महिरा सिंह हूँ तथा मेरा गाँव जंडयाली है।" यह खबर सुन कर दौरा मास्टर के पास आ गया। वह अपने पौत्रों पोत्रियों जो उस स्कूल में पढ़ते थे, उनकी तरफ देख कर कहने लगा, "उठो तथा चलो घरों को। मेहरे भी कभी उस्ताद हुए हैं। यह तो देगां (चावलों के बड़े पतीले) उतारने वाली कौम है। इन्होनें हमारे बच्चों को खाक पढ़ाना है।" तत्पश्चात उसने अपने तथा अपने रिश्तेदारों के पोत्रों व पोत्रियों के कलासों (श्रेणीयों) से उठाया तथा धक्के से ही घरों को भेज दिया।

गज्जु दौरे ने सैंतालिस के उज़ाड़ के समय चमड़ी की चलाई थी। उसने अपने पड़ौसी मुसलमान गाँवों को खूब लुटा तथा कई मुसलमान जनानियों (स्त्रियों) को धक्के से अपने घर लै आया। उसके तीन भाई थे। उसने प्रत्येक को अपनी पत्नी के ईलावा एक मुसलमाननी (मुस्तिम औरत) ला कर दी। सब से सुन्दर वह अपने घर ले आया। उनकी घर वालियों ने बड़ा शोर मचाया परन्तु जट बाबे स्त्रियों की कहां सुनते है? वह चीखती चिल्लाती रही पर भुतरे (चामल) जट कहाँ स्त्रियों की सुनते हैं? कुछ दिन बाद, मुसलमान आप ही अपनी औरतें वापस पाकिस्तान ले गए। यह सब कुछ

पुलिस की सहायता से हुआ। गज्जु दौरे सहित उसके भाई बहुत दुखी परन्तु उनकी घर वालियां बहुत खुश थी। उनकी वाहेगुरू ने सुन लीं।

एक बार गज्जु दौरे को पुलिस पकड़ने आई क्योंकि उसने अपने गाँव वालों की जमीन पर नजायज कब्जा किया हुआ था। उसने ठेका भी ले लिया तथा जमीनें देने से भी इन्कारी था। यह परिवार गहने व जमीन दे देतें पर पैसे लेने के पश्चात मियाद से पहले ही धक्के से अपनी जमीन पर कब्जा ले लेते थे। जब पुलिस वाले गज्जु व उस के भाईयों को थाने ले जा रहे थे तो वह बोला–तो उसने अपने परिवार की कोई जरूरत नहीं। हम थाने ही जा रहे हैं। किसी बाहरी जगह नहीं। यह थाने हमारे बड़े बज़ुर्गो ने बनाये हैं। हम तो अपने घर जा रहे हैं। एक की पत्नी ने कहा कि कुछ पैसे साथ लेते जाओ। गज्जु ने घुमा कर उत्तर दिया, पैसे की क्या जरूरत है। हमने कोई सैर करनी है। जिनके पास चले हैं, साले आप ही हमारी सेवा करेंगे।

एक बार गज्जु को अफीम के व्यपार में बहुत फायदा हुआ। उसने शुकराने के तौर पर दरबार साहिब पर एक लाख रूपये का लंगर लगा दिया। गाँव आकर उसने सब गरीब गुरबे को दाल–रोटी बांटी। कई जिमीदार भी इस लंगर में शामिल हुए। उसने गाँव के मुच्छ–फुट गभरूओं को पाँच–पाँच किलो देसी घी की पीपीयां लेकर दी तथा उस साल शादी योग युवतियों को पाँच–पाँच हज़ार शगुन दिया। अकाली सरकार की शगुन स्कीम तो बहुत देर बाद आई। गाँव की विधवा औरतों को उसने सात हजार एक मुश्त सहयाता राशि दी। इस तरह गांव में गज्जु दौरे की बहुत प्रशंसा हुई। लोग उसके गुनाहों तथा कुकर्मों को भुलकर उसका गुणगान करने लगे। वह गाँव के महापुरूषों की तरह जाने जाना लगा। चाहे इलाके के लोग उसको एक तस्कर व बदमाश समझते थे तथा थाने में अभी भी उसकी तस्वीर लगी थी परन्तु गाँव वालों ने उसके सारे गुनाह माफ कर दिए थे।

गज्जु दौरा अपने–आप को सांड जट समझता था। वह पंडितो, खत्रियों, कंबोजों, लुहारों, तरखानों व शेष मेहनतकश जातियों को जट की प्रजा समझता था। वह पंडितो व खत्रियों को गाली निकाल कर बुलाता था तथा कहता था कि यह जातियां जटों से नीच हैं तथा जट तो सर्वेसर्वा हैं। वह खत्री महाजनों व ब्राहमणों को डरपोक व शैतान समझता था। यह जातियां

बाकी भोली-भाली मेहनतकश जातियों का शोषण करती हैं तथा इनकी मेहनत का मौल खाती थी। दौरे अनुसार यह जातियां लुटने वाली हैं इनको छेक देना चाहिए। इनकों गावों की कोई जरूरत नहीं। इन सबका स्थान जट ले सकते हैं।

गज्जु दौरे को गांव में मकबुल व इलाके में बदमाश व स्मगलर के नामों से जाना जाता था। इलाके के लोगों ने उसे ज्यादा से ज्यादा बद व बदनाम करने की कोशिश की। परन्तु गाँव के लोगों ने हमेशा उसे कन्धे पर उठाये रखा। बाहर दानव व गाँव में देवता लोग उसको समझते थे। गाँव में हमदर्दियों व सहयोग से उसको हमेशा याद किया जायेगा। उस जैसा खैर खाह आज तक हमारे गाँव में नहीं हुआ।

गज्जु दौरा। जिंदाबाद!

○

पंडित राम रक्खा

हमारे गाँव में पंडितों का एक कहता कहलवाता घर था। चारों तरफ इस हवेली की पूरी चर्चा थी। लोग उस के घर के सामने से सलाम कर के गुजरते थे। राम रक्खा जाटों में पला होने के कारण बड़ा अन्खी, जज्बाती, जिद्दी तथा बात का पक्का था। क्योंकि वह जाटों का अपने आप को गुरू समझता था। इस लिए जब लोग उसको जट पंड़ित कहते थे, उसको बहुत तल्लखी होती थी। अपने नाम के साथ जट लगवाना वह अपनी हठी समझता था। जिसके वह पीछे पड़ जाता, हटता नहीं था। जो भी उसके साथ दुश्मनी लेता अपने आप को जोखिम में डालने वाली बात थी। उसके साथ पंगा लेकर कोई भी खतरा शुरू करना नहीं चाहता। उसके साथ दूर की सलाम ही अच्छी थी। न उसके साथ दोस्ती अच्छी थी तथा न ही दुश्मनी। दूर-दूर से उसको लोग सलाम करना नहीं भुलते थे।

बाकी का सारा गाँव जिम्मीदारों का था उसकी राजनीति व रणनीति यह थी कि जाटों व जिम्मीदारों को बाँटकर रखा जाए। जाटों का एक धड़ा उसकी पीठ पीछे था। उसकी बोली बोलता था तथा उसको गाँव का बेताज बादशाह कहता था। चाहे दूसरा धड़ा राम रक्खे के साथ बहुत ईष्या करता था परन्तु राम रक्खा अपने विरोधिओं को टिच्च समझता था। जाटों के परिवार आपस में लड़ते रहते थे। कभी भी एक जुट होकर राम रक्खे के सामने नहीं आए। पंडित राम रक्खा एक पासकु था। जिस धड़े के साथ वह तुल जाता, वही धड़ा भारी हो जाता था। वह खुद एक ताकतवार जिम्मीदार था तथा सभी जट उसके मज़ारे थे। वह अपने जोड़ीदारों को दिल खोलकर सहुलते बाँटता था दूसरे धड़े वाले कंजूस कमीने थे। इसलिए खाने पीने वाले लोक प्रायः राम रक्खे की ही शोभा करते थे। उसकी हवेली उसके प्रशंसको से भरी रहती थी।

चहल-पहल व दारु व महिफलें, हमेशा उसकी हवेली की पहचान होती थी। सारे गाँव का घोड़ चड़ा सिर्फ व सिर्फ राम रक्खा ही था।

वह जाटों के बारे प्राय: यह कहता, "ओए जाटों, जमाना अब बदल गया है। यूँ ही अन्धेरे में मत रहना।" लोग अब जाग गए हैं। कोई किसी का गुलाम नहीं बनना चाहता। बस मज़बुरीयां ही आदमी को एक दुसरे के नीचे लगाती हैं। तुम सम्भल जाना। बहुत आपने चमड़े की चला ली हैं। लड़ने-भीड़ने के आप शौकिन हो। लड़ने भिड़ने से हमेशा नुक्सान ही हुआ है तथा हानि होती हैं। लड़-भिड़ कर तुम ने कुछ नहीं प्राप्त किया। बस गवांया ही गवांया है। अब भी सुधर जाओ। सौ जुता खा कर भी सुधरे तो क्या सुधरे? बाकि यदि तुम इस मुकाबले में हो कि हम बड़े दलेर व निड़र हैं तथा ब्रह्मणों क्षत्रियों को नीचे लगा सकते हो तो आप गल्त फहमी में हो। खत्रियों तथा ब्रह्मणों ने आपको दर्जनों बार सीधे राह डाला है। तुम्हारे घुटने टेकवाए हैं। बन्दे बन जाओ नहीं तो वह निकाल देखें।"

गाँव की शेष जातियों के बारे में वो कहता था, "तुम अपने आप को जटों के जोड़ीदार न समझो। जाट तो हमारा पानी भरते हैं। तुम अपनी औकात देखकर छलांगे लगाया करो। समझदार कहते हैं" जितनी कुत्तिया हो उतनी ही हड्डी उठानी चाहिए। गधे यदि शेर की खाल पहन लें तो शेर नहीं बन जाते। गधों ने तो गधे ही रहना होता है। इसलिए चुप करके अपनी आने वाली जगह पर आ जाओ। यदि इन कामरेडों के पीछे लगकर कोई किन्तु-परन्तु की तो मुँह तोड़ देगें। तुखम उड़ा दुंगा। बन्दे के पुत्त बना दुंगा। हुक्का पानी बन्द करवा दुंगा।" ज्यादातर तो उसके दबके को ईलाही हुक्म समझकर ही अपने पंख समेट लेते थे। यदि किसी को कोई भुलेखा होता तो राम रक्खे के गुमाश्ते, उनका यह शक दिनों में ही नृिवत कर देते थे। राम रक्खा इसी करके सर्व सम्मति से हर बार सरपंच बन जाता था। वह चमड़े की चलाता था। उसी के साथ गाहे-बगाहे कोई पंगा लेने कि हिम्मत कर लेता तो उसको मुँह की खानी पड़ती थी। चौर्गिद में उसी का डंका बजता था।

गांव के दले-मलीयों के बारे अकसर वह कहता है, आपको ईश्वर ने सब की सेवा के लिए भेजा है। आप चुप करके अपना परिवारीक पेश

संभालना, पढ़ना आपका कतई काम नहीं। हकुमतें करना आपके बस की बात नहीं। आप ईमानदारी से सब की सेवा करो। तथा ईश्वर की खुशीश व नियामतें प्राप्त करो। यदि किसी कामरेड़ के चुक्के-चुकाए कभी चुँ चां की तो ऐसा ठोकेंगे की धरती नज़र नहीं आएगी। अपनी ईल्लाही औकात में रहना ही ईश्वर की रज़ा में रहना है। गांव के अपनी औकात समझते हुए, राम रक्खे व शेष जिम्मदारों का पानी भरते थे।

पंडित राम रक्खा सब को अपनी प्रजा समझता था। उसका कहना था कि ईश्वर की तरफ से ही ब्राह्मणों के माथे पर ब्रह्म तेज होता है। जिसका सदका वह सारी सृष्टि के सरताज गिने जाते हैं। इस लिए जो भी ब्राह्मणों के साथ पंगा लेता है, कुदरत हमेशा उस का नाश करती है। मज़ारों को वह अपने मोहताज, मुजहारे व घटिया समझता था। राम रक्खे के मुताबिक यह कौम जन्म लेकर भी ब्राह्मणों का मुकाबला नहीं कर सकती। यह कौम नीच जाति से उपजी है, इस लिए स्वर्ण जातियों के साथ इनको पंगे बाजी नहीं करनी चाहिए। वह प्राय: कहता था "कुकड़ (मुर्गा) कां (कौआ) कंबौज, कबीला पालता, जट, भैंसा, संसार कबीला गालता।" राम रक्खे की दलील को इलाके के लोग सम्मान की नज़रों से देखते थे। उसने अपने कुटिल राजनीति तथा रणनीति से सभी जातियों को अपनी टांगों के नीचे से निकाला था।

वह हर साल दिवाली के मौके पर अपने जठेरों का मेला बड़ी धूमधाम से मनाता था। अपने दादा प. हकुमत राये की समाधी पर, उस दिन सारा गांव हाज़िर होता था इस शुभ मौके पर वह हाथी की सवारी करता था उपस्थित सारे गांव की परिक्रमा करता था। बैंड़ बाजों व ढोल नगारों से सारा गाँव का वातावरण गर्म हो जाता था। इस संगीत में सारे गाँव की आत्मा धड़कती थी। उस दिन वह सारे गाँव को भोजन परोसता। चारों तरफ राम रक्खे की प्रशंसा होती। राम रक्खा फूला न समाता। रात्रि को वह हर साल जागरण करवाता। सारा गाँव वहाँ उपस्थित होकर राम रक्खे को बधाई देता।

प. राम रक्खे का मुख्य शौक गाँव की सभी जातियों की सरदारी करना था। वह हर साल मुर्गों की लड़ाई करवाता तथा विजेता को इनामों से सम्मान देता। वह भैंसों की लड़ाई भी करवाता। अखाड़े में लोग भैंसों की लड़ाई बड़े

चाव से देखते थे। हर साल वह ज्यादा से ज्यादा हलवा खाने वालों की प्रतियोगिता भी करवाता था। पैटुओं को भी इनामों से सम्मानित किया जाता था। यह शौक पंडित राम रक्खे की खुशी थी। मेले लगाकर वह एक अज़ीब खुशी महसूस करता था। ऐसे मौजी बन्दे ने सारे गाँव की नुहार बदलने का जिम्मा लिया हुआ था। गाँव में हर कोई वस्तु उसे प्यारी नहीं थी। वह गरीब नवाज तथा हर दिल अज़ीज़ था।

जीवन में पहली बार वह कश्मीर गया। वहां उसके एक रिश्तेदार के लड़के की शादी थी। वह शादी के जश्न मनाते हुए वहीं बीमार हो गया। डाक्टरों ने उसका बड़ा ईलाज़ किया परन्तु घटी को कोई ईलाज नहीं होता। उसकी हालत दिन प्रति दिन बिगड़ रही थी। दिल के दौरे ने उसे असहाय व निडाल कर दिया था। अभी वह निरोग हो ही रहा था कि उसे दुसरा दिल का दौरा पड़ गया तथा वह इसी फानी संसार से चलता बना। उसकी अन्तिम इच्छा थी कि उसका संस्कार उसके गाँव में ही किया जाए। उसकी इच्छानुसार उसे गाँव लाया गया। उसकी समाधि उसकी इच्छानुसार दादे हकुमत राये के समीप बनाई गई।

आजकल उसका लड़का उसकी जायदाद संभालता है। परन्तु उसका मुकाबला पंडित राम रक्खे के साथ नहीं किया जा सकता। कहाँ राम राम कहाँ टैं-टैं! परन्तु फिर भी वह जैसे-तैसे जद्दी पुश्तैनी काम चलाए जा रहा है।

○

सवालिया (प्रश्नवाचक) साहिब

उसका नाम महिल सिंह था। उसके बड़े बुजुर्ग तरखाना काम करते थे। उसे चाचा हम इस लिए कहते थे क्योंकि वह हमारे बाप की उमर का था तथा सवालीया इस कारण पड़ गया क्योंकि वह जिसको मिलता कहता, 'तेरे आगे एक सवाल है छिन्दिया।' मुँह पर तो हम उसे सभी चाचा जी कहते पर पीठ पीछे हम सभी लोग सवालिया ही कहकर उसकी चर्चा करते तथा मज़ाक करते। दूर से आता देख कहते, "कन्जर के चुप कर जा, आ गया रे। किसी से कोई वस्तु माँगनी हो तो लोग सौ बार सोचते हैं पर चाचा सवालिया के लिए यह दाएं हाथ का खेल था। उसके स्वभाव में झिझक या नरमी कम थी। गाँव का कहता कहलवाता कोई एक भी बन्दा नहीं था, जिस के आगे चाचे सवालिये ने वगार न डाली हो। इसकी बुजुर्गी का ध्यान रख कर हर कोई उसकी वगार या सवाल का जवाब पूछ कर देता था। उसका घर या बाहर का काम कभी कम ही रूकता था क्योंकि वह रूकावट के समय झट से किसी न किसी को सवाल पूछ लेता तथा लोग हँसते रोते उसकी हाँ में हाँ मिला देते तथा चाचा सवालिया छलांगे मारता अपना रास्ता पकड़ता।

एक बार गाँव में तफतीश के लिए पुलिस आई हुई थी। यह तफतीश झगड़े के लिए थी। गाँव के वरिष्ठ महोदय सामने बैठे हुए थे। आदतानुसार चाचा सवालिया उठा व हाथ जोड़ कर क़हने लगा, "बच्चो वाले, एक सवाल है, कि पुलिस केवल वारदात के समय ही गाँव में आती है आगे पीछे भी फेरा मारना चाहिए ताकि वारदात न हो। बाबा आया करूँगा, चुप करके बैठ जा हमें काम करने दें। थानेदार ने गुस्से से अपनी लाठी घुमाते हुए कहा। पाँच मिनट के पश्चात चाचा सवालिए को फिर खारिश हुई, वह हाथ जोड़कर थानेदार के आगे एक और प्रश्न डालने लगा परन्तु थानेदार ने तुरंत झिड़क

कर बिठा दिया तथा अपने लिखने लिखाने के काम में मग्न हो गया।

परन्तु चाचे सवालिए की तसल्ली न हुई। उसे प्रश्न तंग-परेशान करते रहते थे। पुलिस वाले उस के सवालों का जवाब देकर अपना समय (मूल्यवान) बर्बाद नहीं करना चाहते थे। वह एक केस दर्ज करके उसके लिए जरूरी गवाहों के बारे में पूछताछ कर रहे थे। इतने में चाचे प्रश्नवाचक को एक और सवाल का दौरा पड़ गया। वह थानेदार के सामने गले में गमशा डाल कर सवाल करने के लिए खड़ा हो गया। थानेदार के गुस्से की कोई सीमा ना रही। उस ने आगे बढ़कर चाचे को दो चार धक्के मारे व चाचा चक्कर खाता गिर गया। थानेदार ने सरपंच से कहा, "सरपंच ले जा इस चव्वल को यहाँ से। हम अपना काम करें कि इसके सवालों का जवाब दें! पुलिस जवाब देती नहीं, लेती है। यह प्रश्न वाचक कहाँ से मेरे माथे मारा है। हम पुलिस वाले हैं, स्कूल के मास्टर नहीं कि ऐरे-गैरे के सवालों को जवाब देते रहें। ले जा इस कमबख्त को यहाँ से।

उधर थानेदार के धक्कों से पूरा खिलर गया था। उसने धीरे-धीरे अपनी पगड़ी, जूती (जूता) व डांग (लाठी) इकट्ठे किए व पगड़ी को सिर पर घूमाकर थानेदार को फिर से प्रार्थना कि, बच्चों वाले, "मैनें तो स्वाभाविक ही बात की थी, आप ने तो यूँ ही गुस्सा कर लिया। चलो कोई आप काम खत्म (समाप्त) कर लो मैं फिर सवाल कर लूंगा। थानेदार समेत सभी मुस्कराने लगे तथा चाचे की खस्ता हालत पर तरस करने लगे।

इसी तरह चाचे सवालिये ने लोगों को हज़ारों सवाल किए तथा सारे सवालों का जवाब लिए बिना वह निरंतर सवाल दागता रहा। जैसा कि गाँवों में आम चलता है कि किसी आदमी का कोई उपनाम पक जाए तो लोग बार-बार उस उपनाम को पुकार कर खुश होते है। इस लिए उसके अपनी नाम को भूल कर उसके उपनाम को याद किया जाता है। चाचे के साथ भी ऐसा हुआ। लोग चाचे की पत्नी (चाची) को सवालन तथा उसके बच्चों को भी सवालिए कहने लग गए। चाचे के लड़कों को वह परामर्श देती कि उनके पास वाहिगुरू का दिया सब कुछ है, इसलिए वह लोगों को सवाल रूपी वगारे डालनी बन्द करें। वह हां भी कर देता पर आदत से मज़बूर वह कभी-कभार कईयों को सवाल डाल ही देता। उस के लड़कों ने एक दिन उनको घर से

निकाल दिया, या समझो कि तंग आकर स्वयं घर छोड़ दिया। दोनों तरफ खुशी।

चाचा सवालिया जिसे अब लोग बापू सवालिया भी कहते थे, घर रहकर पहले ही तंग था कुबड़े को सीधा कर गई। वह नज़दीकी गाँव के गुरुदवारे बैठ गया तथा वहां बैठकर पाठ पुजा करने लगा। वह आराम से उगरही करने जाता तो लोग उसकी बिना सवाल पूछे ही माँग पूरी कर देते। उस गाँव के लोग भी सवालिए को जानते थे। इसलिए वह गाँव भी उसे बाबा सवालिया या भाई सवालिया कह कर पुकारने लगा। उसके लड़कों को उसका गुरुदवारे बैठना अच्छा नहीं लगा परन्तु उसको वे घर भी नहीं लाना चाहते थे परन्तु बायु सावालीया अपने पूजा पाठ के कारज में पूरी तरह से व्यस्त था तथा संतुष्ट था।

एक दिन उसके लड़कों ने मन बना लिया था कि बुर्जुग को वापस घर लाया जाए। लोगों ने इधर-उधर बातें उड़ानी शुरू कर दी थी कि, बापू सवालिये को लड़कों ने जलील करके घर से निकाल दिया है तथा वह भूखा मरता बेचारा गुरूदवारे जा कर बैठ गया। वह सारे पंखेरुओं (पंछी के बच्चों) को रोटी खिलाता रहा जब उसके खाने की बारी आई तो कंजरों को उससे बदबू आनी शुरू हो गई। कलयुग की यही निशानी है। ऐसी दंत कथाएं सुनकर वह उसे लेने गुरूदआरे पहुँचे। पहुँचते ही चाचा गुरूदआरे जाते झाड़ू लगा रहा था। लड़कों को देखकर वह अंदर घुस गया। लड़के भी अंदर जा घुसे। वह माफियां माँगने लगे तथा आगे से उसे रोकने टोकने से तौबा करने लगे। सवाल यह था कि अब वह चाची के साथ नहीं रहेगा। अलग कमरे में वह एकेला ही रहेगा। लड़के उसके इस सवाल को मानकर उसे घर ले गए। उसे देख कर चाची, जिस को वह रोती-बिलखती को घर छोड़ गया था, जली भुनी बोली आ गए हो, डीठ अब घर, पहले बाहर गन्दगी खाने गया था। लड़के उसे खींच कर दूर ले गए परन्तु चाचे ने जवाबी हमला जारी रखा तथा कहा, "कन्जरी तेरे कारण घर नहीं आया, यह तो छोकरे पीछे पड़ गए थे। नहीं तो मैं वहां आनंद से रह रहा था। ना किसी मुए की हिड़क न झिड़क।"

बुद्धिमान कहते हैं कि चोर चोरी से जाए पर हेरा फेरी से न जाए। बापू सवालिया सवेरे अन्न-पानी छक कर हवेली के बाहर गेट के समीप

चार-पाई डाल लेता था तथा आते जाते लोगों से बातचीत करता अर्थात गल्लें-गप्पें मारता। बातों-बातों में वह सवाल ही अर्थात प्रश्न ही पूछ लेता। लोग कुड़की में फंस जाते पर बाद में उसकी हवेली के आगे से निकलने से कतराने लगे। लोग या तो किसी अन्य रास्ते से गुजरते अन्यथा हवेली के आगे से जल्दी-जल्दी गुज़रते, बापू सवालिया। उन्हें पीछे से आवाजें मारता रह जाता। वह खीज कर कहता, "रब की कसम में कोई सवाल नहीं पुछुंगा,"

मेरी दो मिनट बात तो सुन जाओ। आप को में खा तो नहीं चला। परन्तु लोग उस पर विश्वास नहीं करते थे अर्थात वारस शाह आदतां न जांदीया चाहे कटीए पोरीयां-पोरीयां जी।

दो कदम कम चलना पर चलना अदा के साथ। हर कोई अपनी आदतों का गुलाम होता है। इसी प्रकार चाचा भी चाहे भीतर से दुखी था परन्तु सवाल डालने की आदत उसके बस में नहीं थी। अर्थात उसके बस का खेल नहीं था। वह घर-बार छोड़ सकता था परन्तु अपनी आदतें नहीं। परन्तु चाचा दिल का साफ व शरीफ था। उसका सवालीया पन उसके मज़ाक का कारण बना। वह आदमी था।

ऐसे आदमी आजकल कहां मिलते हैं। सारी उम्र उसने गाँव में रौनक ही लगा रखी।

O

पाशो नगर नायन

पाशो मंहगे प्रजापत की घरवाली थी। वह ज्यादा सुन्दर नहीं थी परन्तु गोरी चिट्टी थी तथा औरतों से आँखों से बातें करती थी। उसको नाक पर कोका बहुत जँचता था। जब वह बातें करती तो ऐसा लगता था कि आँखें जैसे तालिया बजा रही हों तथा कोका नाच रहा है। काजल की पुँछें निकाल कर जब वह शरीके तथा भाईचारे वालों के घर घूमती थी तो स्त्रियां उसका इन्तज़ार कर रही होती थी। उसकी बातचीत बहुत रोचक व नसीहत से भरी होती थी। न तो वह चुगली करती थी तथा न ही सुनती थी। वह किसी की निंदा कम ही करती थी। उसकी बातचीत का सलीका इतना प्रभावशाली था कि लड़कियां व औरतें उसकी बातचीत का पक्का यकीन कर लेती थीं क्योंकि वह अवकाश रहित घर-घर फिरने की शौकीन थी। इस लिए लोग उसे पाशो नगर नयन कहते थे।

उसका पति मंहमा किसी कारखाने में फोरमैन था। वह सवेरे काम पर जाता तथा शाम को घर आता वापस। पाशो घरवाले को शहर की तरफ भेजकर बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करती तथा बाद में घर के छोटे-मोटे काम निपटाकर वह नगर ही सैर के लिए निकल पड़ती। कई बार तो वह दोपहर का खाना भी लोगों के घर से खा लेती तथा पीछे बच्चे दादी के पास खेलते रहते। चाहे वह घर से बाहर होती परन्तु उसे घर की पूरी खबर होती थी। वह एक आध चक्कर घर का लगाकर फिर घूमने निकल पड़ती। ग्राम (गाँव) में उस समय बहुत भाईचारा था व लोग बहु-बेटी को गाँव में समान समझा जाता था तथा लोग खुश दिल से मिलते व खुल कर बातचीत करते थे। पाशो को यह महौल बहुत अच्छा लगता था।

पाशो को सारे गाँव का समाचार होता था। इस बार किस-किस की शादी

कहाँ-कहाँ होनी है? किस-किस की मंगनी होनी है तथा कहाँ होनी है? किस के घर में लड़ाई झगड़ा है व किस की बहु रूठ कर मायके चली गई है व किस की बहू वापस आ गई है? उसे विचोलों तथा उनके गाँवो का पता होता था। जब किसी के आँगन में सास-बहू की लड़ाई होती तो उसे पता होता था कि किसका कसूर अधिक है। उस की दो तीन सहेलियां थी, जो क्षण भर का समाचार पाशो के पास पहुँचाती थी व उनसे इक्कठा करती।

पाशो का कार्य केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं था बल्कि उसका सामाजिक पक्ष अधिक क्रियाशील था। पाशो सारे गाँव के लोगों को अपना विशाल परिवार समझती थी। इस भाईचारे में चाहे जातपात तथा धर्म के बन्धन कायम थे परन्तु यह बन्धन केवल रिश्तों-नातों तक ही सीमित थी। गाँव में जब कोई मौत हो जाती, वह विशेषरूप में उनके घर पहुँचती तथा उनके साथ अफसोस करती इसी तरह जब कोई बीमार हो जाता तो वह उस परिवार के घर या अस्पताल जाकर उसका हाल पता करने जाती। इस तरह के कामों में उसे याद कराने अर्थात कहने की कतई जरूरत नहीं पड़ती। अपितु वह आस-पड़ोस को साथ लेकर दुखी परिवार के साथ दुःख बाँटने जाती। कई रोगी उसकी मुस्कुराहट व मजाकिया बातें सुनकर आधे ठीक हो जाते थे। गाँव वासी पाशो का उनके घरों में आना शुभ समझते थे।

गाँवों में बहुत सी लड़कियां दिल के राज पाशो के साथ सांझे करती थीं। वह अपने भविष्य की रूप रेखा उसके साथ बैठ कर तैयार करती तथा अपनी कई मानसिक व शारीरिक़ उलझनों को उसके साथ निश्चिंत होकर कर लेती थी। उनको पाशो पर पूरा भरोसा था। पाशो किसी भी बात दूसरे के साथ नहीं करती थी ताकि कोई आवाजारी ना रहे। शादीशुदा बहु-बेटियां भी उस के पास प्रातः आती व मिलती तथा गपशप करती। हिदायत नामा खांबद पति अर्थात पत्नी व पत्नी नियमावली उसको कुदरत की तरफ से ही कण्ठस्थ थे। इसलिए वह मशवरे को पहल देती थी तथा आदर करती थी। ऐसे अवसरों पर उसके दिल में गाँव की इज्जत का सवाल बहुत हावी होता था।

एक बार गाँव की एक लड़की पड़ोसी गाँव के लड़के के साथ निकल गई। उस लड़की का पाशो के घर आना-जाना था। लड़के के माँ-बाप पाशो के पास भी आए व उसके बारे में पूछताछ की। उन्होंने उसकी शिकायत

उसके पति मंहगा सिंह से की। उन्हें शक था कि लड़की के ठिकाने का उसे जरूर पता होगा। परन्तु पाशो ने इस मामले में अपने आप को बेखबर बताया। उसका कहना था कि लड़की कभी-कभी उसके पास आती थी परन्तु उसने कभी अपने दिल का राज उसके सामने नहीं खोला था चाहे वो वापस चले गए पर उनका शक पाशो पर से पूरी तरह निवृत नहीं हुआ था। उनको जब पुलिस ने पूछा कि आप को किसी पर शक है तो उन्होंने पाशो का नाम लिया। पुलिस उसके घर तफतीश करने तो आई परन्तु पाशो ने उन्हें यही जवाब दिया प्रमाण न मिलने के कारण वे चले गए परन्तु फिर भी शंका से वे निवृत न हुए।

उधर जब भाग जाने वाली लड़की को पाशो की खींचा-तानी का पता चला तो उसे बहुत दुख हुआ। उसने अपने पिता को पत्र भेजा, जिस में उसने अपने पते ठिकाने के बारे में बताया तथा अपनी गलती को माफ करने के लिए निवेदन किया। दूसरा उसने यह साफ स्पष्ट किया कि इस मामले में चाची पाशो का कोई हाथ नहीं। उन्होंने तो मुझे ऐसा न करने की नसीहत दी थी। यह पत्र पढ़ कर वह खुश भी हुए पर पाशो पर इल्जाम लगाने की उन्हें बहुत शर्म महसूस हुई। लड़की के माता-पिता, पाशो के घर गए तथा माफी माँगी। पाशो ने उन्हें कहा पाजी मैं तो पहले ही कहती थी कि मैंने भी किसी बहू-बेटी का बुरा नहीं चाहा। मुझे आपकी लड़की का उतना ही दुख है जितना आपको। यह कह कर उसने दोनों को चाय-पानी पिला कर विदा किया तथा अपना शिकवा-गिला चाय के साथ ही पी गई।

पाशो की नीयत साफ थी। वह भूलकर भी किसी बहू-बेटी का गलत-सलत सलाह नहीं देती थी। गाँव की लड़कियां विवाह के बाद जब मायके वापस आती तो पाशो को एक बार जरूर मिलती व अपना दुख सुख सांझा करना। इसी तरह जब बहुओं को अपने परिवार में कोई मुश्किल आती तो वे भी पाशो की सलाह लेने दौड़ती। उसका परामर्श बड़ा संतुलित होता। उसकी सलाह लेकर किसी ने कभी शिकायत नहीं की थी। इन कार्यों की विधाता की तरफ से ही प्रवीणता हासिल थी। वह दादी-नानी की तरह दानी बातें करती थी।

एक बार निशाने नंबरदार की बहू अपनी सास से लड़कर मायके जा

पहुँची। वह भी जली भुनी पाशो के पास आती जाती थी। अपनी खाट के नीचे डांग फेरने की जगह वह पाशो के पास आई। आते ही सास ने ऊँची आवाज़ में बोलना शुरू कर दिया। पाशो ने अपना संतुलन कायम रखा। सच्चा आदमी इस तरह भी कर सकता है। सामने बड़ी कम-ज्यादा बातें मिनटों में ही उगल दी तथा पाशो पर उसकी बहू को भड़काने का इल्जाम लगाया। पाशो ने इस केस में अपने आपको निर्दोष व अन्जान बताया परन्तु फिर भी सास ने पाशो की बातें अनसुनी कर दी तथा आवा-तावा बोलती रही तथा घर से निकली। उधर बहू को जब इस बात का पता चला तो उसने किसी राह से पाशो के निर्दोस व अन्जान होने की मोहर लगाई। उसने पाशो की जगह अपनी सास को लड़ाई की जड़ बताया। जब नंबरदार को इस सच्चाई का पता चला तो वह पाशो से अपनी पत्नी की गलती की क्षमा माँगने आया। इस केस में जब गाँव के लोगों को पता चला कि नंबरदार की बहू को पाशो ने मायके जाने से रोका था, उकसाया नहीं। पाशो की इज्जत सास व ससुरों के दिल में दुन सवाई हो गई थी।

परन्तु इन घटनाओं में पाशो का बार-बार जिक्र आने से उसके पति मंहगा सिंह को बहुत परेशानी हुई। उसने पाशो को ऐसे कामों में दखल देने से रोका तथा भविष्य में उसका घर से निकलना बंद कर दिया। उसका पाशो के साथ लड़ाई-झगड़ा व ताहने बाजी बढ़ गई लगभग दोनों जीवों का आपसी विश्वास दिनों दिन कम हो रहा था। मंहगा सिंह ने पाशो को कहा, "जब गाँव में कोई कुत्तिया भी भौंकती है तो लोग तेरे पे शक करने लग जाते हैं। तुझे सौ बार कहा है कि यूं नगर नाईन की भांति न घुमाकर लोगों की तरह अपने काम धन्धे किया कर। तेरी घर टुई नहीं लगती इस वक्त मंहगा सिंह को कोई मिलने आ गया। इस कारण लड़ाई बंद हो गई। उसके जाने के पश्चात पाशो फिर शुरू हो गई, "मैं तेरी यह तोहमतें बर्दाश्त नहीं कर सकती। सारा गाँव मुझे सच्चा समझता है तू मेरा पति होकर भी मेरे सिर से कीड़े निकाल रहा है। मुझे नहीं मंजूर तेरी यह बंदिशे। मैं इस कैदखाने में कैदी बन कर नही रह सकती। संभाल तू अपना घर, मैं नहीं यहां रहना। यह कहकर के वह अटैची उठाकर बच्चों को रोता हुआ छोड कर मायके जाने के लिए बस स्टैंड की तरफ चल पड़ी। गुस्से से भरे हुए मंहगे ने उसे जाने से न रोका।

मंहगा रोटी पकाने से आतर हो गया। उसे बच्चे भी सम्भालने पड़ते थे। उसने कारखाने से अवकाश ले लिया। उसने काम के लिए एक नौकरानी रख ली। लोगों को जब पता चला तो वे मंहगे को कोसने लगे। उसको मजबूर करने लगे की वह पाशो को लेकर आये। उसकी शर्त थी कि वह आप गई है तथा आप ही आये। वह नहीं जाएगा। इस तरह कई दिन रूकावट बनी रही। मंहगे के सभी शरीकों ने इक्टठे होकर उसको पाशो वापस लाने के लिए मिन्नते कीं। नंबरदार निशान सिंह कुछ शरीकों कोदन इकट्ठा किया व मंहगे को खींच-खींच कर सोहरे ले गए। उन्होंने कहा पाशो जैसी देवी के साथ ऐसा व्यवहार करने से पाप लगेगा। मंहगे को अपनी ज्यादती का एहसास हुआ। पाशो को जबरदस्ती तैयार करके अपने गाँव ले आए। यह सुनकर सारे गाँव वासियों ने खुशियां मनाई तथा इस सुहाग जोड़ी को शगनों के साथ घर छोड़ जाए। आप तैनु लै जानगे, जिना नु लगेंगी तु प्यारी।

लोग यूँ नहीं पीछे लगते। यूँ ही नहीं सिफतें करते। यूँ ही नहीं किसी का साथ देते। लोंगों को अच्छे बुरे की पहचान होती है। अपने घरेलू काम तो हर कोई कर लेता है। माई का लाल वो जो सब के सांझे काम करे। लोगों का दु:ख दर्द पहचाने। पाशो क्योंकि सारे नगर की नब्ज पहचानती थी, इसलिए सारा गाँव उसके दुख सुख में उपस्थित होता था।

○

शिव दयाल यब

शिव दयाल हमारे गाँव के डाक्टर मनी राम डंड का बेटा था खत्रियों के लड़कों की तरह वह जट जिम्मीदारों के लड़कों से ज्यादा चुस्त चलाक था। प्रत्येक काम वह बहुत सुचेत होकर करता था। उसका पढ़ाई लिखाई में ज्यादा ध्यान नहीं लगता था। वह पढ़ाई से दिल चुराता था तथा कई-कई दिन स्कूल नहीं जाता। इस समय दौरान वह आपने बाप के इधर-उधर के काम करता रहता था। यदि पैसे धैले का या व्यपार का नुकसान होता तो उसका पिता उसको स्कूल भेजने से परहेज करता था। उसे सवाल जबाव करने व नुक्ताचीनी करने की आदत थी। हर वर्ष वह किन्तु परन्तु लेनी भी हो तो वह पूछ छान कर लेता। वह जल्दी से कोई वस्तु बारे कोई निर्णय करता। वह सौदेबाजी करने में बहुत होशियार था तथा कम ही कसारा खाता था। वह एक चीज लेने के लिए दस दुकानों से छानबीन करता था। खरीदने बेचने में उसे ज़न्मजात रूचि थी। आखिर वह खतोरा था।

वह सगे बाप पर भी यकीन नहीं करता था। यह गुण उसे मनीराम ने समझाया था। यह गुण उसने सारी उम्र छाती से लगाये रखा था। यदि वह किसी पर यकीन कभी-कभार कर लेता तो आँखें मींच कर उसके साथ काम करने लग पड़ता। उसके अंगसाक व यार-दोस्त उसके साथ खफा थे क्योंकि शिव दयाल उनका विश्वास नहीं था। किसी समय वह उनको तोड़कर जवाब देता था। वह चाहे स्कूल कभी कभार जाता था फिर भी उसके अंक रोज-रोज स्कूल जाने वालों से बेहतर थे। वह दसवीं पास करके लैबाटरी टैकनीशियन करने के बाद सरकारी अस्पताल में लग गया तथा तरक्की करता हुआ जल्दी ही मुख्य टैकनीशियन लग गया। पर उस बारे शिकायत थी कि वह अपनी ड्यूटी से प्राय: गैर हाज़िर रहता था। वह ड्यूटी के समय

अलग–अलग डाक्टरों के फुटकल कामों में व्यस्त रहता था वह खुश होकर उसकी हाज़री लगा देते थे। उसके सहकर्मी चाहे उससे नाराज़ रहते थे परन्तु फिर भी उसकी शिकायत नहीं करते थे।

उसकी शादी होने वाली थी तो उसने अपनी पत्नी के सर्टीफिकेट चैक करने की तीव्र इच्छा प्रकट की। उसके होने वाले ससूर ने उसी को पहले अपने सर्टीफिकेट चैक करवाने के लिए कहा। शिव दयाल कहने लगा, "मैं तो पहले ही सरकारी कर्मचारी हूँ। मेरे सर्टीफिकेट तो पहले ही सरकार ने चैक किए हुए हैं। आप चैक करवाएं। उस की घरवाली M.A. B.Ed थी तथा किसी पब्लिक स्कूल में प्राईवेट नौकरी करती थी। उसके दोस्त ने जब उससे पूछा कि उसने अपने ससुराल पर शक क्यों किया है। उसने कहा मेरे सर्टीफिकेट तो कच्चे पक्के हैं, जो मैंने अपनी चतुराई से महकमें से छीने हैं। मैं सोचता हूँ कि मेरी घरवाली के सर्टीफिकेट भी हवाई न हो जैसे कि मेरे हैं।

एक बार जब वह शादी के पश्चात बी.ए. फाईनल की परीक्षा दे रहा था तब उस के अगले परीक्षार्थी को फलाइंग ने दबोच लिया। शिव दयाल ने पीछे से हमदर्दी से कहा, जनाब जाने दो इसे, यह तो बेचारा यतीम है। इसके आगे पीछे कोई नहीं। इस पर रहम करो। उन्होंने रहम कीया व उसको सुखा ही छोड़ दिया। जब परीक्षा समाप्त हुई तो हाल के बाहर उस के आगे वाला विद्यार्थी उसके साथ उलझ गया। उसका कहना था कि शिव दयाल ने उसे यतीम क्यों कहा है? शिव दयाल ने कहा, 'मैनें तो तुझे तीन मिन्ट के लिए यतीम बनाया था तथा तुझे बचा लिया। उन्होंने तुझे तीन साल के लिए यतीम बना देना था तीन मिन्ट अच्छे या तीन साल? वह ला जवाब होकर चुप हो गया।

ज्यादा नौकरी उसकी शहर में ही रही। वह नौकरी करते ही डाक्टर खन्ना का मुरीद बन गया। खन्ना साहिब के परिवार के कई सदस्य इस सरकारी अस्पताल में तैनात थे। वे कई विभागों के मुखी थे। उनका बहू बेटा डाल कर, उनकी गिनती चौदह बनती थी। उस परिवार से पंगा लेने से पहले हर कोई सौ बार सोचता था। वह इस परिवार का घर का सदस्य था। तथा सारा दिन इस परिवार के छोटे–मोटे काम करता रहता था। वह कई महकमों में घुमता रहता तथा उसे हर दफ़्तर से बातचीत करनी आ गई थी। वह हर

महकमें में वकारी बन गया था वह खन्ना साहिब का नाम लेकर हर जगह दौड़ता फिरता था। वह पुलिस दफ्तरों में ऐसा भागा फिरता था जैसे फुफी के आंगन में भ्रमण कर रहा हो।

एक बार उस की एक वाकिफ पड़ोसन औरत को उसके ससुराल वालों ने उस पर बदचलन का अरोप लगाकर उसे घर से निकाल दिया। वह रोती विलखती घर वापस आ गई। उसने शिवदयाल से सारी व्यथा (कहानी) आप बीती की उसने औरत की सारी बात सुनकर सलाह दी, तुम्हारी अगर कोई रिर्पोट नहीं लिखता तो तु एस.पी. साहिब के सामने पेश हो जा तु ऐसा कर अपने बाल खिलार लेना व उनमें मिट्टी घटा डालकर अपना मुँह भी मिट्टी में लेप लेना तेरी शिकायत केवल पाँच मिन्ट में दर्ज हो जाएगी तथा तुम्हारा ससुराल तुम्हारे आगे-पीछे घुमेगा। पहले तो वह यह हुलिया बनाने से झिजकी परन्तु जब शिव दयाल जरूरी तौर पर जीद की तो उसने ऐसा ही किया। वह पेश हुई तथा उसकी शिकायत उसके ससुराल से पहले ही दर्ज हो गई। पहले वही थाने वाले उसकी बात सुनने को तैयार नहीं थे।

एक बार फिर गजब की घटना हुई। उसके दफतर के सीनियर मुलाजम ने शिव दयाल की गैर-हाज़री की महकमे को शिकायत कर दी। महकमे ने मुख्य दफ्तर में शिव दयाल की डियुटी लगा दी। शिव दयाल को हाज़िर होना पड़ा। बहुत ही अस्त्तर था। उस ने सवेर की डियुटी संभाल ली। उसने डाक्टरों को कहा टैस्ट शाम को रैफर कर दिया करें दुसरी शिफट वे मान गए। शिव दयाल सारा सभी समय खाली रहता। परन्तु जब उसके शिकायत करता की बारी आती तो उसे ही सारे टैस्ट करने पड़ते। वह दुखी हो गया। उसे शिव दयाल की करामात का पता चल गया। आखिर उसने अपनी पहली शिफट की डियुटी सम्भाली व शिव दयाल को फारग कर दिया। यही तो वह चाहता था।

उसके काम करने की विधि अपनी थी। आमतौर पर वह दुसरों के लिए मुसबितों खड़ी करने में माहिर था। लोग जब उसकी शक्ल देखते, तो कहते यह जरूर कोई जब डालेगा। पड़ भी जाता। जब वह शानिवार पैदा हुआ तो उसके दादा ने उसके बाप को एक तरफ करके कहा, "मनीरामां सुना है यह दिन अच्छा नहीं होता, उपाय करवाकर इस यब को परे कर (दुर कर), ज्यादा समय शानि की उपस्थिति अच्छी नहीं होती। उसके बाप ने सोचा के सारे दिन एक समान होते हैं इस कारण उसने कोई उपाय नहीं किया। परन्तु

उसकी माता उसके शनिवार जन्म के बारे बड़ी चिन्ता करती रही तथा वहम व यब में फंसी रही। वह जब बड़ा हुआ तो उसके मित्र पंडित ने सलाह दी कि वह शनि का उपाय करें, उसके सारे दुख कलेश दूर हो जाएंगे। उसने पंडित को कहा, "पंडित जी, मेरी तनखाह सप्ताह तक आने वाली है, आप अपने से पैसे लगाकर उपाय करो, मैं पाई-पाई वापस कर दुंगा।" यार पंडित ने अपने से समग्री लगाई व कई घंटे मन्त्र पड़ता रहा। शिव दयाल उसके सामने बैठ कर सब कुछ देखता रहा। उपाय खत्म हो गया व शिव दयाल को पंडित ने कहा कि अब सब दुख काले छाए से निर्लेप हो गए हैं। सप्ताह के बाद पंडित ने जब पैसे माँगे तो शिवदयाल ने कहा, किस बात के पैसे लोग मुझे तो अब भी यब कहते हैं। मेरा यब तो अभी भी दुर नहीं हुआ वह पंडित को चुना लगाकर चलता बना। बातचीत से ही वो एक दुसरे को भरमा गए।

एक ने पुछा, "शिव दयाल तुम्हें यब क्यों कहते हैं। वह कहने लगा, यह भी सुन लो, मैं तो सब की सहायता करके यब में फंस जाता हूँ। यदि किसी की सहयता ना करूँ तो वह मेरे लिए दुश्मन ने तो यब खड़ा कर देते हैं। दोस्त भी यब खड़ा रखते हैं। बन्दा किसके साथ व्यवहार करें। मैं समझता हूँ कि जिन्दगी एक यब है। उस के घर पहले दो लड़कियां थी तथा बारह साल बाद उसके घर लड़का दशहरे के दिन पैदा हुआ। उसने असका नाम रमन रखा। पर लोग कहते रमन नहीं रावण पैदा हुआ है। यह बड़ा होकर तेरे साथ दगा करेगा। तेरे लिए कलेशों का कारण बनेगा। परन्तु वह आगे से कहता, तुम्हे भुलेखा है, यह रावण की तरह विद्वान बनेगा तथा जहालत का नाश करेगा। उसकी घरवाली का नाम ककैई था। लोग कहते "शिव दयाल यह तेरे बेटे को सन्यास देगी तथा यब में पड़ेगी। वह आगे से कहता, वह मेरे पुत्र की सौतेली मां नहीं, सगी मां है, इस लिए यब में नहीं पड़ेगी। इस तरह वह लोगों के मज़ाक का जवाब भी मजाक में देता। वह कभी गुस्से में नही आता था।

एक बार अस्पताल में तीसरे दर्जे के पैरामैडीकल कर्मचारियों की लिस्ट बन रही थी। यह भर्ती कुछ महीने पहले हुई थी। उससे एक कर्मचारी की आयु 1940 की जगह 1944 लिखी गई। जब वह फिर से चैक कर रहा था तो संबधित कर्मचारी ने कहा, भाई मेरा जन्म बर्ष 1940 है, 1944 नहीं।

शिव दयाल आगे बोला, "मैं अब कटिंग करूंगा तो यब पड़ेगा। तेरे से चार साल नौकरी अधिक नहीं की जाती। चुपकर यही रहने दे। वह कर्मचारी चार साल अधिक नौकरी करके पद मुक्त हुआ। वह उसका शुक्र गुज़ार था। वह कई बार अपने आप को यब में डालकर दूसरों का भला कर जाता।

क्योंकि प्राय: वह अपनी डयुटी से गैर हाज़िर रहता था, इसलिए उसके विरोधियों ने चंड़ीगढ़ मुख्य दफ्तर में उसके विरूद्ध उसकी शिकायत कर दी कि उसकी डिगरियां व सर्टीफिकेट सब नकली हैं तथा वह कोई काम नहीं जानता उसके नकली मेडीकल टैस्टों के कारण मरीजों की जान खतरे में पड़ सकती है। इस लिए उसकी जांच की जाए। जब अधिक जोर पड़ा तो सर्टीफिकेटों की जांच के लिए एक जांच कमेटी उस के कामों व सर्टीफिकेटों की जांच के लिए अमृतसर पहुँची। उसके सैंपल चैक किए गए जो कि ठीक थे तथा उसकी योग्यता भी अच्छी परखी गई, वह अपने शिकायत कर्ताओं को मुँह की खानी पड़ी। बल्कि शिव दयाल की नौकरी और पक्की हो गई। अपने दोखियों के बारे उसने केवल इतना कह, जितने मर्जी यह यब डाल लें शिव दयाल निकालने जानता है, मेरा भगवान मुझे न कोई यब डाल दे, इन कुत्ते बिल्लियों का निवारण करना मैं जानता हूँ।

वह आजकल आस्ट्रेलिया परिवार सहित जाने की सोच रहा है। उसका कहना है, मेरे लिए कोई यब अलग नहीं अर्थात ऊपरी नहीं! मैं यबों में पैदा हुआ तथा सारी उमर इसे निकालता रहा। अब देखता हूँ कि आस्ट्रेलिया वाले क्या यब डालते हैं कौन से? मेरे बाहर जाने पर मेरे दुश्मन यही कहेंगे कि अच्छा हुआ झुठ यहां से चली गई। गन्दगी निकल गई सारे मुल्क की। पहले सारी उमर यहां यब पाये रहा अब गोरों को डालेगा। शिव दयाल ने विदेश जाने से पहले अपने साथियों को यह संदेश दिया, कौन है असत्य इस दुनिया में, कौन प्यारे सच्चा है? जो कोई अपना रंग जमा ले, वही सब से अच्छा है।

शिव दयाल पूरा जमाने साज था। वह बाकी गाँव वासियों की तरह सीधा सादा नहीं था। उसे दुनिया भर की चरित्र फरेब आते थे। वह किसी भी मुसीबत से बाहर निकलना जानता था। वह जीवन में कभी निराश नहीं हुआ था। वह चढ़ती कला में रहना जानता था। असत्य बोलने में वह रत्ती भर भी नहीं घबराता था।

○

पिदी (पिद्दी)

माँ–बाप ने चाहे उसका नाम पवन कुमार रखा था परन्तु गाँव वाले उसे पिद्दी पंड़ित कहते थे। उसका शरीर चाहे हृष्ट–पृष्ट था। परन्तु कद बहुत छोटा होने के कारण सारे उसे पिद्दी बादशाह या पिद्दी पंडित कह कर बुलाते थे। पढ़ाई उसके बस का खेल नहीं था फिर भी वह धक्का लगाकर कक्षा छः तक पहुँच गया। उसका ध्यान पढ़ाई से ज्यादा शरारतों में था। उसने नित नया कोई न कोई पंगा डाला होता था। जिस दिन वह कोई शरारत न करता, उसे खारश जैसी होती रहती थी। लड़ाई–भड़ाई, चोरी चकारी, शोर–शरारत व प्रत्येक किस्म की बदमिजाजी व बदनामी में प्रथम पंक्ति में उसका नाम आता था। जब स्कूल में कोई घटना घटती, उसमें पिद्दी पंडित का हाथ होता था। वह राह जाते को च्युंटी काट कर लड़ाई मोल ले लेता फिर भागने की करता। लोग गलतियां निकालते उसके पीछे भागते।

जब वह सातवीं में पड़ता था तो स्कूल में दो गाँवों के लड़कों की लड़ाई हो गई। पहले गालियां, फिर घूंसे फिर डांग सोटे पर बात पहुँची। जब उनकी बात किसी सतह पर न पहुँची तो एक लड़का भाग कर अपने बाप की बंदुक ले आया। उसने रौं में आकर (फुंक में) ऊपर–नीचे तीन फायर निकाल दिये। पिद्दी के गाँव वाले गोली की आवाज सुन कर भाग उठे। बन्दूक वाला लड़का उनके पीछे फायर करता रहा। पिद्दी भाग भी रहा था तथा गोली चलाने वाले को गालियां भी निकाल रहा था। जब फायर बन्द हुए तो पिद्दी ने अपनी प्रतीष्ठा बनाने के लिए पीछे की तरफ मुँह किया तथा बकरे बुला कर कूदने व छलांगे लगाने लगा। गोली चलाने वाले ने सोचा कि शायद वह मर गया है, इस लिए वह पीछे की तरफ भाग गए व लड़ाई बन्द हो गई।

पिद्दी पंडित की टांग तो बच्च गई पर शेष आयु उसे लंगड़ा होकर चलना

पड़ा। स्कूल में हाहाकार मच गया। दोनों तरफ से माँ-बाप इक्टठे हो गए। लड़कों-छोरों की लड़ाई समझ कर सुलह सफाई के लिए समझोता करना ही ठीक समझा गया। फायर करने वाले लड़के को दो हज़ार रुपए पिद्दी के ईलाज के लिए जुर्माना लगाया गया। जिन लड़कों ने लड़ाई शुरू की थी, उन्हें स्कूल से दफा किया गया। इस तरह पिद्दी की पढ़ाई का भोग पड़ गया तथा वह घर का होकर रह गया। उसका पिता राम शरण, गाँव में ही अपितु आसपास के गाँवों में भी प्रतीष्ठावान था। वह गाँव में थोड़ी बहुत हकीमी तथा दवा दारू करता था। लोग दूर-दूर से उससे धर्ण निकलवाने आते थे। उसका यह दावा था कि जो उससे एक बार धर्ण निकलवा गया व सारी आयु धर्ण से परेशान न होगा। उसको वीरवार चौंकी आती थी। इसलिए नारियां प्रायः उसके दरवाजे पर आती तथा माथा टेक कर चौंकियां भरती। उसने डोलकी व छैने वाले भी मँगवाये हुए थे। जो वीरवार यह कार्य निभाते थे। नारियां बच्चे लाकर उनका हाथ हलका करवाती तथा माल पशु वाले पेड़े लाकर पंडित को भेंट करते ताकि भैंसे गाऐं दूध से ना भागें। पंडित इस समय बड़ी स्फूर्ति से मन्त्र पड़ता व फूंक मारता। बाद में सारी संगत को प्रसाद बाँटा जाता तथा लोग हरे राम, राधे शाम करते हुए घर जाते।

इसी माहौल में पिद्दी पंडित पला बड़ा था। उसने अपने पिता के कई रूप देखे थे। पंडित राम शरन लोगों के रिश्ते भी करवाता था। विवाह शादियों में खाना बनाने का काम भी करता था। चाहे यह सारे कारज रोटी रोज़ी के लिए छिपी हुई चाल थी परन्तु गाँव के भोले-भाले लोग श्रद्धा में अन्धे होकर पंडित की कभी चुगली निंदा नहीं करते थे तथा ऐसा करना पाप समझते थे। परन्तु पिद्दी के पास बाप जैसी चुस्ती-फुर्ती का हुनर नहीं था। जब उसका बाप वृद्ध हो गया तो पिद्दी उसका कारोबार आगे न चला सका। वह जट-जिमीदारों के लड़कों में रहने के कारण मार-खरोश व लड़ाका था। उसकी टांग के लंगड़ेपन ने उसके बहुत सारे कारनामों पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया था। उसे चोरी करने, लूटखसूट करने व लड़ने-भिड़ने का बहुत शोक था, परन्तु इन सब कारजों में दौड़ने-भागने की जरूरत होती है। इसलिए उसे यह 'कारज' मज़बूरी में छोड़ने पड़े।

एक बार गाँव में शोर मच गया की रात के समय गाँव में एक जानवर

लकड़बग्गा फिरता है। उसने एक अनाज की निगरानी कर रहे आदमी को आधा खा लिया है। इसलिए इलाके में उसकी बड़ी दहशत थी। हर रात को लकड़बग्गे के आने का शोर मच जाता था। लोग उसे मारने के लिए डांगे, किरपाने, बर्शियां व गंडासियों लेकर इधर-उधर भागे फिरते थे। परन्तु वह जानवर कभी काबू नहीं आया था। पिद्दी को यह बात रास आई। वह रात को शोर मचा देता था। लक्कड़ बग्गा आ गया, लक्कड़ बग्गा उधर जाता है। लक्कड बग्गा इधर जाता है। लोग हथियार लेकर अन्धों की तरह पीछे दौड़ते। पीछे से पिद्दी पंडित जिम्मीदारों का घास काटकर चोरी ले जाता तथा अपनी गायों को डालता। वह माह भर लोगों के खेतों पर जाता रहा व चारों धास काटता रहा। एक दिन किसी ने कहा कि लकड़बग्गा नंबरदार नथ्थे के कमाद में छुपा है, पिद्दी पकड़ा गया। लोगों ने गुस्से में आकर उसकी खूब पिटाई की। कहानी खत्म हुई। बाद में यह भेद खुला कि बोहल वाले आदमी का कत्ल उसके भाईयों ने किया था तथा दोष लक्कड़बग्गे पर लगा दिया था।

कहते हैं कि चोर-चोरी से जाए पर हेराफेरी से ना जाऐ। पिता की मृत्यु के बाद उसको अपने परिवार को चलाने की चिन्ता लगी रहती थी। सारी उमर वह बाप की कमाई खाता रहा, आप उसने कभी तिनका भी नहीं मरोड़ा था। अब वह शादीशुदा था तथा बाल बच्चेदार था उसके तीन पुत्र थे। उसने गाँव में एक आटा चक्की लगाई थी। पहले पहल तो उसका आटा शुद्ध था पर धीरे-धीरे उसने उसमें चावलों की फक का मिश्रण (मिलावट) करनी कर दी थी। इस कारण अच्छे ग्राहक उसकी चक्की को छोड़ गए थे। सिर्फ गरीब व घर बाहर से धक्के हुए व दुखी हुए लोग उसकी चक्की में आते थे। इन लोगों कि वह अच्छी तरह से खाल उतारता था। यही लोग उससे उधार लेते थे जो मर्जी से पैसे देते थे। पिद्दी जो भी उनकी झोली में डालता, वह सत्य वचन कह कर ले जाते थे।

पिद्दी की घरवाली सुच्जी नेक खानदान की लड़की थी। लड़के भी उस जैसे थे। उनका पढ़ाई लिखवाई में ध्यान था। पंडताईन आप दस कलासें पास थी। उसने अपने लड़के अपने ननिहाल भेज दिए थे। सिर्फ बड़ा लड़का ही दादके रहा था। इस लिए छोटे लड़के घरके घातक महौल से बचें थे व बड़ा लड़का नारकीय महौल का पूरा शिकार हो गया था। वह नवीं कक्षा से ही हट

कर घर बैठ गया था। पिद्दी ने उसे आटा चक्की पर फिट करने की कोशिश की पर उसे खाने पीने का शौक था। उसने गाँव में खाने पीने की दुकान खोल ली थी। वह भी देखा-देखी बाप की तरह हेरा-फेरियां सीख गया था। दूध में स्पेरटा या सूखा दुध मिलाकर वह दूध से बनी वस्तुओं से चार गुणा कमाई करने लगा। उसके दूध का कई बाद नमुना भी भरा गया परन्तु वह हर बार ले-देकर मुकमुका कर लेता था। यह चुस्ती उसे विरासत में मिली थी। बाप बेटों का कारोबार दिन प्रति दिन फलफूल रहा था। चुस्ती चलाकी में पंडितों के लड़के जिमीदारों से जन्म से ही आगे होते हैं। पिद्दी कहा करता था, "हाथी चाहे जितना मर्जी कमज़ोर हो, भैंस से तकड़ा ही होता है" इस तरह पंडितों के डीले लड़के भी अन्य जिमींदार लड़कों से ताकतवर होते हैं।

जब कोई आदमी गलत काम करता है तो उसकी आत्मा उसे कोसती व दुतकारती है। अपनी आत्मा को अधमर्रा करने के लिए वह नशों का सहारा लेता है। पिद्दी पंडित के साथ भी ऐसा ही हुआ। बाप-बेटा हर शाम दारू की महफिलों में जा पहुँचे तत्पश्चात इक्टठे ही पीना शुरू कर देते। गाँव वाले पिद्दी को जट पंडित कहने लग गए थे। वह पहले पैदा ही जटों में हुआ था जिस कारण उसमें पंडितपन कम व जटपन अधिक था। पिद्दी गाँव की धड़ेबाजी में बड़चड़ कर हिस्सा लेता था। प्रत्येक लड़ाई झगड़े में उसका जिक्र खूब होता था। पिद्दी का बड़ा लड़का, जो पौधे पर पौधा लगा था, इन पंगेबाज़ियों में उनके साथ होता था। उनकी कई बार एक सौ सात इक्वजां जो चुकी थी।

नज़दीकी गाँव किले क्रा वह लड़का, जिसने स्कूल समय पिद्दी की टांग में गोली मारी थी, उसकी हमारे गांव में रिश्तेदारी थी तथा वह हमारे गांव की धड़ेबाज़ी में पांव रखने लग गया था। विपक्षी धड़े में बैठने के कारण पिद्दी को बड़ी चिढ़ चड़ती थी परन्तु पिद्दी उसे गांव आने से शक नहीं सकता था। एक बार पिद्दी के लड़के हीरे हलवाई की दुकान के सैंपल भरे गए। मिलावट के कारण हीरे के विरूद्ध केस दर्ज हो गया। इस केस में चाहे उसने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया परन्तु सजा व जुरमाना उसे दोनों हो गए। उसने सैशन कोर्ट में अपील की। पिद्दी के धड़े ने उसकी बहुत मदद की परन्तु फिर भी कोई फर्क न पड़ा। गांव में धड़े बाजी (गुट वाली) बड़ गई। पिदी की आँखों

में हरनामा, जिसने उसकी टांग पर गोली मारी थी, बहुत रड़कता था। कहते हैं हीरे के नमूने हरनामे की शिकायत के बाद ही भरे गए थे। जिससे सोई कलाएं जाग गई। पिद्दी के घर बैठे उसके मित्र नशे की लोर में कहते, "पंडित थोड़ी हिम्मत कर, हम हरनाम को जब भी चाहे उठा लेगें, उसे तेरे कदमों में लाकर हाज़िर कर देगें। तेरी मर्जी होगी तू क्षमा कर देना, चाहे सूली पर चढ़ा देना।"

इस तरह चिंगारियां आग की लपटें बन रही थी। लोहड़ी के दिन दोनों गावों के लड़के अड्डे पर खुले स्थान पर आमने-सामने हो गए। इस युद्ध में हरनामा हाज़िर था। पहले जब डंडा-सोटा चला तो नजदीक के आदमियों ने छुड़ा दिया परन्तु पिद्दी पंडित को ना जाने क्या दौरा पड़ा, उसने अपनी बगल से देसी रिवालवर निकाल कर हरनामे पर फायर कर दिया। हरनामा गिर पड़ा व शेष भाग गए। पिद्दी उसकी छाती पर चढ़ कर कहने लगा, "कंज़रा! तूने मेरी टांग तोड़ी थी, मैं तेरी दोनों तोडूंगा, भागले। जां भागना है।" उसने उसकी दोनों टागें नकारा कर दी ललकारता हुआ घर चला गया। वह ऐसा चौड़ा हो कर चल रहा था जैसे कोई जंग जीत कर आया हो। वह जब अपनी मण्डली से हो कर जब घर पहुँचा तो वहां पुलिस उसका इंतजार कर रही थी।

उस पर कत्ल का मुकदमा चला। हरनामे ने उसकी जमानत न होने दी। वह वर्ष भर अन्दर रहा। परन्तु पिद्दी ने दिल न छोड़ा। वह जेल में ही दारू सिक्के की महफिलें लगाता रहा। जेल का स्टाफ उसकी सिफतें करता नहीं थकता था। जमानत होने पर उसने सारे स्टाफ की पार्टी की। उसकी इतनी कद्र थी कि जमानत होने पर भी उसका बाहर आने को मन नहीं करता था। मौके के गवाह पलटवाने के लिए उसने सारी जायदाद फूंक दी थी। वह तीन वर्ष बाद अल्ली-अली करता घर आया। जिमींदारों का घर होने के कारण किसी ने खुशी न मनाई। अपने थोड़े-बहुत जोटीदारों के साथ वह घर में ही भंगड़े डालता रहा।

○

डाक्टर कल्याण

डा. कल्याण सिंह हमारे गाँव में शहर से आकर रहने लगा था। वह जब फौज से रिटायर्ड (पैंशन) हो कर आए तो उन्होंने किसी डा. के पास दो साल टरैनिंग ली, उसकी शागिर्दी की। इसके बाद उन्होंने हमारे गांव में तीन कमरों का अस्पताल खोला, जिसका नाम फ़ौजी अस्पताल रखा गया। उदघाटन के समय उन्होंने सभी पतवन्ते सज्जनों को बुलाया व उनकी खूब सेवा की। उनकी धर्मपत्नी ने भी एक लेडी डाक्टर के पास एक साल लगाया था तथा वह भी गांव में दाईपुना करने लग गई थी। संयोग से उनका काम अच्छा चल निकला।

उद्घाटन के समय डा. ने भरी सभा में ऐलान किया था कि वह गुरू का सिक्ख होनें के कारण गरीब नवाज़ है। इस लिए गरीबों का इलाज मुफ्त करेगा। केवल पर्ची फीस दो रूपए लगेगी। उसका ख्याल सुनकर लोग बड़े प्रभावित हुए थे। अभी उसके उद्घाटन को महीना भी नहीं हुआ था कि उसके अस्पताल के सामने से एक जनाजा निकला। डा. ने अपने एक शागिर्द को भेज कर पूछा किस कि मौत हुई है। जनाजे के पीछे जा रहे व्यक्ति ने बताया कि नंबरदार मंगल सिंह चल बसा है। वही मरीज दो दिन पहले डा. कल्याण से दवाई लेने आया था। शायद डा. की गलत दवाई से वह चलता बना था। डा. को अपनी गलती का एहसास हुआ। डा. ने शटर बन्द किया व अपने शागिर्दों को लेकर अर्थी के पीछे चल पड़ा लोगों के साथ। लोगों पर भी इसका प्रभाव पड़ा। कई साल इस अस्पताल का काम र्निविधन (बिना रोक टोक) चलता रहा।

डा. ने अपना कारोबार बढ़ाने के लिए नज़दीकी गाँवों में अपने शगिर्द बैठाए हुए थे। जो डा. के साथ-साथ नशीले कैपसुल बेचने का धन्धा करते

थे। शाम को वे फौजी अस्पताल में इक्टठे होकर अपने उस्ताद के साथ हिसाब-किताब करते अपना हिस्सा-पत्ती करके अगले दिन फिर ड्युटी पर हाज़िर हो जाते। एक दिन इलाके के डाक्टरों की शिकायत पर पुलिस ने अलग-अलग गाँवों से नशीले कैपसूलों व गोलियां बेचने वाले पकड़ लिए। डाक्टर कल्याण के शागिर्द भी दबोचे गए। डा. ने समय पर आकर पुलिस को संभाल लिया तथा पुलिस का महीना बांध दिया। फिर यह काम बदस्तुर कई साल चलता रहा।

डा. कल्याण हर मरीज का इलाज शर्तिया करता था। हर बार वह मरीज को दवाई देते वक्त कहता, "यदि मेरी दवाई से दो दिन में अराम ना आया तो लाहन्त है मेरी डाक्टरी पे। इससे तो मैं करियाने की दुकान खोल लुंगा।" वह गलबात व शोखियों से ज्यादा इलाज करता था दवाई से कम। एक बार मांघा सिंह नंबरदार को दवाई देते हुए उसने कहा, नंबरदारा मैं तेरा बुखार तीन दिन में उतार दूंगा जो डाक्टर एक महीने में नहीं उतार सके। यदि तेरा बुखार तीन दिन में ना उतरा तो तू मेरे घर आकर मेरे हाथ काट देना, जिनसे मैंने दवाई दी है। लोग खुशी-खुशी दवाई लेकर उसकी दुकान से उतरते वह बाकी डाक्टरों से पैसे भी कम लेता था।

दवाई देने का उसका तरीका भी निराला था। वह मरीज, मर्ज व दवाईयों की जानकारी बहुत कम रखता था वह तुक्केबाजी से शर्तिया इलाज के दावे करता था। अपने काम में वो अधिक जोखिम नहीं उठाना चाहता था। वह तुकबन्दी पांच छः बीमारियों की दवा इक्ट्ठी दे देता था। किसी न किसी दवाई ने तो असर करना ही होता था। साथ में ऐसा करने से बिल भी ज्यादा बन जाता था। वह दवाई के साथ पानी अधिकतम पीने को कहता। इसका कारण था कि अधिक पानी पीने से फालतु दवाई बाहर निकल जाएगी।

मरीज को ठीक करने के लिए वह सख्त से सख्त दवाई देता था। वह प्रायः संट्रीराईड देकर मरीजों को ठीक कर देता था। लोग समझते थे कि उसकी दवाई में जादू है। वे उसकी प्रशंसा करते न थकते। एक मजदूर को उसने दवाई देकर कहा, "यदि घर जाते ही तेरा पेट दर्द ठीक न हुआ तो पेशाब से मेरी दाड़ी बना देना।" किसी अन्य को छाती फुला कर बोला, यदि मेरी दवाई से परिवर्तन ना हुआ तो गांव छोड़ जाऊँगा, गरीब के लिए तो

अपनी जान भी हाज़िर है, हमने कोई बंगला नहीं बनाना, कोई महल नहीं उसारना, हमने तो दो रोटी ही खानी है। गरीबों की सेवा करने से तो पुण्य भी बहुत मिलता है।

टाईफाइड बुखार का वह शर्तिया इलाज करता था। उसने अपने अस्पताल के बाहर मोटे अक्षरों में लिखवा था कि यहां टाईफाईड का शर्तिया इलाज किया जाता है, आराम न आने पर पैसे वापिस किए जाएंगे। वह इस बुखार का इलाज करते समय, पहले रोगी को गलत दवाईयां देकर, टाईफाईड में बदलता, तो फिर उसका शर्तिया ईलाज करता। उसके पास टाईफाईड के वही कैपसुल थे जो हर डाक्टर के पास होते थे। इस लिए उसके सारे मरीज ठीक हो जाते। चाहे उसका इलाज लम्बा था पर था शर्तिया। चाहे उसके सारे मरीज ठीक नहीं हुए थे न ही उसने गाँव छोड़ा था। कभी करीयाने की दुकान नहीं खोली तथा न ही अपने हाथ कटवाये थे।

एक बार उसने एक वृद्ध को कब्ज की दवाई दी। मरीज़ से पूछा तुझे क्या बीमारी है? मरीज ने ग्रामीण भाषा में कहा 'मुझे कब्ज की शिकायत है। डाक्टर ने मरीज को प्रभावित करने के लिए कागज़ पर लिखा, "Complaint of Possession" डाक्टर ने पूछा तुझे और क्या तकलीफ है, "Absence of Busha" इस तरह वह अंगरेजी लिखकर भोले भाले लोगों का चकाचौंध कर देता। एक मरीज़ को उसने कब्ज़ की दवा दी। दवा बहुत सख्त थी। मरीज को जरूरत से ज्यादा टट्टियां आई तो वह चल बसा। जब उसके वारिसों ने सख्त शिकायत की, तो वह कहने लगा, उसकी तो आई थी वो चल बसा, ना बस तेरे न बस मेरे, होनी का भाई कोई इलाज नहीं। अच्छा हुआ वो चल बसा नहीं तो और टट्टियां आनी थी, उसे कब्ज नहीं सहना पड़ा।

वह जब कभी टीका लगता तो मरीज़ को खुश करने के लिए वह उसे कम तकलीफ देना चाहता था क्योंकि गांव के लोग टीके से बहुत जर्कते थे। वह मरीज की पैंट या सलवार नीचे किए बिना ही टीका लगा देता था। एक बार गांव का डाकिया परसा उसके पास टीका लगवाने आया। आदत के अनुसार उसने डाकिये से पूछा, "परसीया दर्द हुआ?" परसे ने कहा, डाक्टर साहिब बिल्कुल नहीं। डाक्टर ने शेखी में आकर कहा, यही तो फर्क है मेरा

दूसरे डाक्टरों से? वह तो टीका लगाते समय रोगियों की जान निकाल लेते हैं। टीका लगवाने के पश्चात परसे ने पैसे देने के लिए जेब मे से पर्स निकाला। उसने देखा कि उसके सारे नोट गीले हो गए थे। बीच में से दवाई की बदबू आ रही थी। उसने गुस्से से डाक्टर को कहा, डाक्टर साहिब पीड़ किस बात की होनी है, टीका तो पर्स में लगा दिया। डाक्टर शर्मीदा हुआ व टीका फिर लगवाना पड़ा।

डाक्टर की आय काफी थी। कुत्ते को घी कम ही पचता है। वह दारू जरूरत से ज्यादा पीने लग गया। पहले तो वह किसी समय पर ही शराब पीता था पर अब तो वह हर वक्त पीये रखता था। अब उसके पास मरीज़ भी शराबी आने लगे थे। वह शोखी में आकर अपने शराबी मित्रों को इलाज मुक्त करने लग गया था। अब मरीज़ ठीक होने पर उसे पहिले तोड़ की बोतल लाकर देते। वह बोतल को चूम कर कहता, "यह करामाती दवाई है, सैंकड़ों दुखों की दवाई है। बस इसे प्रयोग करना का तरीका आना चाहिए। उस भडुए को खुद यह तरीका अभी नहीं आया था।

उसने अपना काम कम होता देख एक कमरे में डोली छैने रखवा दिए थे। जब किसी मरीज का मर्ज उसे समझ न आता तो उसे जवाब देने का स्थान पर वह कहता, "बीबी बहन इसे कोई बाहरी कसर है। इसे किसी दोखी का किया कराया हे। इसका इलाज अब बाबा बडभाग सिंह जी करेंगे। उस मरीज को वह डोलकी वाले कमरे में भेज देता। वहां जाकर मरीज आप ही सिर हिलाने शुरू कर देता। इस प्रकार तीन दिन उसकी गोली खिलाने के बाद, उसको शगनों के साथ विदा करता। इस प्रकार की विधि से उसके कंई मरीज नौ-वर-नौ हो जाते। उनसे वह मुँह माँगी मुरादें पाता था।

कुदरत का नियम है जिसकी चढ़ाई होती है, वह उतरता भी लाजमी है। गांव में अब शिक्षित डाक्टर आ गए थे। नज़दीक गुरू राम दास अस्पताल खुल गया था। सिविल सर्जन ने उसके अनेक शर्गीदों को अचनचेत छापे मारकर पकड़ा था, उनके विरूद्ध केस दर्ज कर दिए थे। उनकी मुश्किल से जमानत हुई थी अब वे नशीली दवाईयों बेचने के कारण अदालत में पेशियां भुगत रहे थे।

आज कल डा. कल्याण का काम बहुत नर्म पड़ गया है। उसके नशीले

केपसुल खाकर कई अल्ला को प्यारे हो गए। परन्तु फिर भी डा. यह गोलियां बेचने से बाज नहीं आता। उसकी गोलियों से विधवा हुई औरतों ने इक्टठे होकर अस्पताल के सामने अर्थी फुक मुजहारा किया, धरना दिया तथा बाद में जबरदस्त सियापा किया। इससे डा. का मनोबल डोल गया व अब उसने किसी नज़दीकी गांव में अपना बोरी बिस्तरा व डंडा गठरी ले जाने का दुख दाई फैसला लिया, ताकि हमारे गांव की तरह दुखी दुनिया के दुख मुक्त कर सके। इस कार्य को पूर्ण करने के लिए तो उसने जन्म लिया था। लोगों के दुख दर्द उससे सहन नहीं होते थे।

गांवों में ऐसे प्राणी दूर वसेरा करें तो अच्छा है। दूसरे गांवों में भी इन्होंने गन्दगी की मिश्रित करनी है। जब वह अपना बोरी बिस्तर लेकर अगले गांव कुच कर रहा था तो बहुत सी विधवा औरतों ने लाख-लाख परमात्मा का धन्यवाद किया। बारह वर्षो की बाद तो रूड़ी की भी सुनी जाती है।

○

आलसी विचौला

उसका घर का नाम मिलाप सिंह था। पेशे से चाहे वो ठेकेदार था परन्तु उसका मुख्य कार्य लोगों का मिलाप करवाना था। उसने अपने जीवन काल में तीन सौ से ज्यादा रिश्ते करवाए तथा उनको परवान करवाया। जिस किसी की शादी नहीं होती थी वह मिलाप सिंह के दरबार में हाज़री भरता था तथा दिनों में ही उसके लगन खुल जाते थे तथा उसके घर शहनाईयां बजती व बाजे बजते। इस लिए उसे जगत विचोला कहते थे।

किसी को जोड़ना या शादी के बन्धन में बांधना पुण्य वाली बात थी। जोड़ना बहुत कठिन होता है जबकि तोड़ना बिल्कुल आसान। हमारे समाज में भाज़ीमारों की भ्रमार है। हर गांव, मुहल्ला, गली व नगर में भाज़ीमार भटकते फिरते हैं। पर बिचौले उनके खूनी पंजों से बचते बचाते आखिर अपनी मंजिल पर पंहुचने में कामयाब हो ही जाते हैं। जबकि विचोलों के केस इन भाजीमारों लोमड़ियों के चढ़ कर फेल भी हो जाते हैं।

मिलाप़ सिंह खुद एक तकड़ा भाज़ीमार विचोला था, इसलिए उसे किसी रिश्ते को तोड़कर जोड़ना भी आता था। उसे कई बार भाज़ीमार व विचौले की दोहरी भूमिका निभानी पड़ती थी। यह कार्य आम आदमी के लिए कठिन था परन्तु मिलाप सिंह इसे बड़ी सहजता से कर जाता था। एक बार एक लड़के का बाप बोतल लेकर आया, वह अपने रिश्ते के लिए पुरज़ोर सिफारिश करने लगा। मिलाप सिंह एक रिश्ताशुदा लड़की के घर गया तथा उसने लड़के के बारे में बताया व कहने लगा, "भाई प्यारा सिंह, सुना है कि तुने लड़की को सैदपुर माँग चुके हो, पर मुझे तेरी लड़की देखकर तरस आता है। इससे अच्छा है कि तु लड़की का गला दबा दे। मैं तेरे पास एक रिश्ते के लिए आया हूँ। लड़के के पूरे दस किले हैं। उन्होंने पाँच एकड़ में मटर की बिज़ाई की है

जाकर देख आना, आजकल फुल लगे हुए हैं। इन फुलों को दस-दस के नोट समझो। क्षणभर का दुख सारी उमर का सुख। भुखों के घर का कोई भरोसा नहीं। उनकी आजकल दुकान चलती है, कल नाम है काल का। परन्तु फसलें तो साल में तीन बार होती हैं। मौका है यदि समांल लो।" लड़की का पिता आखिर सहमत हो गया व उसने पहला रिश्ता तोड़कर लड़की जिम्मीदार के लड़के के साथ सगाई कर दी। लड़की का बाप आजकल बहुत खुश है।

मिलाप सिंह बड़ी रंगीन मिजाज का मालिक था। वह सारे गाँव में पगड़ी बहुत शानदार बाँधता था, वह भी बिना पुनी के। उसने कह रखा था पूरे गाँव में उसके साथ कोई पगड़ी बांधकर देखले। बहुत सारे पगड़ी बाँधने वाले नौजवान उससे पगड़ी बाँधना सीखने आते थे। चाहे नई पौच के कई लड़के (मुण्डे-खुण्डे) उसके नज़दीक पहुँच गए थे पर आखिरी बल देना बहुत कठिन समझा जाता था। उस को सही बाँधने का तरीका वह किसी को नहीं बताता था। वह लड़कों (मुण्डों-खुण्डों) में हरमन प्यारा था तथा लड़कियां भी उसकी शक्ल व पगड़ी पर मरती थी। मिलाप सिंह अभी कुवाँरा था उसका पड़ौसियों की लड़की के साथ पैचा पड़ गया। जब इस संबंध में चर्चा शुरू हुई तो उसनें बड़ी चालाकी से उस लड़की का रिश्ता अपने मामे की लड़के के साथ करवा दिया। यह उसकी पहली विचौला गिरी थी जब वह खुद कुवाँरा था।

घरवालों ने किसी लालच में आकर उसकी शादी किसी अन्य ठेकेदार की लड़की के साथ कर दी। घर तो खुशहाल था परन्तु लड़की बिल्कुल सुन्दर नहीं थी। शायद इसी कारण मिलाप सिंह का ध्यान घर से बाहर ही रहता था। पहले पहल तो वह उन लड़कियों की बिचौलगी करता जिनके साथ उसके अपने संबंध थे, उसने पहले चार पाँच रिश्ते अपने संबधियों व यार-दोस्तों के करवाए जो बड़े कामयाब हुए। जब लड़कियों को पता चला कि उसके नज़दीक आने से उनका भला हो सकता है तो खुद ही उसके साथ नजदीकियां बढ़ाती तथा अपनी मंजिल प्राप्त कर लेती मिलाप के रस्ते से लड़कियां मनचला लड़का पाने में सफल हो जाती। दोनों खुश हो जाते। विचोला भी तथा विवाह वाली लड़कियां भी। मिलाप यह काम बड़ी होशयारी से किया करता था।

परन्तु सेर को सवासेर टक्कर (टकरा) ही जाता है। एक बार किसी दोखवी ने उसके करवाए रिश्ते में यह कह कर भाज़ीमार दी की लड़की के साथ विचोले के पुराने संबंध हैं। लड़के वालों ने जांच की व यह बात सामने आई की भाज़ीमार असत्य नहीं बोलता। परिणाम स्वरूप यह रिश्ता टूट गया। मिलाप सिंह के कारोबार शोहरत को बड़ी चोट पहुँची। परन्तु पुराना खिलाड़ी होने के कारण उसने नज़दीकी रिश्ते करवाने बन्द कर दिए। अब वह दूर के रिश्ते करवाने लग गया। एक शहर का दूसरे शहर में, एक प्रांत का दूसरे प्रांत में। यह काम भी उस का चल पड़ा। आयु के साथ उसके शौक भी गए। अब उसने पैसे लेकर रिश्ते करवाने आरम्भ कर दिए। एक बार मैं विवाह में शामिल होने के लिए जा रहा था। मिलाप सिंह मुझे रास्ते में मिला। पूछने पर पता चला की वह भी उसी विवाह में शामिल होने जा रहा है। यह भी पता चला कि विचौला भी वही है। मिलाप सिंह आज कुछ गंभीर था। जब इसका कारण पूछा तो पता चता कि उसे फिक्र था कि यह विवाह परवान चढ़ेगा भी या नहीं। उसने दस पास लड़के का रिश्ता एम.ए. पास लड़की के साथ सत्य-असत्य बोलकर करवा तो दिया परन्तु आगे अब परमात्मा रक्षक। जब हम शादी वाले घर पहुँचे (जंज घर) तो वहाँ विवाह की खुशियां पूरे यौवन पर थी। लड़की वाले मेरे ही रिश्तेदार थे। मुझे बाद में पता चला कि शादी टूटने के किनारे है। दोनों का अदालत में तलाक का केस चल रहा है। मिलाप सिंह की शायद यह दूसरी हार थी। इसलिए उसके धन्धे को ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। क्योंकि लोगों के पास इतना समय नहीं होता। कि वेचारों तरफ से पूछते फिरें। बात आई-गई हो गई, मिलाप सिंह अपने नए शिकार ढूंढने लगा।

मिलाप सिंह की भी अपनी परिवारक जिंदगी खुश नहीं थी। जबकि उसने सैंकड़ों परिवार उजड़े हुए मिलाये थे, सुनसान घरों में रौनके लेकर आया था। वह अपनी घरवाली की परवाह बिल्कुल नहीं करता था। उसका ध्यान हमेशा बाहर ही रहता था। चाहे कुदरत ने उसे दो पुत्र दिए थे परन्तु उनकी शकल अधिकतम मां पर ही थी। उसकी घरवाली धीरो प्राय: उदास रहती थी। धीरे-धीरे उसकी उदासी बीमारी में बदल गई। उसे टी.वी. हो गई। उसके देहान्त को अभी छ: माह भी नहीं हुए थे कि मिलाप सिंह ने अपनी एक पुरानी सहेली जो विधवा हो चुकी थी। उसके साथ शादी रचाली। मिलाप सिंह

की पहली प्राथमिकता थी की अपने दोनों लड़कों की शादी करना। परन्तु न तो लड़के सुन्दर थे न ही मिलाप के पास उनकी शादी के लिए पैसा था। अपनी अधिकतम दौलत उसने अपनी ऐशपरस्ती में लुटा दी थी। वह अपने जानने वालों से मिलता, उनको कहता, "मैं आपके लड़कों की विचोलगी कर सकता हूँ परन्तु अपने बच्चों की नहीं।" उसकी बात सुनकर लोग रिश्ता करवाने की हां कर देते परन्तु बाद में भूल जाते।

मिलाप अब भीतर से क्षीण होता जा रहा था। उसकी खाने-पीने की आदतों ने उसे उजाड़ दिया था। विचोलगी का मुफ्त का माल लेकर वो मुफतखोर बन चुका था। उसके लड़के अधिक आयु के हो रहे थे। उस ने अपने वाकिफदारों से विनती भी कि परन्तु भीतर से कोई भी उसका हमदर्द नहीं था। अब वह दुनिया में अकेला था। मिलाप इस हालत के साथ सहमत नहीं था। अब ना तो उसकी ठेकेदारी चलती थी तथा न ही विचोलगी का धंधा। वह अपने आप को खोटा पैसा समझने लगा। उसकी दूसरी घरवाली भी उसे छोड़ गई। उसका बड़ा लड़का एक सहपाठन लड़की के साथ निकल गया। मैं सुनकर उसके घर गया तो वह कहने लगा, "हम बाप बेटा शेष हैं। यह ठेकेदारी करने लग गया है तथा मैं घर का काम कर देता हूँ। हम बाप बेटा हर रात इक्टठे पीते हैं, खाते हैं, आनन्द करते हैं व वाहीगुरू के लाख-लाख धन्यवादी हैं अब हमें क्या बांस चाहिए।" उसके स्थान पर और कोई होता तो वह पक्का पागल हो जाता। जब मैं वापस हुआ तो वह रफी का एक गीत गुनगुना रहा था,

मैं जिंदगी का साथ निभाता चला गया
हर फिक्र को....
बरबादियों का शोक मनाना फजूल था
बरबादियों के जश्न मनाता चला गया।

○

टेड़ा सिंह

तेज़ा सिंह के दूसरे भाई भी थोड़ा बहुत अड़ीयल व जिद्दी थे परन्तु बाकियों से उसका दर्जा ऊँचा था। अड़ीयलपन में उसने कई रिकार्ड पैदा किए थे। इस लिए उसे अड़ी -अयले-आजम कहा जाता था। इस लिए रिश्तेदार उसे तेजा सिंह की स्थान पर उसे टेडा सिंह कहते थे। जब वह गुस्से में आकर यह कहता, "मैं माँ का पुत्र नहीं यदि मैं ...।" तो समझ लो पंगा पड़ गया।

वह स्कूल में जब किसी सहपाठी से लड़ पड़ता, कितना-कितना समय उस के साथ बोलचाल ही बन्द कर देता था। उसमें बहस बाज़ी की बहुत बुरी आदत थी। कई बार सत्य की खातिर तो बहस हो ही जाती है परन्तु वह तो असत्य पर भी सिर फंसा देता था। लोग लाचार हो होकर पीछे हट जाते थे वह सोचता था कि मैं जीत गया हूँ। वह घण्टों तक बोलने कि समर्था रखता था, इस लिए उसके बोलों का सामना करना कठिन था। साथ ही भरीडों की में हाथ डालना, कोई विरला ही हौंसला रखता है।

उसकी जहाँ सगाई हुई थी, वो दो बहनें थीं, उससे उम्र में बड़ी थी। जब शादी का दिन नियुक्त हुआ तो लड़की वाले दोनों लड़कियों का विवाह एक हि दिन करना चाहते थे ताकि खर्चा कम हो। लड़कियों वाले ऐसा सोच ही लेते हैं। परन्तु तेजा सिंह ने रूकावट डाली कि क्योंकि उसकी घरवाली की आयु बड़ी है इस लिए उसकी शादी एक दिन पहले होनी चाहिए। घरवाले मान नहीं रहे थे। तेजा सिंह के घर वालों ने सहमति प्रकट कर दी परन्तु तेजा सिंह ने कई दिन एक दिन पहले की रूकावट बनाये रखी। आखिर तेजा सिंह की मानी गई व उसकी शादी एक दिन पहले हुई।

एक दिन दोनों सांढू अपने साले की शादी में गप्पे मार रहे थे। उसके सांढू ने उसके द्वारा शादी में डाला गया अडंगा गलत व नजायज कहा गया।

तेजा सिंह भड़क गया। दोनों बहसने लगे गर्मा-गर्मी बढ़ गई व नौबत गाली गलौच पर आ गई। तेजा सिंह विवाह बीच में ही छोड़ कर घर वापस आ गया क्यों कि उसके सालों ने तेजा सिंह की बड़पप्न समझ कर अपने छोटे साले की तरफदारी की। उसने सांढू के साथ तोड़ विछोड़ा कर के सारी उम्र लाल झडी ही रखी। आकड़ के मर जाना दलिया नहीं खाना।

वह जिस के साथ भी व्यवहार करता दिल से तन-मन से ही क़रता। जिस के साथ वह किसी बात पर बिगड़ जाता, इसी तरह तन-मन से बिगड़ जाता था तथा उसके सामने ही कसम खा कर तोड़-विछोड़े का ऐलान कर देता व शेष समय उसी ऐलान पर पहरा देता था। उसकी अपनी घरवाली के साथ किसी बात पर बिगड़ गई। तेजा सिंह की सिंहनी अपनी बहन के साथ मिलना चाहती थी परन्तु तेजा सिंह उसके दर्शन कर के भी राजी ना था। उसने अपनी घ़रवाली को बहन के पास जाने से रोका परन्तु वह जाने को बाजिद्द थी। वह बहन की तरफ चली गई। जब सिंह को पता चला तो वह बहुत नाराज हुए। वह अपने दहेज का समान ट्राली में डालकर ससुराल छोड़ आया क्योंकि घरवाली बच्चों को साथ लेकर गई थी। इस तरह उसने उसे दो साल घर न प्रवेश करने दिया। आप कठिनाई सहन करके माँ की पकाई खाता रहा परन्तु बाप का पुत्र घरवाली को लेने नहीं गया। वह कहता था, "वो आप ही गई है, आप ही वापस आए, मैं क्यों लेने जाऊँ," आखिर घरवाली को युक्ति सूझी वह बच्चों को साथ लेकर घर वापिस आ गई। तेजा सिंह ने अपना सारा दहेज का सामान अपना नौकर भेजकर वापस मंगवा लिया। घर फिर से बसने लगा।

अब उसका अपना लड़का भी विवाह योग्य हो गया था। उसके लड़के को एक तरफ उसका साला रिश्ता लेकर आ रहा था तथा दूसरी तरफ उसका छोटा भाई। वह भाई वाले रिश्ते को पहल देता था। परन्तु उसकी घरवाली व लड़का अपने मामे के रिश्ते को अच्छा समझते थे। मुश्किल बढ़ती देखकर तेजा सिंह के भाई ने ही तेजा सिंह के साले का रिश्ता परवाण करने को कहा। तेजा सिंह कर करा कर मान गया। जब विवाह नजदीक आया तो तेजा सिंह को पता चला कि लड़की उसके सांढू की बहन की लड़की है। वह फिर नाराज हो क़र बैठ गया। तेजा सिंह ने शर्त रख दी की उसका सांढू

शादी में नहीं आएगा। बात टुटती देख सांडू की बहन ने अपने भाई को ना बुलाया। विवाह हो गया। उस के सांडू को तेजा सिंह के स्वभाव का पता था, इसलिए वह इसे अपनी बहन की मजबूरी समझ कर नाराज न हुआ।

उसके घर भी उसका सख्त पहरा था। उसकी मर्जी के बिना वह मक्खी भी नही भिन्न भिन्नाने देता। वह आप ना तो अधिक हंसता था तथा ना ही अपने घर किसी को ऊँची आवाज में हँसने देता था। वह घरवाली व लड़का-लड़की के साथ हरदम नोक झोंक करता रहता तथा हर बात में अपनी नसीहत देनी जरूरी समझता। उसके घर वाले उसकी नसीहतों से तंग आ गए थे। वे कोशिश करते करते थे कि उसको देखकर दाएं-बाएं हो जाएं परन्तु अगला जब बहस से बचना चाहता तो वह गुस्सा कर जाता। वह अपनी तरफ सौ प्रतिशत ध्यान की उम्मीद रखता था। जब कोई उसकी बात सुनते वक्त इधर-उधर देखता तो यह गलती उसे बुरी लगती थी। उस के घरवाले उसके आगे ऐसे खड़े रहते जैसे उसे बड़े ध्यान से सुन रहे हों परन्तु वे खाली हाज़री भर रहे होते थे। उनका ध्यान उनकी नसीहतों पर नहीं होता था। वह इस तरह का दिखावा करके समय काटते थे। दड़ वट जमाना कट, भले दिन आएंगे। पर कहते हैं बारह वर्षो के बाद रूड़ी की भी सुनी जाती है, वैसे ही जब तेजा सिंह का स्वर्ग वास हुआ तो घरवाले घड़ियाल के आंसू रो रहे थे।

तेजा सिंह की लड़की जवान हो गई थी। वह एम.एस.सी. कर रही थी। उसकी आँख किसी सहपाठी से लड़ गई। लड़का किसी और बिरादरी का था। जब तेजा सिंह को पता चला तो वह तिलमिलाया। उसने शादी पर काटा फेर दिया। उसकी लड़की को अपने बाप के अड़ियल स्वभाव का पता था, इस लिए उसने अदालती शादी करके काम खत्म कर दिया, जब तेजा सिंह को इस दुर्घटना का पता चला तो उसने कह दिया, यह लड़की सारी आयु मेरे घर की दहलीज़ पार नहीं करेगी चाहे तेजा सिंह की घरवाली व लड़के ने लड़के की सुन्दरता तथा उसका स्वाभाव बता कर तेजा सिंह को मनाने की कोशिश की पर वह तो कुत्ते की हड्डी था। उसने अपने घरवाली को झिड़क कर बैठा दिया।

एक बार उसकी घरवाली सख्त बीमार हो गई। उसे उसी वक्त अस्पताल दाखल करवाना पड़ गया। तेजा सिंह ने अच्छे-से-अच्छे डाक्टर की सलाह लेकर उसे जल्दी ठीक करने की कोशिश की। अपनी मां की बीमारी का सुनकर

तेजा सिंह की बेटियां व जवाई (दामाद) अस्पताल आए। उसी समय तेजा सिंह घर से रोटी लेने आ टपका। उसने आते ही तल्खी में आना शुरू कर दिया। उसने गुस्से में आकर अपनी बेटी व दामाद को मोटी-मोटी गालियां निकालनी शुरू कर दीं। वह कुछ समय तो चुप रहे परन्तु उसका चढ़ता पारा देख कर उन्होने वहाँ से जाना उचित समझा। वह रोते-रोते बाहर निकल गए।

इसी तरह एक दिन उसका दूसरा सांढू भी साली का हाल चाल पूछने आया। दोनों जीवों को देखकर उसका लोहा लाखा हो गया। उसकी घरवाली उसको चुप करवाने की कोशिश कर रही थी पर वह अपने आप से बाहर होकर बोला, "कुत्तियों खाक खाने आ गए हो यहाँ। आगे नहीं पीछे नही, अब तुम्हे हमारी याद कैसे आ गई? क्यों हमारे जख्मों पर नमक छिड़कने आ गए हो बेहतर यही है वि यहां से चले जाओ, हम तो पहले ही बड़े दुखी हैं, हमें और दुखी न करो, यह आतंकवादी भाषण सुन कर वे दोनों जीव क्षण भर में बाहर निकल गए। तेजा सिंह की घरवाली रोती हुई मजबूर होकर बैठ गई। उसका दिल गुस्से व गम से फटा जा रहा था। वह अपने पति के वहशीयाने से पशत रही थी। इसी तरह बेचारी घरवाले की फिटकों व झिड़कों को खाती, भीतर ही भीतर क्षीण-क्षीण होकर आकाल पुरूष के चरणों में जा बिराजी।

तेजा सिंह जब पूरा हुआ तो बड़ी दुनिया उसके साथ नाराज थी तथा बड़ी दुनिया उसकी तरफवार भी थी। संस्कार के समय लोग बड़े हुम हुमा के पहुँचे थे तथा अफसोस करने आए थे। उसकी लड़की व दामाद हाज़र थे। वे तेजा सिंह से इतना डरे हुए थे कि उन को डर था कि तेजा सिंह उनको देखकर कहीं जनाजे वाले फटे से उठकर उन्हें गालियां न निकालनी शुरू कर दे या उनकी गर्दन ना पकड़ ले। वह इस लिए पीछे खड़े रहे तथा उन्होंने तेजा सिंह के अन्तिम दर्शन दूर से ही करके समय निकाल लिया। उसकी बेटी मां के गले लग कर रोए जा रही थी। तेजा सिंह के चेहरे पर अभी भी तल्खी झलक रही थी। मानों जैसे वह धर्मराज क़े साथ वह लड़ाई झगड़ा कर रहा हो धर्मराज भी दो मन में लगता था कि ऐसे नेकबख्त को वापिस भेजा जाए या यहीं रखा जाए क्यों कि तेजा सिंह धर्मराज के दरबार का माहौल खराब करने की योगता भी रखता था।

○

कमाल का बन्दा

माँ-बाप ने उसका नाम पाल सिंह रखा था परन्तु वह शुरू से ही सफेद पोशाक पहनने का बेहद शाकिन था। वह कुर्ता पज़ामा पहनता जो हमेशा साफ सुथरा होता था। वह अपनी पोशाक को हर रोज़ धोता था। जब लोग उससे पूछते कि तेरे कपड़े हमेशा क्यों साफ सुथरे होते हैं वह कहता कि उसके पास टीनोपाल है। इस लिए उसकी वर्दी हमेशा साफ होती है। लोग भी उसे टीनोपाल कहने लग गए। पाल कोई राही कहता था। बाद में उसे अन्दर-बाहर सभी टीनोपाल कहने लग गए।

रोजगार की खातिर वह विश्व की दूसरी लड़ाई के वक्त अंगरेजी फौज में भर्ती हो गया। वह दस कलासें पास था, इस लिए उसको फौज में खजानची की नौकरी पर नियुक्त किया गया। फौज में भी उसने सफेद पौशक पहनने की अपील की परन्तु फौज के कानून सख्त होने के कारण, उसको सफेद पोशाक के स्थान पर, फौज़ियों वाली वर्दी पहननी पड़ी। वह फौज की नौकरी से प्रसन्न नहीं था। वह मिसर में तैनात था। एक बार उसका मन बईमान हो गया। वह समुची यूनिट की पगार, जो कि वह बांटता था, लेकर फौज से भगोड़ा हो गया।

वह भागकर अपने देश वापस आ गया। आते ही उसने सौ बोरी कनक खरीदी तथा घर में लंगर लगाना शुरू कर दिया। वह हर अमावस को लंगर लगाता था। उसके गांव के लोग बहुत खुश थे। कुछ दिनों के पश्चात उसने घोषणा की कि उसमें बाबा कर्म सिंह हजुर साहिब वाले की जोत है। उन्होंने ही उसे फौज की नौकरी छोड़ कर लंगर लगाने भेजा है। उसका धीरे-धीरे गुरुद्वारा बन गया, लोग उसके घर बड़ी श्रद्धा से आते तथा कई उसकी शक्ति का गुणगान गाते ना थकते। नारियां तो उसके आगे माथा टेकते न

थकती। वह पाल सिंह से बाबा टीनोपाल बन गया। उसकी शोभा दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। भ्रादों की सात तरीक को उसके डेरे मेला लगने लगा। मेले की हाज़री दिन प्रति दिन बढ़ने लगी।

एक दिन फौज के खुफिया विभाग के आदमी हमारे गांव आए व उन्होंने पाल सिंह के बारे खोज करके पूछताछ शुरू कर दी। जब खुफिया विभाग के कर्मचारी उसके घर पहुँचे तो वह समाधी लगाकर बैठ गया। गाँव के सरपंच को लेकर उन्होंने पाल सिंह से कुछ सवाल किए। पाल सिंह हर सवाल का जवाब चुपी (मौन होकर) दे रहा था। लोगों ने फौज़ियों को कहा कि अब वह बाबा बन चुका है तथा संसार के कामों में उसे कोई दिलचस्पी नहीं। सरपंच ने उसकी गवाही भरते हुए कहा, "यह तो भक्त आदमी है। सारा गाँव तो इसकी सांसों से जीता है। वेतन लेकर भागने वाला कोई अन्य दुष्ट होगा। फौजियों ने फिर से उसे बड़े ध्यान से देखा। उनको कोई स्पष्टता न हुई व यह सोचकर वापस चले गये कि पवित्र आत्मा पर उन्होंने गाहे-वगाहे (यूँ ही) शक किया।

दूसरा विश्व युद्ध बन्द हो गया तथा देश की बागडोर भारतीयों के हाथ आ गई। सारी वारदात रफा-दफा हो गई। बाबा टीनोपाल की चढ़त बड़ने लगी। अब लोग उससे दीक्षा लेने लगे। उसका वचन कोई ना मोड़ता व सारे उसके हुक्म की पालना करने लगे तथा अपने आप को भाग्यशाली समझने लगे। लोग उससे प्रश्न पूछने भी आने लगे। वह उनके हर प्रश्न का उत्तर बड़ा प्रमाणीत देता कोई भी उसकी बात को काटता नहीं था। उसकी आज्ञा की अवहेलना करने वाला पापी समझा जाता था।

एक दिन पूछता-पूछता उसका एक समकालीन फौजी जो कि उसकी युनिट में नौकरी करता था, उसके डेरे पहुँचा। बड़ी रौनके लगी हुई थी। जब वह भीतर गया तो उसने पाल सिंह को एक आसन पर बैठे देखा। जब पाल सिंह ने अपने पुराने मित्र आसा सिंह को देखा जोकि आजकल रोड़वेज में लगा हुआ था। पाल सिंह एकदम खड़ा हो गया। उसको नज़दीकी कमरे में ले गया। उसको गले मिलकर कहने लगा, "आसा सिंह दाते की कृपा से मेरा काम बहुत अच्छा चल रहा है। तू यहाँ किसी से कम ज्यादा बात मत करना। जब तेरा दिल करे आ जाना, तेरी स्पेशल सेवा हुआ करेगी।" बन्द

कमरे में दोनों दोस्त बातचीत करते रहे।

बाबा टीनोपाल लोगों की नजरों में एक महान् विद्वान व लेखक था। बाबे ने एक ग्रंथ लिखना शुरू कर दिया। वह बीस किलो ग्रंथ लिख चुका था। उसका लक्ष्य था कि यह ग्रंथ कम से कम मन भर होना चाहिए। उसके ग्रंथ की एक वनगी इस प्रकार है;

अपने आप बनाई दा, अपने आप मटाई दा।
अपने आप हसाई दा, अपने आप खाई दा।
अपने आप खवाई दा, अपने आप पचाई दा।

ऐसी वानी टीनोपाल ने 20 किलो लिखी थी तथा 20 किलो और लिखनी शेष थी। बाबा अपने कमरे में खड़ा हो जाता व इस समय के दौरान उसे कोई भी मिल नहीं सकता था। उस समय उसकी सुरति सीधी परमात्मा से जुड़ी होती थी। उसकी सुरति को कोई भी श्रद्धालु भंग नहीं कर सकता था।

एक दिन आसा सिंह अपने परिवार को साथ लेकर पाल सिंह को मिलने डेरे पर आया। पाल सिंह बाबे ने बहुत सी संगत अपने गिर्द बिठा रखी थी। आसा सिंह भी अपने परिवार को लेकर संगत में बैठ गया। जब बाबा टीनोपाल की आँख उस पर पड़ी तो उसने स्वागती लहजे से नज़र मिलाई। कुछ देर मस्त रहने के पश्चात् बाबा एक दम भड़क उठा, "आज दुनिया फनाह हो जाएगी, फनाह हो जाएगी," लोग असहाय होकर पूछने लगे, "बाबा जी, दुनिया आखिर कैसे बचेगी, जैसे भी हो, इसे बचाओ। आप जानने वाले हैं! बाबे ने स्कीम लगाकर कहा, एक ही उपाय है अब, उसने अपने भांजे का एक हाथ आसा राम की सुंदर लड़की के साथ मिलाकर कहा। यदि इन दोनों की शादी आज शाम तक हो जाए। लड़का किसी काम का नहीं था, बिल्कुल निखट्टु परन्तु लड़की हाथ लगाने से भी मैली होती थी। पढ़ी लिखी ग्रेजुऐट। आसा सिंह को यह रिश्ता किसी भी सूरत में कबुल ना था। इसलिए वह डेरे से बाहर बुड़बुड़ाता निकल गया। बाबे ने लगते हाथ ही एक अन्य नज़दीक बैठी लड़की का हाथ जबरदस्ती पकड़कर अपने भांजे के हाथ पकड़ाया। उन लड़की वालों ने यह रिश्ता मुबारक जान कर, चाव-चाव यह रिश्ता मान लिया तथा दोनों की शादी, बाबे की पूरी कृपा से उसी शाम संपूर्ण

हुई तथा आखिर दुनियां फनाह होने से बच गई। आसा सिंह ने फिर कभी डेरे का मुँह न देखा।

बाबे टीनोपाल ने डेरे में एक दीवार पर बड़े अक्षरों में लिख रखा था कि जो भाई-भाई, इस डेरे के नलके का जल छकेगा, उसकी बेल बड़ेगी अर्थात उसके घर औलाद होगी। इस कारज की पूर्ति के लिए अनेकों बे-औलाद विशेषत: रात उस डेरे ठहरते तथा दिन को उस नल का अमृत लेकर वापिस चले जाते। आम तौर पर उनकी मुरादें पूरी हो ही जाती थी। जिन की मन्नत पूरी हो जातीं, वे नकल करते हुए, बैंड बाजों के साथ बाबे को धन्यवाद करने आते। वस्तुत: ऐसा इस लिए होता था कि बाबे ने डेरे में पाँच-सात हट्टे-कट्टे सेवादार पाले हुए थे। यह सेवादार औलाद की खातिर ठहरी औरतों का हाल-चाल पूछते रहते थे तथा उनको नर औलाद की विशेष विधि समझाते। बहुत सारी नारियों की गोद में जल्दी ही औलाद पड़ जाता था। तो ही वे बैंड बाजों के साथ, बच्चे को गोद में लेकर बाबे का कोटि-कोटि धन्यवाद करने आते। बाबे की मुफ्त में जै-जै कार हो जाती क्योंकि उनकी इच्छा डेरे से पूरी होती थी। लड़ती फौज नाम सरकार का।

इस तरह बाबे टीनोपाल का धंधा दिन प्रतिदिन प्रसार कर रहा है तथा ईलाके के प्रतिष्ठों की उसे भरपूर हिमायत (सर्मथन) है। उसके तो भुजे हुए मोठ भी तमाम उगते हैं। कोई विरला ही उसके चालों को किन्तु परन्तु करता है। सतयुग का पूरा पहरा है उसके डेरे पर। मंहगाई व मुसीबत्तों के मारे लोग अन्धे-बोले हो जाती हैं। उनकी ठीक-गलत मार्ग की पहचान नहीं होती या रहती। वे जीवन की दलदल से निकलने के लिए संतों महंतो का सहारा खोजते हैं। इसी कारण बाबे टीनोपाल जैसों का हलवा पूरी चल रहा है।

○

शमी पहलवान

उसका दादा बड़े लम्बे चौड़े जुस्से वाला था। उसने गुस्से में आकर अपने खड़पे जैसे छितर उतारा तथा लम्बी बाजु दूर से घुमा कर लाया तथा ठा करके सीधा मेरे सिर पर दे मारा। मैं डरता जोर-जोर से दहाड़े मारने लगा ताकि वह मुझे जल्दी-जल्दी छोड़ दे। इस कारवाई के दौरान उसे मेरी फुफियों को भेजे पैसे याद आ रहे थे तथा मुझे पांधे कि गलत विआनी "पास के!"

उसका घर का नाम शमी था, परन्तु उसका शरीर पहलवानों की तरह सुडौल व हृष्ट-पुष्ट होने के कारण, गाँव वाले उसे शमी पहलवान कहते थें। वह शुरू से ही बड़ों के कहने पर नहीं चलता था। जब भी उसे घर कोई काम बाताया जाता था वह बहाना बनाकर टाल देता था। बहाना बनाने की कला उसे खूब आती थी। पढ़ने से वो जी चुराता था। प्रातः जब स्कूल जाने का समय आता था तो वह पेट दर्द का बहाना बना कर चारपाई पर लेट जाता था। घरवाले उसे नमक जवैन या अन्य देसी नुस्खे से उसका इलाज करते परन्तु उसे आराम तभी आता जब स्कूल का समय निकल गया होता। शाम को जब कुएं से माल-पशु घर लाने उसे भेजा जाता तो वह अपने नौकरों को पैसे रूपए का लालच देकर आप नाजोवाली के डेरे के नजदीक फुटबाल खेलने चला जाता। जब पशु हवेली के नज़दीक आते तो लगभग उसी समय वह खेल कर पशु के साथ ही मिल जाता। इसी तरह यह सिलसिला कई महीने चलता रहा। एक दिन वह अपने कामे (नौकर) को खुश करने के लिए गुड़ की दो डेलियां (पेसीयां) पजामे के नेफ में फंसा कर चोरी-चोरी नौकर चरणे को देने के लिए आंगन से निकला तो ठोकर खाकर गिर पड़ा व गुड़ की पेसीयां फर्श पर इधर-उधर गिर पड़ी। इस

दिन उसका कई महीने पुराना पोल खुल गया। उसको बहुत डांट पड़ी वे आगे से आदमी बनने के लिए कहा गया।

गांव में उसने अपने साथियों को एक-एक करके पहले हराया था तथा किसी-किसी को पीटा भी था। उसके मित्र उससे दूर से भय खाते थे। डर के मारे तो उसे शमी भाजी कहते थे। वह और चौड़ा होकर चलने लगता। पढ़ाई में नालायक होने के कारण वह दसवीं पास करने से पहले दो बार फेल हो चुका था। उसकी शरारतों व हैंकड़ी से सारे लड़के व अध्यापक नाराज थे। उसकी पिटाई अक्सर होती ही रहती थी पर वह इसको कसरत मात्र मान कर, अपना हठ ना छोड़ता। लिखने पढ़ने का काम वह कम ही करता था। उसकी जब कोई अध्यापक पिटाई करता तो उसी दिन वह किसी कमज़ोर बच्चे को पिटकर अपनी भड़ास निकाल लेता। लड़कों की नाजायज या मामूली बात पर पिटाई के कारण अगले दिन मास्टर उसे फिर से काबू कर लेते। परन्तु वह दिन-प्रति-दिन की पिटाई का इतना अभ्यस्त हो गया था कि अध्यापकों की मार का बदला अपने सहपाठी की पिटाई करके अवश्य ले लेता था। धीरे-धीरे लड़के डर के कारण उसकी शिकायतें करना बन्द कर गए।

जब वह तृतीया कोशिश में दसवीं पास करने में सफल हो गया तो सारे स्कूल में खुशी की लहर दौड़ गई। अध्यापक खुश थे व सारे स्कूल में खुशी की लहर दौड़ गई। अध्यापक खुश थे, क्योंकि वे उसकी प्रतिदिन की हरकतों से तंग आ चुके थे तथा उसकी पिटाई कर-कर के उदासीन हो चुके थे। उन्होंने परीक्षा में उसकी सहायता कि ताकि वह उनके (सिर) गले से उत्तरे। लड़के इस लिए खुश थे कि रोज़-रोज़ कौन मार खाए इस कमबख्त से? इस कारण स्कूल में उस दिन छुट्टी की गई। चाहे उस साल दसवीं का स्कूल का नतीजा अच्छा नहीं था, परन्तु शमी के पास होने की खुशी सारे स्कूल में खूब मनाई गई, उसके घर वालों ने भी खुशी मनाई। उसका दादा हकीम होता था, इस लिए शमी के दादे ने उसको भी, बारहवीं के पश्चात् डाक्टर बनने के लिए शहर के लक्ष्मी नारायण मैडीकल कालेज में आर्युवेद कोर्स करवाने के लिए भर्ती करवा दिया। शमी पहलवान ने रोते बिलखते कालेज जाना शुरू कर दिया। वह पढ़ाई कम व आवारागर्दी अधिक

करता था। बहाने वगैरा लगाकर वह घर से किताबें कापियों के पैसे ले जाता व इसको अपने दोस्तों के साथ फिजूल खर्च देता। पहले साल की परीक्षा उसने किसी न किसी तरीके दे दीं। वह नतीजे का इन्तजार करने गांव चला गया। उसने सुख का सांस लिया।

एक दोपहर वह जब वह गांव में पीपल के नीचे अपनी मण्डली के साथ ताश खेल रहा था तो गांव का डाकिया शमी को देखकर खड़ा हो गया। शमी पहलवान का कालेज से एक खत आया था। उसके ऊपर लिखा थ, "सभी विषयों में अनुतीर्ण। उसने डाकिये से पूछा, पांधे अनुतीर्ण का क्या मतलब होता है? डाकिए ने एक दम कहा, "पास के!"

लो जी, शमी जी की खुशी की कोई सीमा न रही। उसने बीस रूपए निकाल कर डाकिये को लडडुओं के लिए दिए तथा पत्र (खत) लेकर वह घर की तरफ दौड़ा। उसने पास होने की खुशी अपने पिता को सुनाई। पिता ने आगे उसके दादा को सुनाई। दादा ने शमी के बाप को कहा, औए भजन लाल! जा सौ-सौ रुपए के मनी आर्डर लड़कियों को (शमी की फुफीयों को) करवा कर बधाई दे दी। शरीकों के घर सेवकों के हाथों लड्डू बाँटे गए तथा दादे ने अपने यार दोस्तों को घर में निकाली दारू पिलाई। सारे पीने वाले उसके दादा से उसके डाक्टर बनने की खुशी बाँटने लगे। शमी भी बड़े चाव में फिरने लगा। वह सत्य ही पहलवानों की तरह चौड़ा होकर चलने लगा।

महीने बाद, उसके दादा की जमीन से संबंधित कचहरी में कोई तारीख थी। साथ ही शमी की अगले वर्ष की फीस भी जमा करवानी थी। तीनों बाप-बेटे शहर की तरफ रवाना हो गए। दादे ने सोचा कि कचहरी जाने से पहले शमी की फीस जमा करवाई जाए। कालेज कचहरी से पहले आता था। जीप उस दिन शमी चला रहा था। उसने कालेज के गेट के आगे जीप खड़ी की तथा उसका दादा व बाप, पैसे जमा करवाने क्लर्क की खिड़की की तरफ चल पड़े। शमी कुमार का नाम लेकर कालेज के कलर्क से फीस की कुल रकम पूछी गई। क्लर्क ने बड़े ध्यान से देखकर कहा, "जनाब यह विद्यार्थी तो सम्पूर्ण विषयों में फेल है, फीस किस बात की देनी है," दादे ने फिर से लिस्ट देखने की हिदायत दी, दूसरी बार भी क्लर्क ने वही जवाब दिया। उसका दादा जो बहुत लम्बे कद का था तथा पुराना फौजी था, उसने तैश

में आकर शमी के बाप को कहा, अरे भजने तेरा लड़का तो फेल हो गया है, तूने सारी उम्र पागल ही रहना है, इस उल्लू के पट्ठे ने तो सारी उम्र पूरे परिवार को पागल बनाये रखा।" यह कह कर वह जीप की तरफ गया, जहां शमी उनका इंतजार कर रहा था। उसने अपना छित्तर (जुता) उतारा तथा अपनी लम्बी बाजु दूर से घुमा कर ठप करती शमी के सिर पर मारा व जोश में आकर कितनी देर ठप-ठप (मारता) रहा। शमी डरका मारा, "दादे से पिंड छुड़ाने के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगा। दादा को लड़कियों को किए मनी आर्डर याद आ रहे थे तथा पांधे की शम्मी पर गलत भविष्यवाणी, "पास के।"

इस घटना के बाद शम्मी को घरवालों ने पढ़ाई से हटा के हल-खेती में डाल दिया। शम्मी ने शुक्र किया कि उस का पढ़ाई से छुटकारा हुआ। वह खेती में जुट गया। उसे डर था कि उसके रिश्तेदार उसके घर वालों को प्रेरणा देकर फिर से मेडीकल कालेज में दाखल ना करवा दें। इसलिए वह सारा दिन बम्बी (टयुबवैल पर) ही रहता। परन्तु उसकी खुशी भी चिरस्थाई न रही। एक बार उसके नौकर ने उसके पिता से शिकायत की कि शम्मी ने उसकी लड़की के साथ शरारत करने की धिनौनी हरकत की है। उसके पिता को आग लग गई। शम्मी की खोज की तो पता चला कि वह शहर भाग गया है। शाम को जब शम्मी वापस आया तो उसे घेर लिया। उसने उसकी केहरू की लड़की छेड़ने की बात दोहराई। "मैने कब छेड़ा, किस समय? मैं तो सूरज निकले से पहले गोबी लेकर मण्ड़ी गया था। मुझे इस बात का कोई ज्ञान नहीं। केहरू झूठ बोलता है। उसको बुला कर मेरे मुख, पर करवाओ तो।" उसके बाप को थोड़ा बहुत यकीन हो गया कि उसके लड़के को झूठ फंसाया जा रहा है। उसने अगले दिन केहरू को उलटा झाड़ा तो कहा, "खबरदार! यदि भविष्य में मेरे लड़के का नाम लिया तो।" केहरू बेचारा होकर घर वापस लौट गया।

तत्पश्चात् भजन लाल ने लड़के की शादी करने की। एक दोस्त की मासूम सी लड़की के साथ उसका विवाह कर दिया। परन्तु उसकी शादी रिश्तेदारों में चर्चा का विषय बन गया। कई कह रहे थे, लड़का तो पूरा पहलवान है किन्तु लड़की सुखी हरड़ लड़की का परिवार बहुत ही अमीर था, इसलिए भजन लाल लालच में आ गया था। लड़की पहले महीने तो ससुराल रही परंतु बाद में उसने मायके जा कर डेरे लगा लिए। लड़की के पिता ने

लोकलाज का हवाला देकर उसे वापस ससुराल जाने की परन्तु हर कोशिश बेकार गई। माँ ने बहुत ही जिद्द की पर वह नाराज़ होकर बोली, माँ जी, मुझे समझने की कोशिश करो! सब को अपना प्राण प्यारे होता है। मैंने ससुराल जाकर अपनी जान जोखिम में नहीं डालनी, यह कहकर वह झरझर रोने लग गई। इकलोती लड़की होने के कारण पिता ने तरस खाकर लड़की को मज़बूर ना किया। धीरे-धीरे यह रिश्ता टूटता टूटता टूट ही गया। दोनों को फिर से फेरे लेने पड़े।

मैं पढ़ाई के कारण दस बारह वर्ष गांव से बाहर रहा था कभी कभार ही गाँव का चक्कर लगता था। एक बार मैं शादी के सिलसिले में गांव गया तो शम्मी पहलवान मुझे गाँव के अड्डे पर टक्करा। वह अपने लड़के को अंग्रेजी स्कूल में पढ़ा रहा था। मैंने अन्दाजा लगाया कि यह लड़का उसका बेटा ही होगा। मैंने बुलाने की खातिर पूछा, सुना भई पहलवान, कैसे फिर आजकल? देख बिल्ले भईया! तुझे तो मालुम ही है कि मैं डाक्टर नहीं बन सका। मेरे माँ-बाप की बड़ी इच्छा थी कि उनका पुत्र डाक्टर बने, परन्तु खत्रियां के पुत्रों ने तो दुकाने ही करनी होती हैं। कोई साला इस और नहीं आया। परमात्मा ने तो मैं इस लड़के को (लड़के की तरफ इशारा करते हुए) डाक्टर जरूर बनाऊँगा, चाहे सारी ज़मीन क्यों ना बिक जाए। इतने को स्कूल बस आ खड़ी हुई तथा लड़का छलांग लगा कर बस पर चढ़ गया तथा शम्मी पहलवान पहले लड़के को तो फिर मुझे टाटा करता घर लौट गया। मैंने भी अपना राह पकड़ी।

शम्मी पहलवान को मिलकर मेरे कई तरह के ख्याल मेरे मन में घूम रहे थे। शम्मी दोस्तों को दोस्त था। धाकड़ आदमी था। वह अपनी बात हु-ब-हु यार दोस्तों को ब्यान कर देता। वह चालाक नहीं था। उसकी बेवाक तथा दरूस्त वियानी के कारण लोग उसकी कद्र दिल से करते थे। उसकी हड्डबीती व जगबीती में कम अन्तर था। ऐसे आदमी आजकल ढूंढे नहीं मिलते।

○

लाभा लेकिन

लाभा बड़ा होकर लाभ सिंह लेकिन हो गया। वह शरीर का पतला था परन्तु दुबला नहीं था। वह मध्यम शरीर का था पर शरीर छिटका होने के कारण, लम्बा लगता था। उसका रंग साफ था, आँखें कूंचे जैसी व नाक तोते की तरह था। वह हरी या सावी पगड़ी बाँधता था तथा रंगदार ऐनक लगा कर जब बाहर निकलता तो ऐसे लगता जैसे तोते ने ऐनक लगाई हो। उसे जानने वाले कई लोग उसे तोता कहते थे। जब उसने इस उपनाम से चिढ़कर हरी पगड़ी बाँधनी बन्द की तो लोग उसे तोता कहना बन्द हो गए।

लाभ सिंह दस कक्षा तक पढ़ा था। फिर भी उसका उर्दू में ज्ञान प्रंचड था। उसने कोरस के ईलाबा उर्दू का काफी साहित्य पढ़ा था। उसे उर्दू बोलने का बड़ा अभ्यास था। वह विद्वानों की तरह बड़े प्रभावशाली तरीके से जब उर्दू बोलता तो सुनने वाले खींचे जाते। उसी लिखाई ऐसी थी जैसे मोती परोये जाते हैं। एक एक अक्षर बड़ी आसानी से पढ़ा जाता था। गावं के लोग कई जरूरी पत्र उससे विशेष रूप से लिखवाते थे। उसने मिर्जा गालिब, आलमा इकबाल, तथा फैज अहमद फैज की शायरी रटी हुई थी। इस लिए वह बात-बात में शेयर जड़ देता था तो उसकी वाणी मनोहर हो जाती। वह बार-बार लेकिन शब्द का बहुत इस्तेमाल करता था, इसी कारण उसे जानने वाले उसे लेकिन साहब या लाभा लेकिन कहने लग गए थे। जब उसे कोई विचार ना सूझता तो वह ठहराव के लिए लेकिन कहे जाता जैसे रिकारड (रिकार्ड) की सुई अटक गई हो। लोग हंसने लगते। लेकिन के अलावा वह चूंकि, चुनाचे, अल्वत्ता, ब़हरिहाल आदि शब्दों का आम प्रयोग करता था परन्तु वहे लेकिन साहिब के उपनाम से मशहूर (प्रसिद्ध) हो गया था।

यह नाम उसका तब पक्का हुआ जब गांव की लड़ाई से संबंधित एक

थानेदार पूछताछ के लिए आया। इस केस में वह मौके का ग़वाह था। जब उसकी गवाही की बारी आई तो उसने गवाही कम दी परन्तु 'लेकिन' ज्यादा कहा। उसने चूंकि चुनाये लगाकर जब गवाही खत्म की तो मेल गोल-मोल होने लगे, थानेदार को उसकी कोई बात समझ न आई। उसने खींझ कर कहा, गवाह कोई कम पढ़ा लाओ, इसकी लेकिन-लेकिन अदालत में प्रमाणित नहीं होगी। मुझे तो पता ही नहीं चल रहा कि यह विरोध में गवाही दे रहा है या पक्ष में दोषी की। जब थानेदार ने उसे स्पष्ट पंजाबी में गवाही देने को कहा तो फिर वह लेकिन-लेकिन करने लगा तो उसकी गवाही काट कर किसी और गवाही ली गई।

लेकिन का एक अन्य शौक था वह नहाने का अवकाश कर सकता था परन्तु सुरमा पाने का नहीं उसके पास कई तरह के सुरमे तथा सुरमेंदानिया थी। मिलने वालों को वह अलग-अलग सुरमों की खूबियां बताता तथा साथ ही सिलाईयां आँखों में डाल लेता। सुरमई आँखों के कारण उसकी दिखावट और भी दिलकश हो जाती थी। जब वह बन संवर कर, आँखों में सुरमा डालकर बाहर निकलता तो बड़ी चढ़ती कला में होता। उसकी तेजता नहीं सही जाती थी। धीरे-धीरे जब उसका सुरमा शाम को मध्यम हो जाता था तो उसकी डील-डौल भी मध्यम हो जाती थी। क्योंकि आजकल सुरमा डालने का रिवाज नहीं रहा। किसी जान पहचान वाले ने रोज़ सुरमा पाने का कारण लेकिन से पूछा तो वह कहने लगा, "वास्तव में मेरी आँखें सुरमे के बिना खराब हो जाती है। किन्तु यदि छुट्टी करूँ तो आँखों में रड़क पड़ने लग जाती है इसके विपरीत आँखें तरोताजा रहती हैं। लेकिन।" अभी उसने कई कुछ बताना था, सुनने वाले ही पहले ही तसल्ली हो गई। उसने अभी लेकिन के सुरमचु के साथ कई बार सुरमा डालना था।

लेकिन साहिब युवाओं की अपेक्षा वृद्धों में अधिक प्रसिद्ध थे। उनके मर्द मित्र मण्डल कम ही था क्योंकि उनका अधिकतम समय नारियों में ही गुजरा था। धीरे-धीरे संगत के कारण, उनके हावभाव भी नारियों जैसे हो गए थे तथा मर्दों जैसा तीखापन समाप्त हो चुका था। वह गोरियां ही नहीं अपितु हर तरह की स्त्रियों के शौकीन थे। उसकी ऊंगलीयों पर विभिन्न प्रकार की अंगुठियों, गले में चैन व सुरमई आँखों को देखकर यह प्रभाव और भी पक्का हो जाता था। कई लोगों का विचार था कि स्त्री तो वह बबुल के पेड़ से भी उतार लेता था परन्तु मर्द नीचे खड़ा भी उसे नज़र नहीं आता था। विवाह

शादियों या अन्य समारोहों में वह मर्दो की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक नज़र आता था। वह ऐसे अवसरों पर स्त्रियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए वह वस्त्र भी रंगदार तथा भड़कीले पहनता था। उसके घर स्त्रियों का आना-जाना अधिक था। एक दिन उसकी माँ ने कहा, "अरे लब्भे तेरा कोई मित्र मर्द भी है कि सभी औरतें ही हैं? इतनी औरतें तो मुझे मिलने नहीं आती जितनी तुझे मिलने भागी आती हैं! तू मर्द है तो मर्दो से मिला-गिला करो। तेरे घरवाली सुन्दर सुशील है, तू उसे मिलकर नहीं रजता? ना बुलाया कर इन चुड़ेलों को घर में।" पर लेकिन को यह चुड़ेलें नहीं परियां लगती हैं। सम्पूर्ण अप्सराऐं। एक दूसरी से बढ़कर।

मर्दों की दुनियां में वह बिल्कुल फेल था। जब कभी वह मर्दों में विचरता तो लिद्द कर देता। वह आदमियों में बैठकर अवाज़ार होता था। मर्दों से बातचीत करने से भी वह घबराता था। यदि वह बात करता तो यूँ ही आँखें झपकता रहता था। उसके होंठ शर्माते फड़कते नज़र आते साँस व जीव्हा धड़कती। पर स्त्रियों से बातचीत करते समय उस पर एक नया जोश व जवानी लौट आती। वह बार-बार कर उनके साथ मीठी-मीठी बातें करके मक्कई के दाने की तरह खिल जाता था। स्त्रियां जब बार-बार उसके श्री मुख से लेकिन तथा अलबता सुनतीं तो बहुत प्रभावित होती।

गांव में पंचायती चुनाव आए। लोगों ने हल्ला बोल कर उसे सरपंच खड़ा कर दिया। वह बिल्कुल नहीं चाहता था। परन्तु यह उसके धड़े की सियासी चाल थी। उनका विचार था कि लाभ सिंह को मर्द होने के नाते मर्द तो मत डालेंगे ही अपितु गांव की तमाम स्त्रियां भी उसे वोट डालना पंसद करेंगी। उनकी मेहनत सफल हुई। कुछ लोगों ने मज़ाक हेतु लाभे को मत डाल दिया वह सोचते थे कि लाभा उनके घर वोट माँगने आएगा तो वह उसके मुख से लेकिन तथा चूंकि चिनारे ही सुनेंगे। यह तकिया कलाम उसकी पहचान बन चुका था। स्त्रियों न धड़ा-धड़ लाभे को वोट डालें। उन्होंने पार्टी की तरफ ना देखा। वे सोचती थी कि लाभ भी उन जैसा ही है। इसके फलस्वरूप, लाभ सिंह बहुसंख्या में सरपंच बन गया। सरपंच का पुलिस, ब्लाक, तहसील या कचहरी से प्रायः वास्ता पड़ता है। परन्तु लाभ सिंह का ऐसे स्थानों पर जाने से एकदम आत्मिक रूप से जाने से कतराता था। लोग उसे अपने काम करवाने के लिए शामिल बाजे की तरह खींच तान कर ले जाते थे। इस दुनिया में वह बहुत कम विचरा

था। वह जिस दिन भी थाने या कचहरी जाता सिरदर्द लेकर ही आता। उसको इन अदारों में विचरने का कोई अनुभव नहीं था। वह ना तो किसी को रिश्वत देता तथा ना लेता था। ऐसा आदमी तहसीलों व कचहरियों में खोटा सिक्का होता है। साथ लेकर जाने वालों का जब काम नहीं होता तो वह उसके साथ गर्म ठण्डे हो जाते। लोग उसे ले जाने से कतराने लगे। अब वे सोचते इसके स्थान पटवे किसी स्त्री को सरपंच बना लेते तो वह इससे कहीं ज्यादा सफल होती। लेकिन साहब को दुनियादारी नहीं आती थी। गांव-वाले तथा वह अपने अपने स्थान पर बहुत ज्यादा परेशान थे।

एक बार दो पड़ोसी आपस में झगड़ पड़ें। लड़-लड़ कर दोनों ने अपने सिर फुटवा लिए। लोगों ने उनकों समझा-बुझा कर पचायंत में पंहुचाया। लेकिन साहब के पास जब यह केस आया तो उसने दोनों औरतों को अपने समक्ष बिठाकर कहा, देखो देवियों, स्त्रियों को लड़ना तो पहले ही शोभा नहीं देता किन्तु यदि तुम्हारी किसी कारण बहसवाजी हो ही गई तो आप को हाथपाई नहीं होना चाहिए था। लेकिन यदि आप किसी की बहकाने के तहत लड़-भिड़ भी गई तो भी आप को एक दूसरे के सिर नहीं फाड़ने चाहिए थे। ऐसा तो मर्द करते हैं। लेकिन यदि आप को अब थाने जाना पड़ा, कचहरी जाना पड़ा तो आपकी बहुत अवमानना होगी। वहाँ थानेदार तो बात-बात पर गालियां निकालते हैं। लेकिन यदि आप कचहरी गई तो वहाँ वकील भी कौन से सीधे हैं? लेकिन अब तुम मेरे पास पहुँच गई हो, तुम्हें अब समझौता कर लेना चाहिए, बिलफर्ज, तुम समझौता नहीं करोगे तो इससे बड़ी मूर्खता कोई नहीं होगी। लेकिन....। वह बोले जा रहा था। दोनो स्त्रियां उठकर वहाँ से चल पड़ी तथा बातचीत वहीं टूट गई।

इसी स्त्री अंदाज में वह सारी उम्र विचरता रहा गांव वालों के साथ। चाहे उसे कोई पसंद करे या ना, यह उसका अपना अंदाज था। चाहे वह लेकिन या अलबत्ता की भुल-भुलैया में ही सारी आयु घूमता रहा पर दिल से वह बहुत साफ व ईमानदार आदमी था उसके कभी किसी के साथ हठ या धोखा नहीं किया था। लोग चाहे उसकी बातों का मज़ाक उड़ाते थे पर उसकी नेक नीयती की कद्र भी करते थे। उसकी वसीयत अनुसार, उसकी मृतक देह को नहला-धुलाकर, आँखों में सुरमा डाला गया ताकि वह अगली दुनियां निरोग आँखों से देख सके।

○

शमशेर छड़ा

मास्टर शमशेर सिंह कद का छोटा, रंग का सांवला, मोटे-मोटे नयन नक्श व चपटे नाक वाला था। वह जब भी ऊँची आवाज़ में बोलता उसके नाक से सीटी बजती, जोकि उसकी बारीक व सुरीली आवाज़ के साथ मिलकर उसी वाणी को संगीतमय बना देती थी। उसको देखने वाले यह अन्दाजा नहीं लगा सकते थे कि वह कौन सी नस्ल का है? आर्यन, द्राविड़ या मंगोल? या इन सब का मिश्रण। कुदरत ने उसे इस तरीके से सृजा था कि वह भारत के किसी कौने में भी जाये, लोग यही पूछते सुने जाते थे कि, "आप कौन से देशा की निवासी हैं?"

उसकी माँ कुदेसन (प्रदेसन) थी। उसके घर गरीबी थी। पिता शहर में एक कारखाने में छोटा-मोटा करता था। चाहे वह जट था परन्तु भूमिहीन। इसी कारण शमशेर की शादी होना मुश्किल था। वह पढ़ाई में तेज़ था, इस लिए उसने दसवीं पास करके, ज्ञानी, ओ.टी. करने के बाद पंजाबी का मास्टर लग गया। उसको नौकरी तो आधा ख्याल त्याग देते थे तथा आधा तब त्याग जाता रिश्ते की बातचीत बड़ी उत्सुकता के साथ चलती पर जल्दी ही साबुन की झाग की तरह बैठ जाती। कर कराकर गधी बरगद के नीचे आ जाती अर्थात बैठती।

इस तरह कई परीक्षाओं से गुजरते हुए वह पैंतीस साल का हो गया। लड़के उसे छड़ा मास्टर कहने लग गए थे। एक दिन वह बाकी मास्टरों की तरह, आधी, छुट्टी के समय स्टाफ रूम में बैठा सुस्ता रहा था। एक मास्टर ने माहौल गर्म करने के लिए पूछा, "शमशेर सिंह क्या अभी तक तुम्हारा विवाह के चक्र में पड़ने का इरादा नहीं?" उसने गोल मोल जवाब देकर टालने की कोशिश की परन्तु दूसरा मास्टर चालाक होने के कारण बात को ठण्ड़ा नहीं था होने देना चाहता। वह बोला, "भाई जरा खुल कर बता हम तुम्हारे दोस्त हैं दुश्मन तो

नहीं।" "वास्तव में कुछ लड़कियों वाले मेरे पास देरी से आए व कुछ के पास मैं देरी से गया। इस तरह बात आई गई है। यदि मैं कहूँ कि मुझे कोई देखने नहीं आया तो मेरी अपमान की बात है। यदि मैं कहूँ कि मुझे कोई लड़की पसंद नहीं आई तो लोग कहेंगे की तू बड़ा युसुफ है। बहुत फिरते हैं तेरे जैसे काकरोच! यदि मैं कहूँ की मैं किसी को देखने नहीं गया तो लोग कहेंगे, "बड़ी मान है तुझ में, अब भाईयो आप ही बताओ की मैं क्या करूँ?

एक मास्टर ने कहा, "कोई देखने दिखाने की घटना सुना।" उसने बात जारी रखते हुए कहा, "एक बार एक अच्छा-भला जट अपनी लड़की लेकर हमारे रिश्तेदार के घर आया। आप घर वाले भी वहाँ पहुँचे। वह रिश्तेदार जो मेरी उम्र का ही था, बीच पड़ कर रिश्ता करवा रहा था। हम सब ने चाय पानी पिया तथा रिश्ते बारे एक दूसरे से पूछताछ होने लगी। रिश्तेदारियां निकलने लगी। लड़की से पूछा गया कि तुम्हें लड़का पंसद है, उसने सिर हिला कर हाँ में उत्तर दिया। मुझे पूछा गया तू बता। अन्धा क्या माँगे दो आँखें। मैंने उससे ज्यादा सिर हिला कर हां की। दोनों तरफ खुशी की लहर फैल गई। मेरे पिता जी ने मुझे कहा कि मैं लड़की से पाँच मिनट बात चीत कर लूँ ताकि शकशुवा दूर हो जाए। मैं उठकर लड़की की तरफ गया। वह दूर बैठी थी। मुझे आते देख वह और दूर हो गई। मैं थोड़ा सा आगे बड़ा, वह और दूर हो गई। मैं शर्मीदां सा हो गया। बाकी सभी बातचीत में व्यस्त थे। मैं हारकर वापस अपनी कुर्सी पर आ बैठा। पिता ने पूछा, "सुना! कर ली बातचीत!" मैंने खींझ कर कहा, "वह कहीं खड़ी ही नहीं होती," पीछे ही पीछे हट जाती है मैं बात खाक करूँ? जब लड़की से पीछे होने का कारण पूछा गया तो वह भी खीझ कर बोली, मैंने तो उसे (मेरे रिश्तेदार को) पसंद किया है, यह कौन धमकड़ जैसा मेरे पीछे-पीछे चला आता है। यह कौन है? "लो जी, बात वहीं टूट गई। मेरा रिश्तेदार तो बाल बच्चे वाला था वह तो विचौलगी करने लगा था। वह लड़की तो उसके साथ शादी करने को तैयार हो गई। वाह रे परमात्मा, किसी को कोई भी नहीं किसी को दो-दो हमारी तो किस्मत ही खराब है।" इस तरह यह रिश्ता भी बीच में ही टूट गया। दोनों पार्टियां एक दूसरे को कोसती हुई अपने-अपने ठिकाने पहुँची। कोई किसी का दुःख बाँटने वाला नहीं था। शमशेर सिंह पर सभी तरस खाते थे, तथा सभी उसकी सहायता भी करना चाहते थे ताकि उसका घर बस जाए। परन्तु हर

बार कोई न कोई पंगा पड़ जाता था।

यह वारदात सुनाकर शमशेर उदास हो गया था। उसकी उदासी तोड़ने के लिए एक मास्टर ने कहा, "शमशेर सिंह तू दिल का छोड़ वाहिगुरू (परमात्मा) के घर देर है अन्धेर नहीं। अन्य कोई घटना सुना!" वह बोला घटनाएं तो बहुत हैं, परन्तु नतीजा बाद में वही तुच्छ। काम तमाम! इसी तरह मेरी देखा दिखाई एक बार एक होटल में हुई। मेरे पिता जी भी, बन ठन कर आए ताकि बनने वाले सम्बंधियों पर अच्छा प्रभाव पड़े। मेरी शक्ल मेरी मां कुदेसन जैसी है परन्तु बाप सुन्दर सरदार दोनों पार्टियां टेबल के गिर्द बैठकर चाय की चुस्कियां लेने लगी। खूब गपछप हुई। लड़की से पूछा गया। उसने हां कर दी क्योंकि वह विधवा थी। उसका पति फौजी पाकिस्तान की लड़ाई में मारा गया था। दोनों पक्ष खुश हुए कि चलो बात तो आखिर किसी लक्ष्य तक पहुँची। मैंने परमात्मा का लाख-लाख शुक्र किया क्योंकि लड़की मुझे पसन्द थी। मैं सोच रहा था कि परमात्मा कहां से मुझ पर इतना मेहरबान है। बाद में पता चला कि वह मेरे बाप को पसन्द किए हुए है। मेरी तरफ तो वह कभी कभार ही देखती थी। पर ऊपरी तौर पर बात चाहे मज़ाक में पड़ गई। सभी हँस-हँस कर दोहरे हो गए। परन्तु अन्दर से मैं तथा मेरा पिता रो रहे थे। हमारी बहुत दुर्गति हुई थी।

शमशेर सिंह रूदल (रौंदु) जैसा हो गया था। एक अन्य मास्टर ने कहा, "शमशेर, आज तू दिल हल्का कर ही ले। दु:ख बताने से दिल हल्का हो जाता है। उसका भी मन (मूड़) बना हुआ था। वह बोला, "भाईयों आप से क्या छुपाना? एक बार मेरी मासी ने जवान लड़की के बारे में बताया। लड़की वाले मेरी नौकरी के कारण मुझे देखने आ गए। वे गरीब थे, हमसे भी मासी के घर में ही देख-दिखावा हुआ। रिश्तेदार आपस में गलगप्प (बातचीत) तथा विचार बटांदरा कर रहे थे तो मैं लड़की की तरफ बड़े ध्यान से देख रहा था मेरी टिक-टिकी लगाकर देखने के कारण वह मुस्कुरा रही थी। अन्तता: लड़की को एक तरफ ले जा कर पूछा गया उसकी मर्जी (सहमति) के बारे में। उसने बड़े वेविझक होकर हमारे सामने खड़े हो कर कहा, "अंकल जी, आप लड़के को तो लेकर ही नहीं आए। हमारी आंटियों ने आप को तो पहले ही पसंद किया हुआ है। लड़का सामने आए तो मैं अपनी पसंद बताऊँगी।" यह कहकर वह पीछे हट कर खड़ी हो गई हम सभी अपमानित हो गए।

मासी हमारी भी लड़की को समझ रही थी परन्तु लड़की की दलीलों को वह काट नहीं सकती थी। दोनों तरफ घुसर-फुस्सर हो रही थी। फिर मामले को स्थागित कर दिया गया तथा सभी घरों को लौटने लगे। तत्पश्चात मेरी लड़की देखने की हिम्मत ना पड़ी। शादी का मामला खुहरवाते में पड़ गया तथा हम कमरकश उतार कर घर बैठ गए।

परन्तु रिश्तेदार कब बैठने देते हैं। मेरी बड़ी बहन मेरा घर आबाद हुआ देखना चाहती थी। उनके पड़ोस में एक औरत थी। ना तो वह विवाहित न कुआरी। उसका पति शादी करके कनेडा चला गया था फिर कभी वापिस न लौटा। उसका एक लड़का हुआ था, जो बाद में पूरा हो गया। वह औरत मेरे कहे कहाए मुझे देखने मेरी बहन के घर आई। खींच धकेल कर मेरे जीजा जी भी मुझे वहाँ ले गए। वह मेरे साथ चाय पीती रही तथा गलगप्प करती रही। हम अपने पंसदीदा प्रश्न एक दूसरे को करते रहे। अन्ततः मेरी बहन ने उसे एक तरफ ले जाकर उसकी मर्जी (सहमति) जाननी चाही। वह चुप-चुप (गुप-चुप) थी तथा कुछ बताने की सूरत में नहीं थी। परन्तु बहन के मज़बूर करने पर बोली, "मैंने सोचा आपका भाई आप जैसा खूबसूरत होगा। यह आपका सगा भाई है या किसी रिश्तेदारी से? इससे अच्छा हैं कि मुझे किसी कुएं में फेंक दो। बहन जी, मैं तो विधवा ही इससे बेहतर हूँ। यह कहकर वह फूट-फूट कर रोने लगी। "मैं दूसरे कमरे में यह वार्ता सुन रहा था। मेरे कान फट रहे थे तथा धरती स्थान नहीं दे रही थी। मैं तो पहले ही आना नहीं चाहता था। यह तो जीजे ने मेरे साथ मज़ाक किया था। मैं अपने स्थान पर दुखी था, मेरी बहन व जीजा अपने स्थान पर तथा पड़ोसन लड़की अपने स्थान पर। जब सारे दुःखी ही इक्टठे हो जाएं तो कौन किसी का दुःख बाँटे? अपने अपने स्थान पर, अपने-अपने तरीके से हम सभी रो रहे थे। हमें चुप करवाने वाला कोई ना था।"

आखिर छड़ेपन को अपना भाग्य मान कर शमशेर, कमरबन्ध उतारकर घर बैठ गया। उसने जीवन से समझौता करके, अपनी औकात को पहचानते हुए अपना दृष्टिकोण बदल लिया। उसके घर विधवा अधखड़ औरत कामकाज़ करती थी। उसने उसके साथ नज़दीकी बना ली। बुढ़ बैल व दोनों की गति हो गई।

○

लाजो लिहाजो

"तेरे नी लिहाज़ां सानु पटिया"

लाजो अर्थात लिहाजो का हृदय आरम्भ से ही बड़ा कोमल था। उससे दुनिया के दुख कलेश नहीं देखे जाते थे। वह सरबत का भला माँगने वाली थी। अभी वह सुख से छोटी सी थी। उस वक्त वह अपने छोटे बहन-भाईयों की चिढ़ाती व खिझाती रहती थी। उन को विभिन्न प्रकार की वस्तुएं लाकर देती थी। पुचकारती थी। जब भी कोई छोटा बच्चा उसके गिर्द रोता गुदगुदी निकाल कर उसे हँसाती तथा उसे हँसा कर ही दम लेती। उसे घर वाले नगर नैयन कहते थे।

जब वह स्कूल पढ़ती थी तो कुछ दिनों में ही हरमन प्यारी हो गई। वह हिसाब-किताब में बड़ी तेज़ थी। जब भी कोई सवाल फंस जाता तो सहपाठने उसके पास ही सवाल समझने के लिए आती थीं। वह परीक्षा में ज़रूरतमंद तथा नालायक लड़कियों की सहायता करती थी ताकि वह फेल न हो जाएं अन्यथा अध्यापकों से मार पड़ेगी। कई बार उसको नकल करवाते देखकर अध्यापक उसे डांटते थे। पर इन डांटों (झिड़कों) को लाजो एक कान से सुनती तथा दूसरे कान से निकाल देती थी। दसवीं पास करके उसने सिलाई का कोर्स कर लिया था। वह सिलाई करके बहुत कमाई करने लग गई थी। यदि कोई निर्धन उसके पास सिलाई कड़ाई के लिए आती तो वह उससे पैसे नहीं लेती थी। इसी कारण उसे लोग लाजो नहीं लिहाजो कहने लग गये थे। वह अपना घर तथा बाहर का काम बड़ी फ़ुर्ती व लग्न से करती थी। कामकाज में वह साफ सुथरी व दक्ष थी। रसोई व भैंसे दोहने का काम उसका दाएं हाथ का था।

क्योंकि उसने पढ़ना छोड़ दिया था। इस लिए रिश्तेदार उसे कामकाज़

के लिए सप्ताह पहले ही ले जाते थे तथा सप्ताह के पश्चात् उसे शगुनों व भावियों के साथ थैले भरकर छोड़ जाते। इस तरह घर से बाहर रहने के कारण रिश्तेदारों के जवान लड़के उसके साथ बातचीत करने में दिलचस्पी लेने लग गये थे। वह इन लड़कों के साथ खेलकूद कर बड़ी प्रसन्न होती थी। उसकी आयु सोलह सत्रह साल की हो गई थी। रिश्तेदारी के लड़कों ने उसे गलत रास्ते में फिसला दिया था। अब उसे इधर-उधर घूमने का चस्का लग गया था। जो भी उससे विनती या फरियाद करता वह उसके साथ चल पड़ती, चोरी-चोरी से। वह घर से बाहर रह कर खुश रहने लगे। घर वालों को उसका फिक्र पड़ गया था उन्होंने जल्दी से कोई रिश्ता ढूंढ़ कर उसकी शादी की जल्दी की ताकि वह समय पर सही सलामत अपने घर पहुँच जाए।

उसका पति परमेश्वर नेक आदमी था। जब ससुराल में लाजो को कोई जान-पहचान वाला आ जाता तो लाजो का पति उसकी पूरी आव भक्ति करता क्योंकि वह उसके ससुराल गाँव से आया है। जब सास पूछती मेहमान कौन है? तो लाजो बताती कि यह मेहमान उसकी मासी का बेटा है। तथा कई बार फूफी का पुत्र भी कह देती। धीरे-धीरे जब सास को उसके फरेबों का पता चला तो उसने उसके मायके से आने वाले की खुद पूछताछ करनी शुरू कर दी। आने वाले आना कम हो गए पर कभी वह सास को बाहर देख कर आने वाले के साथ हँस खेल भी लेती। उसके पति वस्सन को लाजो की इस लीला का कोई ज्ञान नहीं था। जब उसकी माँ लाज्जो को डांटती तो वह लाज्जो का पक्ष लेता था। लाज्जो की जब वह सूरत देखता तो वह इतनी मासुम व भोली दिखती कि उसको डांटने का उसका हौंसला न पड़ता। जो लोग लाज्जो के चरित्र पर शक करते थे, वे लोग उसकी नजरों में गुनाहगार थे क्योंकि वह समझता था कि लाज्जो की लिहाजी आदत है। वह प्रत्येक के साथ हस खेल लेती है। यही अदा उसके स्वभाव की खूबी है, कमी बिल्कुल नहीं।

एक बार वस्सन की मां बीमार हो गई थी। उसका पिता बहुत भला आदमी था। वह व वस्सन अस्पताल में देख भाल के लिए आते जाते थे। बुढ़िया का बुखार टूट नहीं रहा था। बाप बेटा उसे बचाने डाक्टरों के पीछे भाग रहे थे। घर में लाज्जों को रहना पड़ता था। एक बार वस्सन घर पैसे लेने

आया। आकर देखा कि घर में कोई नहीं था। उसने सारे घर में खोजा पर लाज्जो नज़र ना आई। इतने में उसको जानने वाला चौबारे से उतरा। वस्सन को देखकर वह फटाफट पौड़िया उतर कर बाहर चला गया। वस्सन ने उसका पीछा किया परन्तु वह दौड़ कर दूर चला गया। घर आया तो लाज्जो कंघी से बाल सवांर रही थी। वस्सन टरंक से पैसे लेकर जल्दी घर से निकल गया। लाज्जो उसे पीछे से आवाजें लगाती रही परन्तु वह जल्दी-जल्दी अस्पताल जा रहा था।

लाज्जो को सूझ गई कि रात को जरूर कोई गड़बड़ होगी। उसका लिहाजी स्वभाव उसे ले बैठेगा। जब वस्सन रात को रोटी लेने आया तो लाज्जो ने माता का हालचाल पूछा। वस्सन चुप रहा तथा रोटी खाकर रोटी का डिब्बा साथ लेकर चलने लगा तब लाज्जो ने बाजु पकड़ कर उसे रोक लिया। वह बाजु छुड़ा कर जल्दी से बाहर निकल गया। लाज्जो फिर आवाजें देती रह गई। वह चाहता था कि इस घटना का जिक्र अपनी माँ से करे, परन्तु किस मुँह से बात करता। वह तो लाज्जो की सिफतें करता नहीं थकता था। उसने चुप रहना ही ठीक समझा। उसने सोचा कि वह उस शख्स से बात करेगा जो चौबारे से उतरा था। परन्तु उसने उसे भागते समय पीछे से ही देखा था इस कारण वह उसकी पहचान नहीं कर सकता था। वह दिन रात इस समस्या के बारे सोचता रहता।

उसकी बीमार मां उसके चेहरे की तरफ देख कर कहती, देख वस्सना, ठीक तो है? पुत्र! मां का गम ना कर। मैं तो जल्दी ठीक हो जाना है। मैंने अभी बहुत समय जीना है। अपने बाप का ख्याल रखाकर, वेचारा चक्कर लगा लगा कर थक गया है। नहीं मां मुझे कोई बाती नहीं, बस यूँ ख्याल आ जाता है। वस्सन ने अपनी उलझन छुपाते हुए मां को कहा। खाली बर्तन लेकर वह घर वापस आ गया।

घर आया तो लाज्जो आज फिर घर नहीं थी। वह सीधा जा चौबारे चढ़ा। लाज्जो वहां नहीं थी। उसने नीचे आकर सभी कमरों में खोजा तथा चारपाईयों के नीचे नज़र दौड़ाई। वहां कोई नहीं था। इतनी देर में लाज्जो जल्दी-जल्दी से बाहर से आई। वस्सन ने आते ही उससे पूछा, "कहा गई थी, मैं तुझे ही इधर-उधर खोज रहा हूँ। वह घबराई हुई बोली," मैं पाने के घर उसकी

घरवाली से मिलने गई थी। वस्सन को तस्सली ना हुई क्योंकि वह घर खुला छोड़ कर गई थी। वास्तव में उस दिन चौबारे से उतर कर पाना ही भागा था। वह उसके घर से पता करने गई थी कि वस्सन उसके बाद उससे मिला के नहीं? पाना उस वक्त घर नहीं था, इसलिए वह उसकी बहु को मिलकर जल्दी-जल्दी घर वापस आ गई थी क्योंकि रास्ते में उसे याद आया कि उसका घर खुला रहा गया है। वस्सन को उसकी लापरवाही पर गुस्सा आ रहा था। उसको यकीन हो गया कि उस दिन भागने वाला पाना ही था। वह गुस्से से कहने लग, "पाने के घर आम लेने गई थी। वह तो तुम्हारे चौबारे चढ़ता है।, तुझे क्या जरूरत है वहां जाने की। मेरी मां मृत्युछैप्पा पर है, तुझे यारों से समय नहीं। जा दफा हो जा कुत्तिया। तुम आज से मेरी धर्मपत्नी नहीं हो। यह कह कर वह अस्पताल चला गया तथा वहां जाकर सो गया। मां बाप उसे गुस्से हुए।

दिन चढ़ा तो वह खुश-खुश नज़र आ रहा था। उसने अपनी समस्या का हल खोज लिया था। जब कोई वस्सन को उसके लिहाजी स्वभाव के बारे में मज़ाकर करता तो वह बड़े आत्म-विश्वास से कहने लगता देख भाई, मैंने तो अपनी नुक्ते नज़र ही बदल ली है। मैं सोचता हूँ कि लाज्जो किसी और की स्त्री है। जब मुझे जरूरत होगी तो वह मेरा भी स्वार्थ सिद्ध कर देती है। मुझे और क्या चाहिए, यह कह कर वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगता तथा मज़ाक करने वाला भी उसकी हँसी में शामिल हो जाता।

उधर लाज्जो ने भी बदले हालात की खोज बीन की। वह अपने चहेतों के घरों में गई। उनको भी बदले माहौल के अनुसार बदलने के समझाया। यदि उन्होंने उसकी बात न मानी तो वह उनके जीवन में विष घोल देगी। लाज्जो की सलाह पर व्यायक असर हुआ। उसको बदली हुई देखकर, वस्सन भी पीछे हटने लगा। इस तरह उसके घरेलु हालात कुछ महीनों में सामान्य हो गए व पहले की तरह शांति से रहने लगे।

○

हीरे की बीरो

बीरो बार्डर के एक गांव में बथु नगड़ की जमपल थी। जब वह जवान हुई तो उसकी शादी हमारे गांव के हरिजन परिवार से ही हुई। बीरो बहुत जवान, सुन्दर व हट्टी-कट्टी मुटियार थी। उसका पति हीरा गांव में दिहाड़ी दैनिक मज़दूरी करता वा गांव में दिहाड़ी ना मिलने के कारण शहर में रिक्शा चलाने चला जाता था। उसके घर लगातार दो लड़के हुए। दोनों लड़कों की वह सप्ताह-सप्ताह खुशी मनाता रहा। वह घर में दारू निकालता, आप पीता व लोगों को पिलाता रहा। जब पैसे खत्म हो गए तो वह शहर दिहाड़ी लगाने जाने लगा। वह काम तब करता था जब उसकी जेब मे पैसे खत्म हो जाते थे। जब से वह शहर रिक्शा चलाने जाने लगा था, दूसरे रिक्शा वालों की संगत से वह नशे के कैपसुल खाने लग गया था। धीरे-धीरे जब उसे थकावट होती वह कैपसुल मुँह में भर लेता। इन नशे वाली गोलियां व कैपसुलों के कारण वह दिन प्रति दिन कमज़ोर होता गया तथा एक दिन खत्म तेल के दिए की तरह फक-फक करता बुझ गया।

बीरो के अभी लड़के बहुत छोटे थे। एक तो अभी दूध ही पीता था। घर में कोई कमाने वाला ना रहा था ना ही घर के इलाबा उसकी जायदाद थी। वह संतान को पालन पोसन के लिए जिमींदारों के घर काम धन्धा करने लगी, जिससे उसकी दोनों समयों की रोटी चलने लगी। वह घरों का गोबर कूड़ा भी करती। सारा-सारा दिन बाहर रहने के कारण उसके लड़के रूल गए। चाहे सास घर रहती थी परन्तु वह वृद्ध थी। बच्चों को अच्छी तरह संभाल नहीं सकती थी। एक दिन बच्चों की तरसयोग हालत देख कर रो पड़ी। परन्तु काम करने तो उसे जाना ही था इसलिए वह अपने बच्चों की किस्मत कोसने लगी। चाहे उसका जेठ व नन्द उससे हमदर्दी रखते थे परन्तु हमदर्दी से पेट नहीं भरता।

उसके जेठ जीवन के घर दो लड़कियों के इलावा कोई औलाद नहीं नहीं हुई थी। वह इलाज करवा कर हार गया था। नर औलाद के बिना वह अपना घर अधूरा समझता था। उसने हमदर्दी के तौर पर एक लड़का अपनी मां की सहायता से बीरो से मांगा। परन्तु ना तो बीरो लड़का देने को तैयार थी तथा ना ही उसकी जेठानी लड़का बाहर से लेने को तैयार थी। दोनों की विरोधता के कारण यह मामला बीच में ही ठप हो गया उसने अपनी व अपनी छोटी भाभी की सहायता करने का एक और तरीका सोचा व अपनी मां के साथ परामर्श किया इस विधि में बीरो ने जीवन की गोद हरी करनी थी तथा यदि उसके घर लड़का हो तो वह जीवन को सौंप देगी व प्रतिफल मे उसे पच्चीस हज़ार रूपए दिए जाऐंगे। सास ने किसी तरह बीरो को मना लिया। जीवन कभी-कभी बीरो के घर जाता रहा। बीरो की गोद जब हरी-भरी हो गई तो उसकी नन्द ने उसकी प्रशंसा करनी आरम्भ कर दी की बीरो ने कुर्बानी दी है। जीवन बच्चे सेहत के लिए फल व अन्य ताकत की दवाईयां लेकर आने लगा। जीवन की घरवाली सामने तो कोई प्रभाव ना देती पर भीतर से बहुत दुखी थी क्योंकि जीवन का अधिक ध्यान बीरो की तरफ हो रहा था। जीवन चाहे उसे प्यार करता, दुलारता पर बीरो उसकी आँखों में रड़कने लगी थी।

बच्चा पैदा होने के नज़दीक बीरो को अस्पताल दाखल करवा दिया गया। बीरो को जीवन व उसकी जेठानी की लड़ाई का पता लगता रहता था। भीतर से बहुत दुखी थी। जब बच्चा पैदा हुआ तो वह नर नहीं था। जीवन ने सुनते ही गुच्छी मार ली। उसकी घरवाली को और चिढ़ मच गई। जीवन लड़की को हरगिज नहीं लेना चाहता था। उसने सोचा था कि बीरो को पहले दो लड़के पैदा हुए हैं अब भी लड़का ही पैदा होगा। परन्तु कुदरत को कुछ और ही मन्जूर था। बीरो व उसकी सास अकेली ही अस्पताल में रह गई। उनका हाल पूछने न तो जीवन आया तथा ना ही नन्द। बीरो को उस लड़की के भविष्य की चिन्ता होने लगी। वह तो पहले ही दो लड़के बड़ी मुश्किल से पाल रही थी। उसकी लड़की तो पैदा होते ही मरीयल सी थी। वह और बीमार व कमज़ोर हो गई उसका किसी ने ध्यान ना दिया तो वह चलती बनी। ऊपर से चाहे सभी दुखी थे पर भीतर से बीरो समेत सब खुश थे।

बीरो को अपने जेठ जेठानी व नन्द पर बहुत गुस्सा था उसने घर आकर अपनी नन्द से झगड़ा किया व जीवन के विरूद्ध केस दर्ज करने का फैसला किया। उसकी सास ने उसको केस करने से रोका। वह जीवन के व्यवहार से दुखी थी। उसकी नन्द निंदो भी भागी आई तथा उसने भाभी को केस करने से रोका। झगड़ा बढ़ता देखकर रिश्तेदारों ने दोनों पार्टियों का समझोता करवा दिया। समझोते के अनुसार जीवन ने बीरो को तीस हज़ार रूपए दे कर अपने शिकवे गीले भुलाने की कोशिश की। बीरो ने यह तीस हज़ार रूपए बैंक में जमा करवा कर पहले की तरह गोबर या कूड़ा-कर्कट करने अपने लड़के पालने लगी। इसी तरह वक्त को धक्का देते हुए पाँच वर्ष निकल गए। इसी दौरान उसकी सास मर गई। सास का उसे परमात्मा जितना सुख था।

सास के बाद उसका एक बार फिर जीवन कठिनाईयों से भर गया। सास बच्चों की संभाल करती थी तथा वह लोगों का काम धन्धा करके परिवार पालती थी। अब बच्चों को पीछे से कौन सम्भाले? फिलहाल बीरो ने घर रहना शुरू कर दिया। सास के भोग पर सभी रिश्तेदार आए थे। उसकी ननद निंदो भी आई थी। उसका घरवाला थानेदार था। उसकी शादी को अब बारह वर्ष हो गए थे। उसकी कोई औलाद नहीं थी। थानेदार व निंदो ने शहर गुरदासपुर को कोई डाक्टर नहीं छोड़ा था। डाक्टरों ने निंदो में कमी होने का प्रकटावा किया था। थानेदार निन्दो को नये विवाह की धमकीयां दिन रात दे रहा था। निंदो ने अपना घर बचाने के लिए बीरो को एक लड़का देने की प्रार्थना की परन्तु बीरो किसी भी सूरत में अपना पुत्र किसी की झोली में डालने को तैयार न थी। उधर थानेदार भी किसी का लड़का लेकर पालने के हक में नहीं था।

अन्त में परिवार में यह फैसला हुआ कि थानेदार के बच्चे को जन्म देगी तथा इस सेवा का प्रतिफल उसको दानेदार पचास हज़ार देगा व बच्चा निंदो की गोद में डाला जाएगा। अहदनामे के अनुसार थानेदार कभी-कभी बीरो के घर आ जाता तथा दिन को ही चले जाता। बीरो ने यह फैसला केवल बच्चों को पालने के लिए किया। इसलिए वह थानेदार के आने पर उससे खुश होकर मिलती तथा उससे प्यार मुहब्बत से पेश आती। बीरो की गोद हरी हो गई तथा वक्त आने पर निन्दों भाभी के पास आकर रहने लगी। दाता ने इस बार उसकी गोद में लड़का डाला।

थानेदार व उसके परिवार ने बच्चे की बहुत खुशी मनाई, जब लड़का तेरह दिन का हुआ तो निंदो उसे नहला-धुला कर अपने घर गुरदासपुर ले गई। थानेदार उसे लेने आया था। लड़के को बैंड बाजों के साथ घर लाया गया।

बच्चे का हाल चाल पूछने के बहाने वह गुरदासपुर गई। उसे थानेदार ने अभी पचास हज़ार रूपए नहीं दिए थे। उसने सोचा कि वह आप दे देगा। परन्तु कई दिनों तक उसने पैसों का जिक्र नहीं किया। बीरो ने निंदो से बात की। निंदो ने अपने घरवाले से तुरंत पैसे देने की सिफारिश की। परन्तु थानेदार बहाने बाजी किए जा रहा था। उसने बीरो को एक तरफ ले जाकर कहा कि वह उसके साथ शादी करना चाहता है तथा वह उसके पुत्रों को अपना पुत्र समझ कर पालेगा। बीरो ने यह बात सुनकर कोई हूँ हां नहीं की तथा फिर निंदो के कमरे में जाकर काके के साथ खेलने लगी। गलबात में उसने निंदो के साथ थानेदार की पेशकश का जिक्र किया। निंदो को मानो की साँप सूंघ गया हो। उसने उठकर दूसरे कमरे मे जाकर थानेदार के साथ जा पंगा ले लिया वह तू-तू मैं-मैं करने लगी तथा बाद में गालियों की बौछार होने लगी। बात मार-कुटाई पर पहुँच गई। बीरो ने जल्दी से आकर दोनों को छुड़ाया पर निंदो ने बीरो को धक्का दे मारा दूर फैंक तथा कहने लगी, "कुत्तीये सब तेरा किया धरा है। दफा हो जा कमजात जहां से।"

थानेदार सुबा सिंह बीरो का अपमान न सहन कर सका क्रोध में आकर उसने निंदो को गले पकड़ लिया तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसकी आँखे बाहर नहीं आ गई। बीरो उसके मुख में पानी डाल रही थी परन्तु पानी बाहर आ रहा था। उसे सूझ नहीं रहा था कि वह क्या करे? उसने दोनों लड़कों को तैयार किया तथा थानेदार के घर से जल्दी से निकल गई। छोटा बच्चा जोर-जोर से रो रहा था परन्तु थानेदार निंदो की लाश को एक बोरी में डालने की कोशिश कर रहा था।

बीरो ने यह सारी वारदात अपने जेठ जीवन को आकर बताई। वह गांव से चार आदमी लेकर गुरदासपुर पहुँच गया। इस वारदात के दूसरे दिन पहुँचा था। घर में एक स्त्री बच्चे को गोद में लेकर खेल रही अर्थात बच्चे को दुलार रही थी। थानेदार के बारे में पूछने के बाद वे थाने चले गए। थानेदार उनको देखकर आगे-पीछे हो गया। उन्होंने एस.एच.ओ. को सुबा सिंह का दुष्कर्म

लिखित रूप में शिकायत के रूप में प्रदान किया। जीवन की तरफ से उसके विरूद्ध पर्चा दाखल करवाया गया व खोजबीन (तफदीश) शुरू हो गई। पुलिस वाले पुलिस वाले की पीठ नहीं लगने देते। फिर क्या था नौ मन रूई व तेरा मन कपास। जीवन व उसके साथी कुछ दिन वहां ठहरकर वापस आ गए तथा केस ठंड़े बस्ते में पड़ गया।

बीरो की जेठानी जीवन के साथ रूठ कर अपने मायके चली गई थी। वह अपने पति पर बीरो के प्रति नर्म व्यवहार से बहुत दुखी थी अर्थात नाराज थी। वह लड़कियां गाँव छोड़कर मायके जा पहुँची। जीवन ने उसको संदेश तो भेजा परन्तु ना तो वह उसे लेने गया तथा ना ही मनाने। मामला बिगड़ता-बिगड़ता बिगड़ गया। उसके घरवालों ने उसे ताकतवर धर बिठा दिया। जीवन अकेला ही घर संभालने लगा। उसकी गांव में किरयाने अर्थात परचून की दुकान थी। इसलिए रोटी-दाल की समस्या गंभीर बन गई। उसने आखिर में बीरो के घर जाने का मन बनाया। उसने अपनी पत्नी की करतूत बीरो के साथ बाँटी। उसका चुल्हा-चौंका भी न रहा था तथा लड़कियां माँ को याद कर रोती थी।

उधर बीरो भी गुरदास पुर से चोट खाकर आई थी। उसे अपना भविष्य भी अन्धकार मय नज़र आ रहा था। उसने जीवन पर आम सी नज़र फेरी। उसमें उसे हीरा दिखाई देने लगा। जीवन ने विनती करते हुए कहा, बीरो मुझे पिछली बात माफ कर दे। तेरे बच्चे तो तेरे क्या तो मेरे बच्चे मेरे क्या। दोनों का खून तो एक ही है। हमें इन बच्चों से ज्यादती नहीं करनी चाहिए। बच्चे तो परमेश्वर का रूप होते हैं। हमें तो इन्हें मिल कर पालना चाहिए। मेरी अकेली दुकान इन बच्चों को किसी चीज की कमी नहीं आने देगी। यह सुनकर वह अपने जेठ के पांव पर गिर पड़ी तथा जीवन ने उसे उठाकर गले लगा लिया। दोनों एक पजांली में सिर देने को तैयार हो गये। बीरो अपने लड़कों को ऊंगली लगाकर जीवन के पीछे चल पड़ी। आखिर गधी बरगद के नीचे आ ही गई।

चाहे बीरो ने अपने जीवन में कई करवट बदले थे। कई मोड़ काटे थे तथा कई समाज के विरूद्ध फैसले लिए थे। परन्तु गाँव वाले सोचते कि उसने जो किया अपने परिवार के लिए किया। वह समझते थे कि वह नीयत से अच्छी है। तथा अपने बचनों को पूरा-पूरा निभाया। इस तरह हर कोई नहीं कर सकता।

○

बीबी निहाल कौर

नशे की बंद बोतलें तुझे पीएंगे नसीबों वाले

नौनिहाल कौर नंबरदार बचितर कौर की सब से छोटी पुत्री थी। उसका एक भाई तथा चार बड़ी बहनें थी परन्तु वह शक्ल तथा अक्ल से सब से सुन्दर व चुस्त चालाक थी। उसका भाई धीरा लड़कियों में पला बड़ा होने के कारण लड़कीयों जैसा था। नंबदार की लड़कीयों में से निहाली ही पड़ी लिखी थी बाकी तो भाईयों की तरह दसवीं पास करके अपने घरों (ससुराल शादी करके) चली गई।

उसकी पढ़ाई के कारण उसकी शादी बहुत देरी से हुई। जबकि अच्छे रिश्तों का उसके घर तांता लगा रहा। उसने अपने बाप को पहले ही कह दिया था कि वह उसकी शादी की परवाह ना करे। वह जब करवाना चाहेगी घर बता देगी। स्कूल में लड़के उसके पीछे-आगे घूमते फिरते थे। नर अध्यापक उसे पढ़ाने में अधीक विशेष रूची रखते थे, जिस कारण उसकी सहपाठने तथा महिला अध्यापिकाएं उस के साथ द्वेष करती थी। उसकी अधिकतर घुलने-मिलने की चर्चा होती रहती पर निहाली किसी की परवाह न करती क्योंकि मुख्य नर अध्यापक उसकी प्रशंसा करते थकते नहीं थे। वह पढ़ाई तथा लिखाई में बहुत प्रसन्न थी। उसको अध्यापक जिदोजिद अधिक नंबर देकर श्रेणी में अव्वल कर देते अर्थात बना देते। जबकि उसकी कक्षा में उससे भी अधिक होंशियार लड़के लड़कियां थे।

उसको कोई भी नौनिहाल करके नहीं पुकारता सिवाए उसके पिता के। बाकी सभी निहाली ही कह कर खुश होते थे। जब निहाली शहर के कालेज में दाखिल हुई तो उसे खेलों का शौक पड़ गया। वह बड़ी सुडोल शरीर वाली, तीखे नयन-नक्श वाली, गोरी चिट्टी व जवान शोकरी निकली। बालीवाल

तथा बास्कटबाल उसकी मनपसंद खेले थी। मर्द कोच उसको मैदान में चार-चार घंटे खिलाते ना थकते। इन खेलों में उसने जिला स्तर व राज्य स्तर के मुकाबलों में भाग लिया तथा कालेज के लिए दर्जनों शील्ड व इनाम जीते। यहां भी उसके मर्द कोचों के साथ चर्चे चलने लगे परन्तु उसकी प्राप्तियों को देखकर प्रिंसीपल ने भी इस का ख्याल ना किया। उसने बड़ी शान के साथ बी.ए. की तथा बी.एड. करने के लिए ट्रेनिंग कालेज में दाखल हो गई। ट्रेनिंग कालेज में भी उसने अपने मिलनसार स्वभाव दिल को खींचने वाली मुस्कुराहट व लियाकत (योग्यता) ने सब को निहाल किया।

बी.एड़ करते ही वह जलालाबाद हाई स्कूल में बतौर अध्यापिका भरती हो गई। उसे नियुक्ति के समय एक पैसा भी नहीं खर्चना पड़ा जबकि बाकियों को इस काम के लिए हजारों रूपए खर्चने पड़े। वह अपनी सिफारिश आप ही थी। निहाली विशेष रूप से लड़कों के स्कूल में नियुक्त हुई थी मुख्य अध्यापक हुंदल साहब उस से बहुत प्रभावित थे। वह हर काम के लिए नौनिहाल कौर को आगे करते। बाकी अध्यापक बहुत जलते भुनते पर उनकी सुनने वाला कोई नहीं था। वह अपने आलोचकों की सरेआम बेइज्जती कर देती थी। एक बार तो उसने एक अध्यापक को चप्पलों से पीटा था। उसकी यदि कोई शिकायत भी करता तो उसे मुँह की खानी पड़ती। एक दिन निहालो स्वयं इस माहौल से तंग आ गई। उसने बदली (ट्रांसफर) के लिए मुख्य दफ्तर अर्जी (प्रार्थना पत्र) भेजी। उसके निंदको की मां मर गई जब उन्होंने देखा कि डी.ई.ओ. स्वयं एक दिन स्कूल निरीक्षण के बहाने आकर उसका (ट्रांसफर) पत्र उसे दे गया। सारे दब गए।

निहाली का नया स्कूल भी सह-शिक्षा (को एड्केशन) वाला था। नये स्कूल के अध्यापकों ने उसकी शोभा सुनी हुई थी। इस लिए उन्होंने उसके आने की खुशी मनाई। मर्द अध्यापकों के तो पैर जमीन पर नहीं लग रहे थे। धीरे-धीरे वह सभी ही उसके नज़दीक आने लगे। मुख्य अध्यापिका नारी होने के कारण वह उसके साथ लगती थी तथा उसकी बढ़ती शोहरत से चिंतित थी। स्कूल की महिला अध्यापिका से भी उसके संबंध खुशबार थे। इस लिए वे निहाली के साथ खुश थी।

एक अनार सौ बीमार। निहाली एक थी व चाहने वाले दर्जनों थे। एक

बार दो अध्यापकों की अर्द-अवकाश में जमकर आपस में लड़ाई व फौज दारी हुई। दोनों निहालों के प्रशंसक थे। दोनों ज्यादा से ज्यादा उसकी नज़दीकी होने का दावा पेश कर रहे थे। निहाली ने ब्रारी-बारी दोनों को ठंडा कर दिया तथा वे फिर से एक दुसरे के साथ बोलना-चालना शुरू हो गए। एक दिन प्रमुख शिक्षका ने निहाली को अपने दफ्तर बुलाकर मर्द शिक्षकों से अधिक घुलने मिलने से वर्जित किया। वह इस डांट की बिल्कुल परवाह ना करती हुई बोली, "मैडम जी, सच पूछो तो औरत बनी ही मर्द की खुशी के लिए है तथा यह खुशी बांटना उसका जन्मजात फर्ज है। मुख्य शिक्षका पहले तो निहाली का यह उत्तर सुनकर चकरा गई तो फिर अपने आप को संभालती हुई बोली, दफा हो जा ऐसी अक्ल देने वाली। मैं तेरा तबादला करवाकर ही साँस लुंगी। मैं यह गन्दगी स्कूल में और बर्दाशत नहीं कर सकती। अपनी मैडम को लाल पीले होते देख उसने चुपचाप बाहर जाना ही बेहतर समझा।

सभी अध्यापक निहाली की बदली का इंतज़ार करने लगे। उसकी बदली की चर्चा स्कूल में हर समय होने लगी। एक दिन विभाग का पत्र आया तो पता चला कि मुख्य अध्यापिका का तबादला किसी दूर स्कूल में हो गया है। सभी साबुन की झाग की तरह ब्रैठ गए। उस के प्रंशसको ने खुशी मनाई तथा उन की खुशी की उस समय कोई सीमा ना रही जब उस का पहला मुख्य अध्यापक हुंदल साहिब ही, जो कि शिक्षा के विभाग में एक सफल प्रबंधक माना जाता था, बदल कर उसके स्कूल आ गया। अध्यापकों की जत्थेबन्दी ने कहा चोर व कुत्ती का मिश्रण हो गया है अर्थात इक्टठे हो गए हैं। कोई कहता कि आनन्द लेना है जो कोई निहाली के स्कूल ही लगे, पाँचों ऊँगलियां घी में।

निहाली पहले की तरह इस चर्चा में निर्लेप रहना चाहती थी परन्तु उसके घर वालों ने इलाके में उसकी शोभा सुनकर उसकी शादी की जल्दी कर दी। निहाली ने भी घर वालों की दशा देख कर पजांली में सिर दे ही दिया। बड़ी सज्ज-धज्ज के साथ उसका विवाह इलाके के ताकतवर जिमींदार व नशेड़ी परन्तु शौकीन लड़के के साथ किया गया। हज़ारों की संख्या में रिश्तेदार व बाराती इकटठे हुए तथा जी भरकर जश्न मनाए गए।

परन्तु निहाली की खुशी बहुत देर टिक ना सकी। उसका पति उससे तो प्यार करता था परन्तु सैंकड़ों लड़कों ने उसे दुल्हन बनाने के स्वपन लिए थे। इस लिए धीरज सिंह अपने आप को खुशनसीब समझने लगा कि उसने इलाके की सबसे सुन्दर लड़की से शादी की है। जब गलियों बाज़ारों में निहाली को आते-जाते लोग भूखी नज़रों से देखते तो धीरज का कलेजा फटने लगता। उसकी बैचेनी दिन प्रति दिन बढ़ने लगी। क्योंकि वह अपने दोस्तों-मित्रों से निहाली के पहले जीवन की चर्चित कहानियां सुनता। उसके पास बहुत ज्यादा व्यवसाय था इस लिए उसने निहाली को नौकरी छोड़ने के लिए मज़बूर करने लगा। परन्तु निहाली अपनी नौकरी त्यागने को कत्तई तैयार ना थी परन्तु एक दिन ऐसा भी आया जब उसने धीरज को त्याग दिया परन्तु सर्विस कायम रखी। घरवालों ने, ससुराल वालों ने उसे समझाने-बुझाने की कोशिश सिरतोड़ की परन्तु हुआ वही जो निहाली को स्वीकार था।

निहाली शहर में धीरज का महलनुमा बंगला त्याग वर किराए के मकान में रहने लगी। उसे कोई औलाद ना हुई। इसका परमात्मा ही जाने कौन जिम्मेवार था. वह या धीरज। खैर धीरे-धीरे उसने अपने आप को नई जिंदगी के अनुसार कर लिया। उसके पुराने सहपाठी, समकालिण अध्यापक तथा विद्या विभाग के अधिकारी उसे मिलने आने लगे। अब उसकी तरक्की बतौर मुख्य अध्यापक हो चुकी थी। वह बड़ी शान-शोक्त से रहने लगी। निहाली के घरवालों ने उसका मुकम्मल बायकाट किया हुआ था। यह कोई संसार से बाहर की बात नहीं कि मुसीबत में तो छाया भी साथ छोड़ जाता है, परन्तु रिश्तेदार तथा सगे संबंधी तो उससे सरेआम मिलते थे। निहाली पर इस बहिष्कार का रत्ती भर असर ना था क्योंकि वह समझती थी उसका परिवार परंपरावादी विचारधारा का है।

धीरे-धीरे निहाली का घर लोगों का दुख निवारण बन गया। उसके संबंध बड़े-बड़े अफसरों व सियासी नेताओं से स्थापित हो चुके थे। बदलियों का काम वह बड़े शौक से करती थी। सेवफल की एवज में वह कोई पैसा नहीं लेती थी परन्तु काम धन्धों वाले भेंटों से उसका घर भर देते थे। यह तोहफे वह मन्त्रियों तथा अधिकारियों की झोली में डाल देती थी। उससे मिलकर मर्द वर्ग बहुत खुश होता था। कम ही कुछ ऐसे कार्य होंगे जो उसके

लिए असंभव हो।

आजकल अलग-अलग पार्टियों वाले उसे खींच रहे हैं। नगर कमेटी के चुनाव में वह आज़ाद उम्मीदवार बतौर आसानी से जीत गई थी। दोनों राजनीतिक दलों की कमेटी में बहु गिनती नहीं थी मैडम निहाली आजाद दल की मुखिया थी। दोनों दल उसे अपने दल में मिलाने को बेताब थे। परन्तु मैडम किसी को भी पल्ला नहीं पकड़ा रही थी। उसे पैसे तथा शोहरत की कोई भूख नहीं थी। इन कारणों के कारण बहुत लोग राजनीति में कुददते हैं। वह तो स्वयं शोहरत बाँटती थी। माया भी उसके आगे-पीछे थी। वाहिगुरु नंबरदार की इस भाग्यशाली बेटी को सलामत रखे सभी आंधियों-तूफानों से।

"गोरा रंग ना किसी को रब्बा देना, सारा जग वैरी हो गया।"

○

फतेह सिंह फत्तु

उसका पूरा नाम फतहि सिंह व छोटा फत्तु था वह बहुत ही भोला व किसी वल-फरेब से रहित था। उसके मामे का लड़का नहीं था, इस लिए वह फतहि को अपने घर ले आए थे। यहाँ ननिहाल के गांव में वह सभी आदमियों को मामा जी, औरतों को मामी जी या मासी कहता था। यह था भी ठीक। सभी उसे बड़े चाव से पूछते फत्तु तेरा क्या हाल है! वह आगे से हाथ जोड़कर सति श्री अकाल बुलाता व कहता, "मामा जी मैं ठीक ठाक हां, तू अपना सुना! बड़ों से अदब के साथ बोलना व सति श्री अकाल बुलाना उसको उसके माँ-बाप ने शुरू से ही सिखाया था। इस लिए गाँव का जो भी आदमी उसको राह जाते टकरता वह घर की तरफ से दी शिक्षा के अनुसार, गज़ कर सति श्री अकाल बुलाता व हंसता-मुस्कराता रहता। लगभग सारे गाँव के लोग उसे जानते पहचानते थे।

उसे गाँव के हाई स्कूल में पढ़ने भेजा गया। वह पढ़ाई में कमज़ोर परन्तु मेहनती होने के कारण, प्रत्येक वर्ष पास हो ही जाता था। गाँव की तरह उसे स्कूल के सारे लड़के लड़कियां जानते थे। वह कई बार जब क्लास में लड़कियों की तरफ बैठ जाता तो उसकी कोई शिकायत ना करता। लड़कियां उसके स्वभाव को समझकर हँसी-मज़ाक करती रहती थी तो वह भी बहन जी कहता ना थकता था। एक दिन किसी शरारती लड़के ने किसी लड़की की किताब उसके स्कूल बैग में डाल दी। उस दिन फत्तु लड़कियों की तरफ बैठा था। जब पंज़ाबी के पीरियड में लड़की को किताब बैग में ना मिली तो उसने गुम होने की शिकायत पंजाबी के अध्यापक को की। जब किताब फत्तु के बैग में से मिली तो फत्तु सच्चा होने के लिए शोर मचाने लगा परन्तु मास्टर जी ने बिना किसी पड़ताल के फत्तु को डंडे से बहुत पीटा। वह बहुत

रोया तथा कहे जा रहा था कि वह चोर नहीं है। लड़के लड़कियां भी समझते थे कि फत्तु बेकसूर दिखता था पर अध्यापक को ऐसा कहने की हिम्मत किसी में ना थी तथा फत्तु निर्दोष ही मार खा बैठा। उसका लड़कियों की तरफ बैठना बंद हुआ। वह भोलेपन में ही खरोंचें लगवा बैठा।

उन दिनों स्कूलों में सजा बहुत दी जाती थी। अध्यापकों ने तो मारना ही था, शिक्षिकाएं भी मांजती थी। जब पढ़ाई ना आती तो अध्यापक लड़कों को बेहताशा पीटते तो लड़के मट बन कर मार खा लेते। एक दिन क्लासों के बाहर लड़के आपस में मशवरा कर रहे थे कि खोदे मास्टर को रास्ते में पकड़ा जाए। प्रेम सिंह जो अंग्रेजी पढ़ाता था, खोदा था। उसकी चीनियों की तरह बहुत कम दाड़ी थी। इसलिए खोदे मास्टर के नाम से जाना जाता था। इन बातों को फत्तू कान लगा कर सुन रहा था। इससे पहले कि लड़के मास्टर को राह (रास्ते) में घेरते, फत्तु ने उसे जाकर सब बता दिया। सलाह करने वाले लड़के पकड़े गए तथा उनको अध्यापक ने पाँच-पाँच बैंत मारने की सजा दी। उनको पता चल गया कि यह फत्तु की मेहरबानी है। उन्होंने फत्तु को इकट्ठी नज़र से देखना शुरू कर दिया, क्योंकि उसकी पिटाई करके वे और पिटना नहीं चाहते थे। अब उन्होंने और कोई सलाह मशर्वारा अर्थात विचार वटांदरा करना होता तो वे फत्तु से दूर रहते थे।

फत्तु मामाओं का पशु डंगर कुंए पर ले जाता तथा शाम को वापस ले आता। कभी-कभी वह पानी लगाने भी चला जाता। एक रात वह झीरी भर कर जब गाँव लौट रहा था तो दो पशु ले जाते उसके वाकिफ मिले तो आदत अनुसार वह कहने लगा, मामा इस वक्त कहां जा रहे हो? पशुओं वाले बिना कोई जवाब दिए, चुप चाप आगे निकल गए। अगले दिन सवेरे ही गाँव में शोर पड़ गया कि बन्तेशाह की दो भैंसे चोरी हो गई हैं। खोजी लाया गया। खुर (भैंसों के पाँव के निशान) रास्ते की तरफ जाता था व आगे जाकर कोई पता नहीं लग रहा था। खोजियों ने यही क़हा की भैंसे किले गांव की तरफ गई हैं व लेकर जाने वाले दो थे। परन्तु गांव से आगे खुर बन्द हो जाता था। किले गांव की भी सरसरी तलाशी ली गई थी। आखिर पुलिस आई तथा पचांयत में इकट्ठे हुए। पुलिस छकी आदमियों के पैरों के निशान चैक कर रही थी परन्तु कोई सुराग नहीं मिल रहा था।

इतनी देर में फत्तु रौनक मेला देखकर वहां आ पहुँचा। वह कभी पुलिस वालों के बाई तरफ से निकलता व कभी दाई और से। वह पुलिस के नज़दीक बैठे शंकित आदमियों को घूर-घूर कर निकलता। वह खीझकर बोला, कौन है तू? मामा मैं फत्तु हूँ। फत्तु ने आदर से उत्तर दिया। उसके मुँह से मामा सुनकर थानेदार ने उसे दो चार डंडे लगा दिए तथा बोला, तू कौन आ गया हमारा भांजा यहां। उसे बचाते हुए सरपंच बोला, सरदार बहादर यह लड़का सीधा साधा है, ननिहाल रहता है तो इस लिए सब को मामा कहता है। यह सुनकर पुलिस वाले व गाँव वाले हँसने लगे। पिटाई होने पर भी उसने थानेदार को एक तरफ होकर बात करने की विनती की। थानेदार मुस्कराता हुआ दूसरी तरफ जाकर उसकी बात सुनने लगा। बात सुनाकर फत्तु भी थानेदार के साथ वापस आ गया। कौन है गेजा तुम में से? थानेदार ने क्रोध से पूछा। गेजा जो शकी आदमियों में बैठा था तथा घूर-घूर कर फत्तु की तरफ देख रहा था। थानेदार ने डंडा जमीन पर मारकर कहा, तू है चोर, गेजे, इस लड़के (फत्तु) ने तुझे कल रात भैंसे ले जाते हुए देखा था। इससे पहले की गेजा इससे इन्कार करता फत्तु बोला, "मैंने इसे रात को बुलाया भी था। यह चुपचाप करके निकल गया था। थानेदार ने गेजे को लेटाकर बेहिसाबा पीटा। ज्यादा मार ना सहता हुआ वह बोला, जनाब गलती हो गई है, माफ कर दो। सारा गांव फत्तु की दलेरी व बेवाकी पर हैरान हो रहा था तथा गेजे की करतूत पर थु-थु कर रहा था। शाह जिस की भैंसे चोरी हुई थी, दौड़ कर फत्तु की तरफ गया तथा उसे गले लगाकर शाबाशी दी। फत्तु के असली मामे हैरान-परेशान हो गये थे। गेजे के साथ उनकी दुश्मनी की नींव पड़ गई। गेजा पहले भी चोरियां करता था तथा नामी बदमाश था। बुरे आदमी के साथ दुश्मनी बुरे नतीजे पैदा करती है। वे फत्तु को अलग करके समझाने की कोशिश करने लगे पर अब तीर कमान से निकल चुका था।

फत्तु के मामाओं की एक आटा चक्की भी थी। वाही (खेती) के साथ-साथ वे चक्की भी चला रहे थे। आधा गाँव वहाँ आटा पिसाने आता था। एक भईया आटा चक्की का काफी काम संभालता फिरता था। कभी-कभी आटे की मिलावट बारे कोई शिकायत करता तो फत्तु का बड़ा मामा भईये को झिड़ककर कहता, उए उल्लु के पट्ठे, आटे की आगे

से शिकायत नहीं आनी चाहिए। इस तरह वह भईयों को विभिन्न प्रकार के दबके मार कर परचा लेता था। फिर एक दिन जब नंबरदार का लड़का फक वाले आटे की शिकायत लेकर आया तो उसका मामा कहने लगा, यह आटा आपने किसी अन्य चक्की से पिसाया होगा, हमारे आटे में फक कहां से? नजदीक अचानक फत्तु बातचीत सुन रहा था। आगे बढ़कर मामे को कहने लगा, "मामा जी, आप को पता है रामू भईया रात को फक मिला रहा था। मैंने आप देखा, यह भईया झूठ बोलता है। इसने मेरे साथ भी कई बार झूठ बोला है। उसके मामे के पांव के नीचे से जमीन निकल गई तथा नंबरदार का लड़का बुड़बुड़ाता हुआ आटे का कट्टा वहीं छोड़ गया। उसके जाने के बाद, फत्तु के मामे ने जूते से उसकी सेवा की तथा कहा, कुत्ते दफा हो जा यहां से, तू अपने घर ही अच्छा है। यहा तो हम थक गए हैं तेरे पंगे निकालते-निकालते अभी गेजे से हमारा वैर डलवाया अब आज नंबरदार सारे गांव में हमारा लगाएगा। तुझे कई बार समझाया पर तू रहा उल्लु का उल्लु। तैयार हो जा, मैं तुझे तेरे गांव आज छोड़कर आऊँगा। मामा अपना गुस्सा निकाल रहा था तथा फत्तु हैरान हो रहा था कि मामे को आज क्या हुआ है?

उसके दूसरे मामे ने बीच में पड़कर उसे वापिस ना जाने दिया। इससे उनकी तौहीन होनी थी। फत्तु अब डर का मारा कोई बात न करता तथा ना ही घर से बाहर जाता। एक रात वह खाना खाने के बाद जरा गपशप के लिए गांव के अड्डे की तरफ गया। रास्ते में उसे भाऊ मिले। आंतकवाद के दिन थे। उसको अकेला देखकर कहने लगे, जहाँ से दौड़कर अपने घर चले जा तथा साथ ही उसे बुलाकर पूछने लगे, अरे लड़के, इस गांव में कोई बुरा आदमी है या नहीं? है जी, एक नहीं दो हैं। एक हमारा भईया व दूसरा गेजा, चोरियां करते हैं जी, भईया आटे में फक मिलाता है जी, फत्तु पीछे मुड़ कर बोला। अरे ऐसे बुरे आदमी नहीं, वे बताओ पुलिस के साथ मेल जोल रखते हैं। फत्तु कहने लगा, ऐसा भी है जी। हमारा सरपंच उसके घर पुलिस वाले आते जाते हैं जी। भाऊआं ने सरपंच का घर पूछा। फत्तु को अपने घर जाने को कहा। आप सरपंच के घर की तरफ जाने लगे।

फत्तु को रात के समय घर से बाहर जाता देखकर, उसका छोटा मामा

उसको वापस बुलाने के लिए उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। समय बुरा था। उसने भाऊओं व फत्तु की बातचीत एक दुकान की ओर से खड़े होकर पूरी बातें सुन ली थी। जब फत्तु भाऊओं के कहने पर घर की तरफ मुड़ा तो मामा उस को दुकान के नज़दीक मिला। उसने फत्तु को तुरंत घर जाने के लिए कहा। घर आते ही फत्तु को उसके मामा ने भीतर जाकर उसको मारना शुरू कर दिया। उसको सुबह घर भेजने का फेंसला किया। फत्तु को यह समझ नहीं आ रहा था कि उसकी पिटाई क्यों हो रही है? बाहर जाए तो भाऊ दबकते हैं घर आऊं तो मामें पीटने से नहीं हटते। उसका मामों के घर से मन उकता चुका था। वह सुबह का इन्तजार करने लगा ताकि अति शीघ्र अपने गांव जा सके। इस तरह गधी फिर बरगद के नीचे आ खड़ी हुई। यह भद्र पुरूषों की दुनिया नहीं उनका असली ठिकाना उनका अपना घर होता है। बाहर से उन्हें केवल धक्के-धोड़े ही मिलते हैं।

○

गोपाला

गांवों में लोगों की पहचान् अभी भी जातियों गौत्रों से होती है। अर्थात् की जाती है। जैसे बिसु महिरा, मैंगो चामड़ीया, कीतु कसाई, हीरा तरखान, गेजा नाई, केसर कंबो तथा इसी तरह गोपाला जट। गोपाले कई अन्य भी थे, परन्तु जट यही ही था। वह अधिकतम घर से बाहर ही रहता था। वह घर केवल सोने ही जाता था। बाकी समय बहचल फिर कभी बूढ़ों (वृद्धों) तथा कभी लड़कों कड़कों की महिफल का श्रृंगार बनता था। उसके हाथ में एक सम्मा वाली डांग हमेशां होती थी। इस डांग से वह कुत्ते बिल्लियों तथा पशुओं व बच्चों से बचा रहता था। कुते उसकी डांग देखकर पहले ही भौंकने लग जाते थे। सुबह उठते ही वह श्रोतों की खोज में चल पड़ता था उससे रास्ते में जो कोई भी टकराता, उसके साथ वह अपनी राम कहानी आरंभ कर देता। सुनने वाले पहले तो बड़े ध्यान से (उसकी बातें तो समालेदार होती थी शौक अर्थात उत्सुकता से) सुनते परन्तु उन्हें जब कोई काम याद आ जाता खिसक जाते। पंगा तब पड़ता जिस वक्त सुनने वाला एकेला रह जाता। उसका तो परमात्मा ही रखवाला था या फिर गोपाला। अकेले की तो वह बाजु पकड़ लेता था तथा तब तक ना छोड़ता जब तक वह अपनी तसल्ली ना कर लेता। बोलते समय उसके मुँह से (दाड़ी मुच्छों के इर्द गिर्द) झाग भर जाती तथा वह अपने गले में लमकाए गमच्छे (पर्ने) से मुँह पोंछकर फिर बातें शुरू कर देता।

उसे घर के काम धन्धे या खेती बाड़ी का कोई फिक्र नहीं था। यह जंजाल उसने अपने लड़कों पर छोड़ा हुआ था। उसके दोनों लड़के कौरे अनपढ़ थे, हर वक्त कोल्हू के बैल की तरह खेतों में जुटे रहते थे। उसकी जमीन भी मुश्किल से निर्वाह योग्य ही थी, इस कारण घर में अत्यंत गरीबी

थी। उसने अपने निर्वाह के लिए एक सांड तथा एक झोटा पाला हुआ था। वह दोनों को सुबह सड़क पर एक टाहली से बांध देता तथा लोग खेबे में आई भैंसो, गईयों को वहां ले आते। एक पशु के बीस रूपए लेकर वह अपनी चादर की किनाए (डब्ब) में संभाल लेता। इस कारज दौरान भी वह निंरतर लोगों को अपनी बातों में लगाए रखता। लोग दात देते हुए थोड़ी देर बाद कहते, "बल्ले जटा, नहीं मुकाबला तुम्हारा।"

मुझे स्कूल की तरफ जाते देख कर वह महज़ बुलाने की खातिर कहता, डमास्टर साहिब कोई दरघाटन (उद्घाटन) हो तो खादम को भी याद कर लिया करो। जरूर जटा जरूर, तुझे नहीं तो बुलाना तो और किसे बुलानां है हमने। साथ तेरी रापटी सुनेंगे व साथ तेरा मिर्जा। मैं यह वादा करके चलने ही लगा था तो वह मुझे रोकते हुए कहने लगा, आपने स्कूल खोला है तो मैंने भी कालज खोल रखा है। आप ने पहले लड़के पढ़ाने हैं तो फिर पैसे लेने है, अपना तो कालेज सवेरे से ही चल रहा है। उसने टाहलियों से बंधी गाये व भैंसों की तरफ इशारा करते हुए कहा। मैं हँसता हुआ आगे निकल गया।

गोपाले जट को सारे गांव की खबर होती थी। वह दिन में कई बार गांव की गश्त करता था। इस तरह एकत्र की जानकारी को वह शायरी में पेश करता था। एक दिन मुझे वह गांव के अड्डे पर टकरा गया, मैंने गांव के बारे में पूछा तो उसकी शायरी फुट पड़ी।

सरपंच बनाये अन्ने (अन्धे),
जिनां कोई ना लाया बन्ने (किनारे)
सरपंच बनाये हकीम,
जो बन बैठे मुनीम।
मिंबर मजहबी बनाए
जिना लोकां दे लीड़े (कपड़े) लाहे।
जटा कोई ना किसी दा लग्गे,
नक्का हर कोई घर का बड्डे।

उसका एक पड़ोसी के साथ जमीन का कोई झगड़ा चल रहा था। उसका एक पड़ोसी उसके लड़कों के साथ पंगे बाजी रखता था, मैंने हमदर्दी से पूछा,

"जटा तेरा जो पतीले चटों के साथ झगड़ा चल रहा है, उसका क्या बना?" उसके जज़्बात शयराना होने के कारण, उभर पड़े तो वह कहने लगे।

देख भई पतीले चट, मैं हां गोपाला जट।
तेरी मेरी साझी वट, हुन अपना नहीं लंघना झट।
सजना जो दवेगा पुलिस में रपट, तो करनी असी भी नहीं घट।
जटा जग में नहीं कोई हमसाया, सब ने अपना ही वत्र वाया।

वह भावुक हो रहा था। मैंने बात की दिशा बदलने के लिए कहा, यह तो गांव तेरी की सुरते हाल है, कोई जग बीती सुना। उसने अपनी टांग को मेरी टांगों में गाडते हुए, मुझे बाँध लिया व कहने लगा, वह भी सुन–

बुड्ढे ने बुड्ढी को मारी लुन घोटनी, बुड्ढी तो खा गई लोट पोटनी
लोट पोटनी खा के बुड्ढी सौ गई
ते झोटे की मोटर नाल टक्कर हो गई
मोटर ते जांदा सी गधा लदिया, उहनु देख के बदल गज्जिया।
बदल गजिया ते डर गई खलकत सारी
खोले ने कड्ड धमीयार दे दलती मारी
दलती मार के गधा तीर हो गया।
भादों में जट फकीर हो गया।
इह कह के गोपाला खिमा मंगदा
ते सच बकनों जट कदी ना संगदा।

एकदम उसी वक्त उस का एक ग्राहक (गाय) ले कर आ खड़ा हुआ। उसने मेरी टांगों में से डांग पीछे खींची तथा अपने कार विहार की तरफ एकाग्र हो गया। थोड़ी देर बाद जब वह फिर खाली हुआ चन्न चामड़िए ने आकर सत् श्री अकाल बुलाई। चन्ना कहने लगा, जटा कोई नई-नई कवीशिरी सुना, गोपाले को कविशिरी पहले ही उतरी हुई थी। वह डांग को चन्ने की टांग में टिका कर कहने लगा–

ये फट वाली गली में हुई चोरी।
गल कही ना कोई छपाने वाली।
जिंदे भन्न के सारा समान ले गये,
  बोरी ले गए थले विछाउन वाली।

टोटा वासमती चावल बहुत बड़ीया,
बुरा खंड लै गए उत्ते पाउन वाली
तोड़े लाह के पप्पु दी पजामी लै गए,
शीशी लै गए दुध चुंगान वाली,
गोपाले जट का डाडा नुकसान हुआ,
सुई लै गए टाकीयां लगाऊन वाली।

उसके सुनाते-सुनाते कई और श्रोते भी इक्टठे हो गए थे। यह कविता सुनकर वे मक्कई के दाने की तरह खिल गए तथा लगे गोपाले के साथ भंगड़ा डालने गुपाला जब खुशी में आ जाता तो वह डांग उलारता भंगड़ा पाता। वह अपनी महफिल में ऐसे नाचता जैसे गोपियों में कान्हा नाच रहा हो। यह उसका नित्य प्रतिदिन का शोक था।

गोपाला एक छोटा जिंमीदार था तथा उसने मेहनत करके अपनी जमीन बढ़ाने की कोशिश या घालना नहीं की थी। उसने सारा काम अपने अनपढ़ व सिद्धड़ पुत्रों पर छोड़ दिया था। वे कोल्हू के बैल की तरह अपनी माँ की हल्लाशेरी से (प्रोत्मसाह से) सारा दिन खेतों में जूझते रहते। उसके लड़के यद्यपि शादी योग्य हो गए थे, परन्तु सहज स्वभाव के मालिक होने के कारण वे आम युवाओं की तरह दीवारें नहीं फांदते थे तथा ना ही घर के बर्तन तोड़ते। इस कारण गोपाल उनकी शादी नहीं कर रहा था। वास्तव में उसके पास शादी के योग्य पैसे ना थे। चार एकड़ में हल की खेती से परिवार का गुज़ारा करना मुश्किल होता है। इसी कारण गोपाला शादी की तरफ कान नहीं कर रहा था। परन्तु मामाओं व अन्य शुभ चिन्तकों रिश्तेदारों ने मिलज़ुल कर उसके लड़के कर कटा कर विवाहीत कर ही दिए तथा उसके घर दो बहुएं आ गई देखते ही देखते उसके घर चहल-पहल हो गई।

विवाह के बाद भी वह रमते साधुओं, फकीरों, योगियों की तरह गलियों को कच्छता रहता व घर के कामों में कोई महत्व ना देता था। वह मण्डलियां इकट्ठी करनी जानता था तथा बातें करनी भी। वह बिना माँगे ही नसीहत देता था व उसको मौके की बात बनानी आती थी। वह कहा करता था, लड़का हो अच्छा तो बहू लड़े क्यों? तवा हो अच्छा तो रोटी जले क्यों? लड़की हो अच्छी तो दामाद लड़े क्यों? सरकार हो अच्छी तो किसान मरे

क्यों? इतने में गोपाले को कोई घर से बुलाने आ जाता तो उसकी शायरी धरी धराई रह जाती। पता नहीं उसने कईयों को डुबोना व कईयों का तारना था। वह ठिब्बी वाली जूती पहन कर घर की तरफ डांग खड़काता हुआ चल पड़ता।

वह बहुत वहमी था। उसको सब से बड़ा वहम भ्रम यह था कि यदि उसने अपने लड़कों की शादी कर दी तो वह जिंदा नहीं बचेगा परन्तु जब उसके नज़दीकियों ने मिलजुल कर उसके लड़कों की शादी कर दी तो उसे कुछ ना हुआ। वास्तव में उसका वहम भी उसकी आर्थिक हालत के साथ संबंधित था। गोपाले के घरवाले खुश थे परन्तु वह उदास था। मुझे जब गोपाले की मानसिक स्थिति का पता चला तो मैं उसका यह भ्रम दूर करने के लिए उसके घर गया। जब मैं उसके घर के नज़दीक पहुँचा तो वहां लोगों की भीड़ लगी हुई थी। कोई आ रहा था तथा कोई वापिस जा रहा था। मुझे पता चला कि वह रात को तीसरे पहर गुज़र गया है। मेरा मन भर आया तथा साँस रूक सी गई। उसे चारपाई पर डाला हुआ था व बर्फ के टुकड़े उसके इर्द गिर्द टपक-टपक करते टपक रहे थे। घरवाले रो पीट रहे थे। मुझे गोपाले की सुनाई एक तुक याद आ रही थी, बुल्ले शाह असां मरना नहीं, गोर पड़े कोई होर।

ऐसे लोग एक चलती फिरती रौनक तथा अपने चौगिर्दे के लिए प्रेरणा होते हैं। गांव में हर कोई उसको भली भांति जानता पहचानता था उनकी उपस्थिति तथा अनउपस्थिति को बड़ी उत्सुकता से महसूस किया जाता है। मुझे पहली बार पता चला कि गोपाले का गांव को क्या योगदान था। गलियां बाज़ार उसके बिना सुनसान हो गए थे। वह तो प्रत्येक के दुखसुख का हिस्सेदार था। आजकल तो लोगों को अपने कामों में ही फुर्सत नहीं मिलती 'वाह गोपाले! तेरे जैसे रोज पैदा नहीं होंगे।'

O

थथ्था

जब भी दीप दारू के दो चार पैग अंदर फेंकता, खिल जाता है तो वह आप मुहारे अपना एक कई बार बोले गीत को अलापने लग जाता–

“ऊऐ तु शुरखी पोडर लावें, शुरमा अखीआं च पावें।
शाडे कोल ना आवें, ते लारे लप्पे लावें।
शानु समझीया झावें, ऊऐ तेरा क्या कहना,
ऊऐ तेरा क्या कहना!!”

उसे यही गीत याद था, जब भी गाता यही गीत गाकर अपना रांझा राजी अर्थात दिल खुश कर लेता था। दीप हट्टा–कट्टा हमारे गाँव का मज़दूर था। वह बड़े दिनों के बाद मुझे गाँव की फिरनी पर मिला तो मैंने उसे जरा रूक कहा, “कहाँ मर गया था तु, कभी आया ही नहीं?” वह तरला सा लेकर बोला शरदार जी, निकला ही नहीं जाता, हम गरीबों ने कहाँ जाना है? बस यहीं धक्के खाते फिरते हैं। मैंने पूछा, तु किस पत्ती में हैं? वह कहने लगा, यह भी शुण लो! अपने गांव में सुख से कई दीप रहते हैं। एक दीप कानां, एक दीप लंगा, एक दीप नैश तथा मेरे पुत्र का नाम लो कि दीप थथ्था का घर जाना है। वे शिदा आपको मेरे घर ले जाएंगे। शंगना शरमाना नहीं बस थथ्था कह दो।

बाकी लोगों की तरह मैं भी उसकी सीधी साधी बातों पर हँस पड़ता। वह पंजाबी गुरमुखी (वर्णमाला) के कई अक्षर (शब्द) सपष्ट नहीं बोल पाता था। उसकी जीब्हा थिड़कती व कई वार गरारी भी अड़ जाती थी। लोग उसकी आम बातें सुन कर हँसने से नहीं रह सकते थे। वह वैसे भी हँसमुख व शुगली आदमी था। वह हर वक्त हकाइतां करता ही रहता था तथा लोगों के पेट दर्द करवाता रहता। वह हर एक के साथ मुस्करा कर बात करता था। लोग

भी उसके साथ टीच्चरें करते थे वह भी जवाब टीच्चर (मज़ाक) में ही देता था। ना तो उसकी बात का कोई गुस्सा करता तथा ना ही वह किसी के मज़ाक को गोलता। वह एक कान से बात सुन कर दूसरे कान से निकाल देता।

हमारी जमीन के एक अदालत में चल रहे मुकदमे में वह गवाह था। गवाही की तारीख पड़ी तो वह हमारे साथ कचहरी गया। एक बजे तक हम अदालत के बाहर गलगप्प करते रहे तथा दोपहर का समय रोटी का आ गया। पिता जी भी साथ थे। वह तथा हम बाकी लोगों की तरह दोपहर का खाना खाने के लिए कचहरी से बाहर डाबों की तरफ चल पड़े। पिता जी जब एक डाबे के अन्दर जाने लगे तो वह पिता जी के आगे खड़ा हो कर कहने लगा, देखिए सरदार जी बात बड़ी शिदी (सीधी) है कि जेकर खवाओगे गोंगलु, गाजरां या गोभी तो गवाही भी वैसी ही होगी। परन्तु यदि खिलाओगे मीट मुर्गा तो गवाही दुंगा थोक (ठोक) कर। जा पुत्र जो मर्जी खा ले तेरे से मुर्गा अच्छा है। सभी सुन कर मीट वाले डाबे के अन्दर जाकर बैंचों पर जा बैठे। बाद में दीप ने ठोककर गवाही दी, वह ऐसे बोला जैसे मौके पर हाजिर हो। वास्तव में वह उस दिन काम पर नहीं आया था। यह सारा मीट का प्रताप था। जब वह थथीयों (तोतलों) की तरह रूक-रूक कर बोलता था तो जज व वकील मुच्छों में हस्ते थे।

एक बार फिर हमारे गांव का एक दुकानदार मद्दी, जिसकी करियाने की दुकान थी, वह माता के दर्शनों के लिए माता वैष्नों देवी गया। पीछे दीप को रखवाला छोड़ा। छिक्का टूटा बिल्ली का भाग्य। उसने एक दोस्त को तनिक अफसोस से बताया, मद्दी शाड़ की दुकान मैं पहली रात सोया तो कभी गिरीया, खाता, कभी मेवे तथा कभी छव्वारे (शुआरे) दूसरे दिन मैं आधी गुलकन्द खा गया। फिर मरूदें (मुरूड़ें) वाला डब्बा खाली कर दिया दूसरी रात भी गिद्दर लेहर की। तीसरी रात मेरी नीयत खराब थी। यदि वह तीसरी रात शाह वापस ना आता तो गुरू की शोंह, मैंने शब डडी-मच्छी खा जानी थी। वह हिम्मत से सुनता रहा तथा साथ में हँसता रहा तथा फिर कहने लगा, चल दीप सिंह, बाकी कभी अगले साल निकाल देना। मद्दी शाह ने तो हर साल माता के जानी ही होता है।

एक दिन वह हमारे खेतों में काम कर रहा था। भाभी खाना लेकर आई। सभी लोग हाथ झाड़ कर रोटी खाने लग गए। भाभी दीप से पूछने लगी, सुना दीपे, तेरी बेटी अब कितनी कु हो गई है? रोटी का निवाला गले से उतार कर बोला, "छराने जैसी है छानी जी! घर वाली की सुना? भाभी ने लस्सी ग्लासों में डालते हुए कहा। वह लस्सी का घुट भरकर कहने लगा, झोरे (भैंसे) की तरह फैली है। शरा दिन कसम से, मरी हुई कुत्तिया की तरह रहती है। उसे कई बार कहा, मां यावीये (गाली देकर) काम किया कर नहीं तो पताका (पटाका) पड़ जाएगा। रोटी खाते सभी हँसने लगे।

मैं तथा मेरा भाई स्वादिष्ट वाले परौंठे खा रहे थे। जब की दीप सूखी रोटी आम के अचार के साथ खा रहा था। हमारे घी से भीगे (चोपड़े) परौंठे को देखकर वह कहने लगा, "शरदार जी, शोंह गुरू की यदि मैं भी घी के परांठे खाता तो इस झौटे (भैंसे) को पूछ से खींच कर शिधा अमृतसर ले जाऊँ। मैंने शेष परांठा दीप के हवाले कर दिया जिसे वह क्षणभर में ही निगल गया। एक दिन हमारे घर से मीट बनकर आया। जब मीट बाँटा गया तो दीप को केवल तरी ही दी गई तथा सारी बोटियां हमारी भाभी ने हमारी बाटियों में उलट दी गई। दीप हमारी तरफ चोर आँख से देख रहा था। मैंने एक संखी (बोटी) निकाल कर उस की रोटी पर रख दी। दीप ने वह बोटी अपनी तली पर रख ली व उसकी तरफ फूंकें मारने लगा व बाला, फुर्र-फुर्र, जा भलेमानस उड़ कर अपनी डार से मिल। यहां हमारे पास अकेली क्या करेगी। यह कह कर सभी खिड़-खिड़ा कर हँसने लगे। मैंने तीन चार डलियां और निकाल कर दीप को दी तो वह फुंकें मारने से तब जाकर रूका।

एक बार दीप को गांव की तरफ जाते पहे (रास्ते) में एक देसी घी का डिब्बा मिला। वह जब सुबह सवेरे (सूर्य निकलने से पहले) जंगल पानी को निकला तो उसके पैरों में एक डिब्बा लगा। वह उठाकर घर ले आया। पत्नी पाशो को पकड़ा कर कहने लगा, लै भागयवान देसी घी, परौंठे पक्का खाऐं। घरवाली सुबह-सवेरे यह डिब्बा देख कर हैरान हो गई तथा जब उसको डब्बे का पता चला तो वह बड़े चाव से देसी घी के बड़े-बड़े परौंठे पकाने लगी। दीप खाने से ना हटे। वह स्वाद-स्वाद में पांच परौंठे खा गया। रात को भी वह सब्जी में वारी-वारी घी डाल कर खाता। अगले दिन उठ कर वह यह हजम (पचाने)

के लिए नहर के पास डंड बैठकें मारने जाने लगा। उसे इस तरह बैठने मारता देखकर, एक गांव का आदमी पूछने लगा, दीप सिंह, परसों रात एक घी का डिब्बा गिरा हुआ तो नहीं देखा? किसी ने उसे बताया था कि दीप एक डिब्बा गांव की तरफ ले जा रहा था। यह सुनकर दीप बैठकें लगाने से हट गया। तथा कहने लगा, हमने तेरे डब्बे की टुई (गाली) मारनी है। यह कहकर वह फिर से डंड-बैठकें लगाने लगा। उस आदमी का शक और बढ़ गया। वह गांव की तरफ सीधा दीप के घर गया। आगे पाशो परोंठे पक्का रही थी तथा वही घी का डिब्बा खोल कर नज़दीक रखा हुआ था। उसने उससे से लड़ने की अपेक्षा अपना डिब्बा उठाया व बुड़-बुड़ करता चलता बना। पीछे दीप भी डंड बैठकें छोडकर घर लौट आया। देखा तो पाशो रो रही थी। तथा चूल्हे की आग बुझ गई थी। दीप के चरण की करतूत का पता लग गया था, वह घरवाली को दिलासा देता हुआ बोला, यह इस कंजर चरणे को दोचार दिन और पता ना चलता तो हमने सारा डब्बा खत्म कर देना था।

एक दिन दीप के सब से छोटे लड़के की बारात जानी थी। घर में सारा शरीका व मेल (रिश्तेदार) पहुँचे हुए थे। सभी जने बारात जाने की तैयारी कर रही थी। दीप शराब का बहुत शौकीन होने के कारण खुशी से दिने चढ़ते ही टल्ली हुआ फिरता था। घरवालों को उसने जबरदस्ती तैयार किया और कार में बैठने के लिए कहा। वह बड़े लड़के को कहने लगा, उल्लु के पटठे! जल्दी किस बात की कर रहा है, वहां आग लगी है। कंजर के, वहां जाकर कौन सी आग बुझानी है? कल को चलेंगे मुन्दे के विवाह, कन्जर के, घूट पी तो लेने दो। बड़े लड़के ने अपने सालों को साथ लेकर, दीप को जबरदस्ती कार में फैंका व बोले सोन हाल का जैकारा बोलते जांजी (बाराती) लड़की के गांव की तरफ चल पड़े। रास्ते में दीप पेशाब का बहाना बना कर कार से उतर गया। व नजदीक खेतों की तरफ भाग उठा। वह नज़दीक कमाद में जा घुसा। बाराती ढूंढने के लिए कमाद में घुस गए तथा खोज कर बाहर लाए। वह पकड़ने वालों पर गालियों की बौछार कर रहा था। उसे ठेके की बोतल दी गई, तब जाकर वह बारात के साथ जाने को तैयार हुआ।

अतः (हठ) करना उसके स्वभाव का हिस्सा था। वह खाने लगता तो उसे हठने की याद ना रहती। वह पीने लगता तो झड़ी लगा देता। नाचने

लगता तो कई नृतकों की बहुत बेइज्जती। वह काम करने लगता तो कई कामगारों के चक्कर घुमा देता। वह गाने लगता तो अपना मनपंसद गीत गाकर फिर गाने से नहीं हटता। चाहे उसके गीत बेतुके होते थे, पर वह गाए जाता था व हटने का नाम नहीं लेता था।

एक दिन मुझे उस के साथ कोई काम था। पता चला कि वह घरवालों के साथ नाराज होकर कहीं बाहर निकल गया है। जंगल गए तो वापस योगी किस बात के ... परन्तु यह पहली बार नहीं हुआ था। वह अक्सर घरवालों के शराब पीने से टोकने पर घर से बाहर निकल जाता तो फिर महीनों के बाद वापस लौटता ही ना। पर अन्त में वह लौट ही आता। इस बार भी घरवालों के विश्वास के उलट छः महीने बीतने पर भी घर गाँव न आया। घरवाले खोजने लगे उन्होंने दाएं-बाएं उसके ठहरावों से पूछताछ शुरू की। बहुत सारे कहते वह हमारे पास आया जरूर था पर पता नहीं कहाँ गया। किसी ने कहा यू.पी. गया है, किसी ने कहा हरियाणा। परन्तु उसका पक्का स्थान ठिकाना पता नहीं लग रहा था।

उसकी गैरहाज़री से गांव की रौनक आधी रह गई थी, उसकी बातें करके ही लोग गुजारा करने लगे। पहले लोग उसे फालतु ही समझते थे तथा अव्वल नंबर का गैर जिम्मेदार। अब लोगों को उसकी खूबियां नज़र आने लग पड़ी थी। उसकी कभी किसी को लगाकर बात नहीं की थी तथा ना ही दिल दुखाया था। वह किसी का अशुभ चिंतक (दोखी) न अर्थात द्वेष या ईर्ष्या नहीं करता था तथा ना ही सारा गांव उसका विरोधी था। उसका गांव से अधिक समय गैर हाजिर होना, लोगों को खास कर उसके हम प्यालों में गहरे पड़ रहे थे। उसके एक नज़दीकी रिश्तेदार ने आकर गांव में बताया कि वह हरियाणे में एक पोष की रात पीकर बाहर पड़ा रहा तो वहीं ठंडी हो गया।

गांव चाहे आज भी आबाद है, परन्तु दीप के बिना रौनक नहीं, जो उसकी रोजमर्रा महफिलों की शिंगार होती थी। यह विशेषता केवल दीप में ही थी क प्रत्येक के साथ हकाईतें व मज़ाक करना व लोग उसका रत्ती भर भी गुस्सा नहीं करते थे।

खलीफा साहिब

कहते हैं कि एक बार तारा सिंह अपनी पत्नी के साथ झगड़ पड़ा। उसकी घरवाली अक्सर डीली-डाली रहती थी। घरवाली जब उसको उसकी परवाह ना करने पर कोस रही थी तो वह खीझ कर बोला इतने की तू जनानी (स्त्री) नहीं, जितने मैंने तुम पर पैसे खर्च दिए हैं। बुड़बड़ाती हुई वह उठ कर अपने कमरे में चली गई तथा रोने लगी। तारू का गुस्सा ठंडा ना हुआ। वह बोलता हुआ पिछले कमरे में उसके पीछे चला गया तथा फिर कड़का, यूँ हीं बुद्धिमानों (सियानों) ने नहीं कहा कि औरत की अक्ल उसकी गुत्त के पीछे होती है। तेरी तो गुत्त के पीछे भी नहीं लगती, बिल्कुल जानवर है तू बिल्कुल जानवर।

इसी तरह लड़ते झगड़ते नुक्ताचीनी से ही उनका सारा जीवन बीत गया। गांव में भी उनकी इतनी की कद्र थी जितनी घर में दुर्गति। वह बहुत जिंदादिल व फराक दिल (खुले दिल वाला) आदमी था। गांव वाले उसके कारनामों को देखकर उसे तारू खलीफा कहने लग गऐ थे। अभी-नबी के समय उसके पास आते तथा वह तुरन्त उसके साथ थाने कचहरी चल पड़ता। उसे घर की कोई चिन्ता नहीं थी। जब वह घर से निकल पड़ता अर्थात चल पड़ता तो सारा दिन घर घर ना लौटता। उनकी आटे की चक्की थी, जिसको पहले उसकी घरवाली चलाती थी, जब लड़का बड़ा हुआ तो उसने सारा काम संभाल लिया। खलीफे की घरवाली अब सिलाई कढ़ाई का काम घर पर करने लगी। इस तरह घर की रोटी चलने लगी।

जब खलीफे के तीन लड़के काम-धन्धों में लग गए तो वे मां के साथ मिलकर बाप को कोसने लगे। वह सभी मिल कर खलीफे के सीधा करने की योजना बनाते रहते परन्तु जब वह सामने आते तो उनको सब कुछ भूल

जाता तथा उन्होंने कहना कुछ तो कह कुछ जाते क्योंकि उनकी धरी-धराई रह जाती थी क्यों कि तारू बहुत कमीने अर्थात कंजूस स्वभाव का था। उसके पास पैसे के सिवा सब कुछ था। अक्ल, शक्ल, जीब्हा व विशाल दिल। उसने जेब से कभी पैसा नहीं खर्चा था क्योंकि उसके पास पैसा होता ही कम था। लोग जब काम धन्धे के लिए उसको साथ ले जाते थे तो सारा खर्चा आप करते थे। काम करवाने वालों को पता था कि वह चाय नहीं पीता, केवल दूध या ठण्डा। रोटी खाने के वक्त वह बिना झिझक कहता, बई मैं डालडा नहीं खाता। मेरी दाल सब्जी को सक्खन से शोंक (तड़का) लगाना। लोगों को काम प्यारा होता है, इस लिए वो उसकी फरमाईशों पूरी कर देते थे। कभी-कभी जब वह किसी का मोटा काम करवा देता तो वह मुदई से घर का करियाना लेने की भी फरमाईश कर देता। अभी तक किसी ने भी उसकी फरमाईश की आलोचना नहीं की थी।

गांव में उसकी सिक्खी सेवकी (शगिर्द मण्डली) बढ़ रही थी। उसके चहतों ने उसे मैंबर पचायंत बनवा दिया। अब तो उसके हाथ और भी मज़बूत हो गए थे। उसका इतना आकर्षण-दबाव था कि सरकारी अधिकारी व कर्मचारी उसे सरपंच समझते थे। जब कोई अधिकारी उसका काम कर देता तो वह धन्यवाद की ऐवज में कहता, सरदार बहादुर, आप तो इन्साफ के दाते हैं। हम आते हैं, झोलियां भर-भर के जाते हैं। राजाओं के घर हीरे मोतियों क़ी क़मी नहीं होती। आप ने तो बच्चे वालों, अपनी खाली झोली भी हमारी तरफ छोड़ दी हमारा घर भी भर जावे। इस तरह के शब्दों की उसके पास बहुत बड़ा शब्द-कोश था। इसकी सहायता से हर निशाना लगा सकता था।

एक बार जब वह गाँव के बस स्टाप पर बस का इन्तजार कर रहा था तो अपने किसी काम वाले को बस पर चढ़ता-चढ़ता कह रहा था, मैं अब मन्त्री साहिब के पास जा रहा हूँ। यदि मुझे मिलना है तो दस बजे डी.सी. दफतर आ जाना। मैं अन्दर साहिब के पास बैठा हूँगा। दोपहर एक बजे मैंने एस.पी. साहिब के पास जाना है। सरपंच की रफल (राईफल) का लाईसेंस नया करवाना है। यदि आराम से मिलना है तो ब्लाक में आ जाना। वहां खुला टाईम होगा, जहाँ कहोगे वहीं चल पड़ेगे। यह कहकर वह बस पर चढ़ गया व बाकी सवारियों में से एक ने अपनी जगह (सीट) छोड़ दी तथा उसे बिठा

लिया। वह बैठते ही मुच्छों को ताव देने लगा व दाड़ी सवाँरने लगा।

एक बार उसका कोई दोस्त उसके गांव आया। उसके घर दरवाजा खड़का कर बोला। खलीफा साहिब, भीतर से आवाज़ आई, वह जी घर में नहीं हैं। दोस्त ने उसके बारे पूछा तो फिर आवाज आई, वह जी सरपंच की तरफ गया होगा या गलियां मापता फिरता होगा। दोस्त वापस जाकर सरपंच के घर खलीफे को जा मिला। तथा उसकी पत्नी के बारे कहने लगा, "तेरी घरवाली बड़ी अच्छी है। मुझे जी कह कर बुलाती है तथा तुझे तू करके, यह क्या बात है? खलीफाा बोला, यदि उसे अक्ल होती तो मैं बाहर भटकता। तुझे पता नहीं क्यों बख्श दिया, वैसे या कोई मेरा मित्र मुझे मिलने आए तो यह साली सुई कुत्तीया की तरह पड़ती है। तू पता नहीं कैसे बच गया, दोस्त सुनकर हँसने लग गया तथा खलीफा भी मुस्कुराता हुआ उसे घर की तरफ ले चला।

एक दफा खलीफे के घर एक पंडित आया। खलीफे की घरवाली ने उसे हाथ दिखाया तथा कहने लगा, "बीबी तुम पर शानि भारी है," सुनते ही घरवाली कहने लगी, तभी तो मेरे घर कलेश रहता है। मेरा घरवाला घर नहीं आता। मेरे बस में नहीं। दूसरों को हँस-हँस कर मिलता है, घर आता तो पता नहीं क्या साँप सूंघ जाता है? आते ही माँ बहन की गालियां निकालने लगता है। बहन जी (बीबी जी) हर चीज़ का हमारे पास उपाय है, यह शनीचर पीछे मुड़ कर तेरे घर की तरफ नहीं देखेगा। मन्त्र जाप करना पड़ेगा तथा सब कलेश कफूर हो जाएंगे। खलीफा की पत्नी ने मन्त्र-जाप करने के लिए तरला मारा, (अर्थात विनती की) तथा पंडित चौकड़ा मार कर मन्त्र पढ़ने लगा जोर-जोर से। घरवाली माथा टेक कर उस के आगे बैठ गई। इतने में खलीफा कोई जरूरी कागज लेने के लिए अचानक घर आया। अन्दर मन्त्र पढ़े जा रहे थे। उसे वैसे भी पंडितों के साथ वैर था। उसने आते ही पंडित की पोटली उपाक कर (जोर से) मारी तथा उसे यह सिड़ी स्यापा बन्द करने के लिए कहा। घरवाली भाग कर पिछले अंदर जा घुसी व पंडित जी अपनी पोटली उठा कर बुड़बुड़ाते हुए दरवाज़े से बाहर निकल गए। जान बची तो लाखों पाए।

उसकी घरवाली के साथ सम्बंध सुखद ना थे। जब भी वह नज़दीक

होकर बैठती दो चार मिनट के बाद ही उनकी गलबात चिंगारियां छोड़ने लगती तो वह फिर दूर-दूर हो जाते। खलीफे की पत्नी शारीरिक रूप से भी बहुत कमज़ोर थी। जब भी खलीफा कभी लाड़ प्यार के मूड़ में आता तो वह उसका साथ ना देती। खलीफा गुस्से में उबलता उसे गलतियां निकालने लगता कहता, तेरी बहन को मैं किस के पास जाऊ? आगे घरवाली कहती, "मेरी तरफ से खुली छुट्टी है, जिसके पास मर्जी जा, खेह खाह अर्थात बस मेरी जान छोड़। खलीफे का ध्यान दिन प्रतिदिन घर से बाहर जाने लगा। उसकी एक विधवा साली थी, जिसकी वह देखभाल या मदद के लिए आम उसके घर जाता रहता था। उसकी साली भी जीजा-जीजा कहती ना थकती। वह कई वार रात भी वहां रहने लग गया था। खलीफे की घर आने से रोके। पर उसकी साली को इस में कुछ बुरा दिखाई नहीं था दे रहा। उसने अपनी बहन को, जो उससे पाँच सात साल बड़ी थी, अपने घर आने से खबरदार किया।

खलीफा अब तो पचास से ऊपर हो गया था तथा कुछ धीरज वाला भी हो गया था। जवानी में तो कहते हैं, वह औरत चाहे किक्कर पर चढ़ी हो, नीचे उत्तार लेता था। अधिकतम अर्थात ज्यादातर उसे देखकर बबुल से स्वयं ही आ जाती थी। उसका गोरा रंग व ऊपरी होंठों पर काला तिल उसकी सुन्दरता को चार चांद लगा देते थे। जब उसका रिश्ता हुआ था तो उसके ससुराल वालों ने उसकी शक्ल देखकर ही रिश्ता कर लिया था। जिसके चेहरे पर इतना आकर्षण था कि उसके गांव वालों को उसकी कमियां नज़र आती थी। उसमें बहुत कमियां थी, परन्तु खूबियां कहीं ज्यादा थी। इस लिए गांव कि सियासत में वह हमेशा छाया रहा। उम्र के अन्तिम पड़ाव में उसके लड़के उसके विरूद्ध हो गए थे। माँ के साथ हो रही ज्यादतियों के कारण उन्होंने माँ का साथ देना मुनासिब (ठीक) समझा। खलीफा घर में अलग-थलग हो गया।

एक दिन वह रूठ कर घर से चला गया। लड़कों ने पता किया कि वह उनकी मासी के पास चला गया है। उसने वहीं रहना शुरू कर दिया। लड़के व घरवाली उसको मनाने गए पर उसने गालियां निकाल कर उनको भगा दिया। खलीफे की घरवाली अपनी बहन से फिर झगड़ी उसे बुरा भला कहने

लगी, तूने तो शर्म ही उत्तार दी है। तू तो गलत ही थी, मुझे अच्छी भली को भी गलत कर दिया है। मर जा कंजरीए, बहन का घर उजाड़ कर तुझे क्या मिलेगा। निकाल इस भैंसे को घर से लोग तुझ पर थूकेंगे, उसकी बहन घुटनों में सिर देकर, आँखें बन्द कर सब कुछ सुन जा रही थी। खलीफे ने कहा, "जाती है यहाँ से की टांग तोड़ूं तेरी। कंजरीए यूँ ही सुराक में पेशाब कर रही है, ना तो तू आपं खेलती है तथा ना ही किसी को खेलने देती है। जब खलीफे ने डांग उठाई तब माँ-बेटा घर से भाग गए। जब मियां-बीबी राजी तो क्या करेगा काजी। इस मर्द (नर प्रधान) समाज में औरत सही होते हुए भी गलत है तथा मर्द गलत होते हुए भी दूध में नहाया हुआ है।

○

प्रेमा पटवारी

प्रेम सिंह का अपना गांव नौशिहरा था। हमारे गाँव वह नानके डेरी पर आया था। उसे प्रेसा पटवारी कहा जाता था। क्योंकि वह किसी वक्त पटवारी भर्ती हुआ था। प्रताप सिंह कैरों के समय पटवारियों ने अपनी मांगों के लिए हड़ताल कर दी। प्रेमा अभी नया नया भर्ती हुआ था। वह भी हड़ताल में शामिल हो गया। कैरों साहिब ने सख्त कदम उठाया तथा जो अभी कच्चे पटवारी थे, उनको नौकरी से बरखास्त कर दिया तथा प्रेमा दो ही महीने नौकरी करके घर बैठ गया। परन्तु गांव के लोग उस को प्रेमा पटवारी ही कहते रहे। चाहे बाद में दोधी का काम कर रहा था।

गांवों में प्रत्येक आदमी को पहचानने का अपना ही ढंग है। बाकी नामों की तरह प्रेम भी गांव में कई थे, एक को प्रेम गड़दौला कहा जाता था क्योंकि उसकी शक्ल भी बेढंगी थी। एक और प्रेम था, जिसकी एक आँख खराब थी। गांव वाले उसे प्रेमा काना कहते थे। एक जिमीदार का लड़का भी प्रेम सिंह था परन्तु लोग उसे प्रेम छांगा कहते थे क्योंकि उसके हाथ में छः उंगलियां थी। एक प्रेम चपरासी था परन्तु वह गांव में प्रेमा कसाई के नाम से मशहूर था। इस तरह से कोई भी गांव का आदमी छिपा या पहचान हीन नहीं रहा सकता। आम तौर पर यह नाम या उपनाम हर आदमी के लक्षणों को देखकर पाए जाते हैं। एक अन्य तरखान का लड़का शुरू प्रेम सिंह था जिसका स्वभाव बहुत कड़वा व खराब था। इस लिए गांव के लोग उसे प्रेमा कारखाना कहा करते थे।

प्रेमा जब पटवारपन से हट गया अर्थात उतर गया तो उसने पाँच सात भैंसे रख लीं। चारा उसके घर का था। इस लिए उसने दो भईये रखकर कर शहर दूध डालना शुरु कर दिया। वह मन भर (40 किलो) दूध रोज़ साईकल

पर डोहने रख करके शहर देने जाता। जब गर्मियों में या सर्दियों में दूध देने जाता तो रास्ते में वल्ला नहर बहती थी। वह नहर का गाड़ा पानी डाल कर दूध की कमी पूरी कर लेता था। उसके दूध में से एक दुकानदार ने एक मेंढकी देखी तो उसे शक पड़ गया कि कुछ गड़बड़ है। शाह लगा बड़चड़ कर बोलने। प्रेमा पटवारी उसे कहने लगा, "शाह जी, यह बात नहीं जो आप सोचते हैं। यह तो बाल्टी वो अच्छी तरह से धोया नहीं गया। काम करने वाली आज आई नहीं थी। बरसातों में स्थान-स्थान पर चलती फिरती हैं यह मेंढ़कियां। किधर से चलती फिरती बाल्टी में घुस गई होगी।" शाह की संतुष्टि हो गई।

एक दिन घर में वह जहां दूध देता था, एक औरत ने कहा, भाई तुम्हारा दूध आजकल पतला सा आ रहा है। मलाई नहीं आती। प्रेमा कहने लग। बीबी आजकल गर्मी बहुत पड़ रही है, भैंसे घास कम खाती है। पानी बहुत पीती हैं। जैसे ही पानी पीती हैं हटने का नाम ही नहीं लेती। दूध तो आप ही पतला हो जाएगा। स्त्री चुपचाप दूध लेकर चलती बनी।

उस स्त्री की एक पड़ोसन कहने लगी, "भई हमें भी दो किलो दूध दे जाया करो," प्रेमा कहने लगा "बीबी यह चुनाव निकलने दो। स्पीकरों वाले दगड़-दगड़ गाड़ियां भगाते रहते हैं। शोर-शराबे से भैंसों का दूध सुख गया है। बस चुनाव निकल जाने दो, चाहे दो चार किलो ले लिया करो,"

जब प्रेमें का लड़का जवान हो गया तो उसने उसकी शादी कर दी। उसका लड़का जिन्दा भी उसके साथ काम करने लग पड़ा। उसकी भैंसे भाग्य से सोलह हो गई थी। सवेरे को वह तथा शाम के समय उसका लड़का दूध देने जाते थे। उसका काम अग्रसर था तथा अब लोग उसको प्रेम सिंह या पटवारी साहिब कह कर बुलाने लगे। वह घर में ही दारू निकालता व रात को जी भर कर पीता खाता। उसका लड़का जिन्दा राधा स्वामी था। क्योंकि उसकी माँ भी राधा स्वामियों की बेटी थी।

प्रेमें का लड़का जिन्दा उसका सेवक था अर्थात आज्ञाकार था। वह अपने बाप को कभी भी न नहीं कहता तथा हर वक्त पशुओं की देखभाल में व्यस्त रहता था। घर का काम अधिकतम प्रेमे तथा बाहर खेती व घास चारे का काम जिन्दे ने संभाल रखा था। उसके पिता व दादे परदादे के समय से उनके

खानदान में यह रिवाज चला आ रहा था कि सब की लड़कियों अधिक व लड़के कम थे अर्थात लड़का केवल एक ही था। एक रीत अन्य खानदानी परंपरा अनुसारी प्रेमे पटवारी के संबध भी अपनी बहु के साथ ऐसे बन ही गए थे। उसने अपने घर का नाम नौशहर निवास रखा था पर गांव वाले नुह (पुत्रवधु) व ससुर निवास समझते। जिस प्रकार इश्क मुश्क छुपे नहीं रहते, इस लिए चाहे जिन्दे को इस बात का पता ना हो पर गांव वालों को सारी कहानी का पता था। घर का रिवाज होने के कारण औरतें अपने आप को इसके अनुसार कर लेती थी।

मनुष्य में यह वृति होती है कि वह अन्य को खुश देख कर खुश नहीं होता। जब किसी का काम अग्रसर हो तो लोग जल भुज जाते थे। वे किसी के दूध में कांजी डाल कर तथा दाल में अधिक मिर्चे डाल कर खुश होते थे। किसी की कमज़ोरी पर वे पर्दा नहीं डालते अपितु उसका गलत फायदा उठाने के चक्कर में होते थे। प्रेम पटवारी का परिवार बाहर से आया था। नानके (डेरी) के ऊपर बैठने के कारण उनको गांव की राजनीति का बहुत अधिक ज्ञान न था।

जिंदा बहुत चुस्त चालाक ना था। वह लाईलग था। उसके गांव वालों ने बातचीत में उस को यह कहना शुरू कर दिया था कि उन्होंने सुना है कि उनके खानदान में ससुर बहु से मेल मिलाप रखता है, जोकि अस्मत पर गिरी हुई बात है। घर की पुत्र वधु, घर की बेटी के समान होती है। इस लिए तुम्हारे बड़े-बुर्जुग पापी व ईज्जतहीन (बद ईखलाक) हैं। यह सुनकर जिंदे को शर्म सी आती। परन्तु उसकी घर बहुत अधिक पूछ प्रतीत न थी। नज़दीकी लोगों ने जिन्दे को यह भी कहा कि तेरा बाप सारी आमदन शराब के मुँह में फेंक देता। यदि इसी तरह ही चलता रहा तो तुम्हारा सारा माल पशु बिक जाएगा। आप लोग एक दिन माँगने पर मजबूर हो जाओगे। जिन्दे के लिए अपने बाप को शराब से भी पाबन्दी की हिम्मत न थी। वह तो खड़ा होकर के भी अपने बाप से सीधी बात भी नहीं कर सकता। कोई बात करनी होती तो माँ के रास्ते ही करता।

पर कहते हैं उठाई गिरी तो दीवारें फाड़ देती है। उसकी माँ भी घर के वातावरण से खुश न थी। राधा स्वामी होने के कारण उस को प्रेमे की मीट

शराब बहुत फड़कती थी। स्वयं तो वह हाथ भी नहीं लगाती थी परन्तु घरवाले के कहने पर उसे घर में यह सब कुछ बनाना पड़ता था। उसने भी जिन्दे को उठाया अर्थात भड़काया कि वह अपने बाप को शराब व तितर बटेर खाने से रोके। जैसे-जैसे माँ-पुत्र उसे रोकते वह चिढ़ कर बल्कि और अधिक पीने लगा तथा रात दिन पीता रहता। वह कह-कह कर थक गए थे। धीरे-धीरे जिन्दे के मामाओं ने भी प्रेमे को अधिक शराब पीने से रोका। उन्होंने पुलिस डलवा कर उनकी शराब एक बार पकड़वाई थी, परन्तु वह पूरा हठी था। उसने ठेके की पीनी शुरू कर दी। वह कहता कि प्रभुने यदि रिजक (रोजगार) दिया है तो क्यों बखाया पिया जाए। "मैं किसी कंजर से नहीं पीता। अपने पैसों की मोल लेकर पीता हूँ। लोगों के पेट दर्द क्यों।"

एक बार जिन्दे व उसकी मां ने उसकी बोतल छुपा दी। वह बहुत देर बोतल खोजता रहा। बोतल ना मिली। उसने एक और बोतल जिन्दे को लाने को कहा। जिन्दे की माँ ने उसे रोक दिया। प्रेमा पटवारी उठा तथा लगा जिन्दे को पीटने। माँ ने छुड़ाया तो माँ की तरफ हो गया। अन्त में छुपाई बोतल उसे दे दी तथा उनकी जान छुट्टी। प्रेम सुबह से पी रहा था। यह उसकी तीसरी बोतल थी। वह इसे भी पी कर नशे में चूर होकर खाट पर गिर पड़ा। घरवालों का उसने बुरा हाल किया। वह पटवारी से बहुत सताये हुए थे। दोनों माँ-बेटा योजना बनाकर बाहर से दरवाजा बन्द करके अन्दर आये तथा चारपाई के गिर्द खड़े हो गए। जिन्दे व उसकी माँ दोनों ने उसका गला दबा दिया व उसे मार कर खत्म कर दिया। अपने मरे हुए बाप को देखकर जिन्दा रो पड़ा। जिन्दे की घरवाली भी भागी हुई आई। ससुर को मृत देखकर वह भी रोने लग पड़ी। पटवारण ने बड़े यत्न से उसे चुप कराया तथा जाकर सोने को कहा। वह दूसरे अंदर चले गये।

सुबह हुई तो सारा परिवार रो रहा था। गावों में दारू पीकर मौतें होती ही रहती थी। यह मौत भी उसी खाते पड़ गई। गांव वाले तो पहले ही कहते थे कि दारू पटवारी को ले बैठेगी। वह सारी सीमाएं पार कर गया था। जब मुदई ही बेईमान हो जाए तो केस की तो आप ही कमर टूट जाती है। किसी ने पैरवाई न की व पटवारी को अग्नि भेंट कर दिया गया। गांव के शराबियों की पत्नियों ने अपनी पति परमेश्वरों को नसीहतें देनी शुरू कर दी तथा ना

पीने वालों का मनोबल बुलन्द हुआ। प्रत्येक अपनी रोटी सेक रहा था। जब षटवारी जिन्दा था तो सभी हाथों से छाया करते थे तथा आज सभी उसकी निन्दा करते भी सांस नहीं लेते। यह दुनिया का नियम सदियों से चला आ रहा है।

पटवारी की मृत्यु के पश्चात् धीरे-धीरे सभी अपने काम धन्धों में लग गए थे। परन्तु जिन्दे के तथा उसकी माँ के आंसू रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। वे प्रतिदिन गुरूद्वारे जाते व आंसू भरी आँखों से कहते "वाहिगुरू हमें क्षमा कर दे, हमसे ना जाने कैसी यह गलती हो गई है," देखने वाले उनके आँसू देख कर उदासी से सिर झुका कर चल पड़ते। पटवारी साहिब की कहानी सुन कर बहुत शर्म आती है तथा दिल कहने को मज़बूर होता है, "ए मुहब्बत तेरे अंजाम पे रोना आया।"

○

तेगा शुगली

बाबे का वास्तविक नाम तो तेगा सिंह था, परन्तु उसका हँसमुख स्वभाव के कारण तथा प्रत्येक बात या घटना को मज़ाकिया तरीके से पेश करके लोग उसको शुगली बाबा कहते थे। वह अपने जीवन में कम ही उदास हुआ था। वह प्रायः कहा करता था कि रोने-धोने का काम सिर्फ काफिरों (नास्तिकों) तथा बुज़दिलों का है। आदमी का काम है मक्की के दाने की तरह खिले रहना। वह गांव का दुख निवारण था। जो भी आदमी, गांव में उदासी या चिंता की मुद्रा में होता, वह शुगली बाबे की शरण में आ जाता। वह हँसा-हँसा कर उनके पेट दर्द करवा देता। वे रोते हुए आते व हँसते हुए लौटते। उसके पास नकलों, टिच्चरों (किसी को बात लगानां) व हकाईतों लतीफों का एक खज़ाना था, जिसे सुन कर वह स्वयं ही हँसने लग जाते थे।

गांव में जब भी कोई मेला या खुशी का समागम होता तो तेगा शुगली अग्रणी (प्रथम पंक्ति में) होता था। वह गुपाले यब की तरह हासरस की कविताएं व गीत हेक लगा कर, कान पर हाथ रख कर बोलता तथा लोग उसे फिर सुनाने की विनती करते। आज कल के गायकों की तरह उसे पैसे की कोई भूख नहीं थी। वह ना किसी से पैसे लेता। व ना किसी को कभी देता। गाना उसका निरोल शौक था ना कि व्यवसाय। गांव में जब भी कोई विवाह शादी का समय आता तो शुगली बाबे को विशेष रूप से आमन्त्रित किया जाता। बाबा भी अपनी तुंबी लेकर समय पर पहुँच जाता। उस में यह कुदरत की प्रशंसा थी कि वह लड़कों में लड़का युवाओं में नवयुवक तथा वृद्धों में गंभीर बुद्धिमानी की बातें मज़ाकिया तरीके से करने लगता।

बाबा तेगा सिंह बड़ा सादा व सुखी जीवन व्यतीत करता था। शहर की चमक-दमक, चुस्त चालाकी व दोहरे मापों वाली जिंदगी से उसको सख्त

नफरत थी। जैसे स्टालिन रूस के बाहर कम ही गया था। इसी तरह बाबा तेगा सिंह ज्यादा समय गांव में ही रहता था। उसे गांव के साथ बहुत प्रेम था, इस लिए वह यदि कहीं शहर चला भी जाता तो हरहालत शाम को गांव वापस आ जाता था। शहर जाना हो तो वह यके (तांगे) पर हो जाता था, (लारी) बस पर नहीं। किसी ने पूछा, "बाबा जद शहर को बसें जाती हैं तो तू तांगे पर क्यों जाता है?" बाबा बहुत धीमी आवाज में धीरे से कहता से कहता, "काका हमनें टाईम भी तो पास करना होता है। हम पहले बस पे जाएं तो तुरन्त शहर आ जाता है, फुरन्तु गांव आ जाता। हमने पहले आकर क्या घोड़े बांधने हैं? हमने पहले पहुँच कर कौन सी आग बुझानी है? इस लिए आराम से आते जाते हैं। लोगों की तरह मुझे कीड़े नहीं लड़ते।

उसको गांव की लड़के मण्डली (मुण्डीर) जब उसके विवाह की कहानी पूछते तो वह चस्के लेकर कहता, "बई लड़को, विवाह का लगन अपना ठंड़ा ही रहा। घरवालों ने मेरा रिश्ता किसी बड़े घर करवा दिया। घर भी मोटा था तथा लड़की भी सुख से बहुत मोटी ताजी थी। मैं तो अब की तरह तब भी शरीर का इकहरा ही था। मैं डर गया कि इतनी बड़ी गांठ मुझसे उठाई नहीं जाएगी। मैंने तो पीपल के नजदीक झाड़ू की तरह ही होना था। इस तरह हम घर से भार कर ननिहाल चले गए। घरवाले ननिहाल मुझे लेने आए तो हमें सच बोलना पड़ा। लड़की के भारी होने का मैंने एतराज जताया। घरवालों को बात घर कर गई तथा उन्होंने लड़की वालों को जवाब दे दिया। मैं वापस गांव आ गया। फिर घरवालों ने मुझे पतली पतंग लड़की से बाँग दिया। घर यह भी अमीर था पर लड़की बहुत ही मरीयल व मृगट जैसी थी। उसकी हड्डियां निकली हुई थी मैंने विचार किया कि ऐसी लड़की तो अन्धेरी आते ही उड़-पुड़ जाएगी। इस जैसी के घर बच्चे भी हुए तो बिल्कुल मरियल ही होंगे। मैं डर का मारा फिर मामाओं के पास जा पहुँचा। अब की बार मुझे घरवाले मनाने नहीं आए तथा न ही बाद में मेरी शादी के बारे सोचा। वे मेरी रमता प्रकृति समझ कर, मुझे जंजालों में फांसोगे से झिझक गए। मैं हमेशा शादीशुदा लोगों को मज़ाक करता था। व गृहस्थियों के दुखड़े लोगों को खोज कर सुनाया करता था, इस लिए घर वालों ने मेरे विवाह क। मूलरूप से पिंड ही छोड़ दिया।

एक बार बाबा शुगली अमृतसर दरबार साहिब माथा टेकने गया। टांगे से उतर कर जब दरबार साहिब की तरफ चला तो बाज़ार में शोर मच गया था। डोलकियां बज रही थी। तथा शोर शराबा खूब पड़ रहा था। बाबे ने आगे होकर पूछा, भाई यह क्या हो रहा है? वह बोला, बाबा यह आरती उतार रहे हैं, बाबे ने जबावी उत्तर दिया, यह भडुए अब्र जो इतनी तरलो मछली हो रहे हैं, पहले इतनी उच्ची चड़ाई ही क्यों थी। राहीगर बाबे की नादानंगी देखकर हँसने लग गए। उसने गुरूद्धारे के सिवाय कभी कोई धार्मिक स्थान या रीति देखी ही नहीं थी। इस पक्ष में वह कुँए का मेंढ़क ही था।

बाबा आगे चल पड़ा। सड़क पक्की होने के कारण, जूता घिसने के डर से उसने अपनी जूती अपनी डांग पर टांग ली तथा डांग को कन्धे पर रख लिया। एक दुकानदान ने जूते को इस तरह टंगे देखकर मज़ाक में कहा, बाबा रोटी बहुत ऊँची लटकाई है। टांगी तो भाई बड़ी उच्ची है पर कुत्तों की नज़र फिर भी पड़ जाती है। बाबे ने सहज ही कहा। बाबे का ठोस उत्तर सुनकर के दुकानदार बहुत शर्मशार हुआ तथा पेशाब की झाग की तरह बैठ गया। सफर को विराम लगा आखिर बाबा दरबार साहिब जा पहुँचा। अमावस होने के कारण भारी भीड़ थी। बाबे ने सोचा पहले स्नान करते हैं तथा फिर माथा टेकेंगे। वह सरोबर के किनारे अपने कपड़े वगैरा उतारने लगा। उसको देख कर दो चंचल सी लड़कियां उसके पास आकर कहने लगी, फुफड़ जी सासरी काल! (सत श्री अकाल) सुनाएं बुआ जी का तथा बाकी परिवार का क्या हाल है? फत्तो का क्या हाल है, छोटी मट्टो का क्या हाल है! बाबा बिना उनके अच्छी तरह पहचाने, उनकी हां में हां मिलाता गया। लड़िकयों ने कहा, फुफड़ जी यहाँ बड़े चोर उच्चके फिरते हैं। हम तेरे कपडों के पास खड़ी होती हैं तथा आप जल्दी से स्नान कर आएं। बाबे ने सारे कपड़े लत्ते वहाँ उतार दिए तथा केवल परने (तौलिया) ही कमर पर बाँध कर (लपेट कर) सरोवर में डुबकियां लगाने लगा। जब वह सहज ही स्नान करके वापस लौटा तो दोनों लड़कियां वहां से कपड़ों तथा बाबे के झोले सहित अदृश्य थी। बाबा जी चल पड़ा अपने कपड़े खोजने। जहाँ भी चार औरतें खड़ी देखता, कहने लगता, लड़की तुम में से मैं किस का फुफड़ हूँ? जब बीबियां हैरान होकर कुछ ना बोलती तो वह उदास हो कर आगे चल पड़ता तथा औरतें देखकर के फिर वहीं कहता, बीबी बहनां तुम में से मैं किस का फुफड़ हूँ।

बाबा कपड़े ना मिलने के कारण रौंदु सा हो गया उसने सेवादारों से मांग तांग कर थोड़ा बहुत कम ज्यादा कपड़े लिए तथा तन को ढ़ांपता हुआ, परना (तौलिया) सिर पर लपेटता हुआ गांव की तरफ चल पड़ा। घबराहट व परेशान होने के कारण वह रास्ता भूल गया तथा शहर की दूसरी और निकल गया। एक खुली चौड़ी सड़क पर चलने लगा। उसने नज़दीक कोई आदमी ना देख कर, सड़क की एक तरफ पेशाब करने लगा। पेशाब करते को एक सिपाही ने उसे आ गर्दन से पकड़ा। सिपाही कड़क कर कहने लगा, बाबा पगला तो नहीं गया। यूँ ही ठण्ड़ी सड़क पर पेशाब किए जा रहे हो। चल थाने। बाबे ने चादर नीचे उतारी तथा कहने लगा, ठंड़ी सड़क है तो मेरे घुँट्ट से मूत्र से यह गर्म हो चली है! कहता है चल थाने, मैंने कौन सी गधी को हाथ लगाया है? सिपाही उसके ग्रामीणपन (गवांरापन) को देख कर हँसता पीछे मुड़ गया। बाबे ने पूछ-पूछ कर गांव की खोज़ जारी रक्खी व चलता फिरता आखिर आधी रात्त गांव जा पहुँचा।

शुगली बाबे ने कुछ वर्ष फौजी नौकरी भी की थी। फौजी स्वभाव ना होने के कारण उसने जल्दी फारगी ले ली थी। एक बार लड़कों की मण्ड़ली ने बाबे को कहा, बाबा सुना है तू बड़ा बहादुर सिपाही है, कोई कहानी तो सुना? सुना है तुझे बहादरी के कई तगमें मिले हैं। बाबे ने उन की हाँ में हाँ मिलाई व चौड़ी दाढ़ी में उंगलियां फेरता कहने लगा, हमने दुश्मन की फोज़ के टुकड़े-टुकड़े कर दिए कि कोई पूछे ही ना। हमने किसी का बाज़ु काट दिया, किसी की टांग, किसी के हाथ तथा किसी के पैरों को काटा। एक लड़के ने उसको टोकते हुए कहा, बाबा और तो सब कुछ काट दिया। परन्तु सिर क्यों नहीं काटे, बाबे ने मुस्कराते हुए कहा, "वह तो पुत्र पहले ही कटे हुए थे।" लड़के हँस-हँस कर लोट पोट होने लगे तथा दीवारों को टकराने लगे।

एक बार शुगली बाबा गाँव में विवाह में शामिल था। बारातियों के भोजन का समय हो गया परन्तु महाप्रसाद अभी तक न गलने के कारण, भोजन की बड़ी तीव्रता से प्रतीक्षा हो रही थी। हलवाई ने मीट को गलाने के लिए बहुत बड़ा युद्ध किया, परन्तु बकरा बड़ (वृद्ध) होने के कारण गलने का नाम नहीं ले रहा था। हलवाईयों ने कभी गुड़, कभी पलेट कभी सोडा पा कर देखा परन्तु कामयाबी नहीं मिली। शुगली बाबा (खुण्डा) डंडा लेकर उठ खड़ा हुआ

तथा बैठे लोगों को कहने लगा, बई संगत आप में से कोई मास्टर (शिक्षक) है? संगत में से एक मास्टर बाबे के नज़दीक आ खड़ा हुआ तथा बाबे को कहने लगा, "बाबा जी सुनाओ क्या हुक्म है?" बाबे ने कहा, बेटा हुक्म कोई नहीं बस एक ही विनती है, तू इस मीट की तेग (बड़े पतीले) में कड़छा फेर देखना मीट कैसे गलता है। मास्टर ने हैरानी से पूछा, कैसे गलेगा, बाबा मुस्कुराते हुए बोला, बात बहुत साफ तो है मास्टर जी, हज़ारों लड़को की जिंदगिया गाल दी है आपने आपसे मुर्गो न गलेंगे? सारे बाराती हँस-हँस कर बाबे की जिंदादिली की तारीफ करने लगे।

एक दिन गाँव की एक सथ पर बाबे ने अपनी जिंदगी की व्यथा ऐसे सुनाई। वह कहने लगा, बई, उस दिन जो मेरे संग हुई, परमात्मा दुश्मन के साथ भी ना करे। मुझे एक अफराऊ आदमी मिला व कहने लगा, "बाबा मुझे लगता है कि तुम इस काम को बहुत अच्छी तरह से अदा कर सकते है।" बाबे ने कहा, "मैं अनजाने में उस के साथ शहर की तरफ चल पड़ा। वह आदमी सर्कस का मालिक था। उसने मेरी सूरत को शेर जैसा बना दिया तथा एक पिंजरे में धकेल दिया, जहाँ सात-आठ शेर और भी बैठे हुए थे। मुझे देखकर के वे मेरी तरफ हैरानी से देखने लगे। मैं भी उनको देखकर डर गया। मुझे लगा कि इनको मेरे सामान की बदबू आई तथा वे अब मेरी बोटियां कर देंगे। मैंने अपना अन्तिम समय जानकर वाहिगुरू को याद किया तथा चड़दी कला में जाने के लिए बोला, "बोले सो निहाल।" आगे से सारे शेरों की आवाज आई सत श्री अकाल। मैं बच गया तथा यह जान कर खुश हुआ कि बाकी सभी शेर भी मेरी तरह, लाल ही थे। लड़के समझ गए कि बाबा गप्पे भी मार लेता है। परन्तु उसकी गप्पें रोचक होती हैं।

मरने से पहले बाबे ने अपने भक्तों से यह इच्छा प्रकटाई कि उसकी अर्थी के आगे आतिशबाजी की जाए व भंगड़े डाले जाएं। उसके शिष्यों ने हु-ब-हु वैसा ही किया। परन्तु जब उसका सस्कार करने लगे तो सब की आँखें भर आई। वे अपने बाबे की चिता देखकर दहाड़े मारने अर्थात फूट-फूट कर रोने लगे। सारा गाँव पहले कभी नहीं था रोया इस तरह से। रौनकों का राजा सदा के लिए उनमें से उठ गया था। तेरा लुटिया शहर भंवोर नी ससीए बे-खबरे।

करामात अली

उसके अब्बा ने उसका नाम करामात अली रखा था परन्तु सभी उसको करमली ही कहते थे तथा वह भी करामाती कहलवा कर खुश था। उसकी दादी ने उसका नाम करामाती डाला था तथा बाद में यही नाम ही पक्क गया। किसी को याद भी नहीं होगा कि उसका कोई अन्य नाम भी हो सकता है। करामाती पर सारी उम्र मुसीबतों के पहाड़ टूटते रहे। वह बिना नागा गाँव के मज़ार मियां लाल शाह पर माथा टेकने जाता परन्तु मुकद्दर का सिकंदर वह कभी भी न बना।

वह मरासी मुसलमान था। उसका पेशा (धन्धा) चाहे नकलें करना तथा विवाह शादियों के समय गाना तथा नाचना था, परन्तु करामाती को अपने पारिवारिक पैरों से नफरत थी। वह समझता था कि इस्लाम में नाचना कूदना मना है। वह शुरू से ही धार्मिक रूचीयों वाला था तथा मजहब के नियमों का उल्लंघन नहीं करता था। उसने भैंसों, गायों का कारोबार शुरू कर दिया। परस्पर बातचीत में वह बहुत निपुण था तथा ग्राहक को शीघ्रता से डाल लेता था। पहले तो वह नज़दीक के गाँवों में पशु खरीदता तथा बेचता पर बाद में वह मण्ड़ियों में अपनी किस्मत अजमाने लगा। इसी तरह उसकी आमदन दिनों दिन चौगनी (चार गुना) हो गई। वह शादी करवा कर भाईयों से अलग हो गया तथा अलग स्थान मोल लेकर ठाठ से रहने लगा।

एक बार इस तरह घटना घटी कि उसके पशुओं वाले कमरे ऊपर पराली की छल पड़ी हुई थी तथा पशुओं को ठंड से बचाने के लिए उसने उनको अंदर बाँधना शुरू कर दिया। लोहड़ी के दिन किसी ने सुलगती सिगरेट छत पर दे मारी। देखते ही देखते आग सारी छत पर फैल गई तथा करमली की दो भैंसे तथा दो सारी गाएं आग की भेंट चढ़ गई। परन्तु फिर भी बाप के

बेटे ने दिल ना छोड़ा। उसके शरीक भीतर ही भीतर बड़े खुश हुए उसके इस नुकसान परन्तु वे इस प्रसन्नता को करामाती के साथ बाँट नहीं सकते थे। करमली ने अगले वर्ष सर्दी शुरू होने से पहले ही पक्की छत डाल ली तथा पशु भी और खरीद लिए। उसने बैंक से कर्जा लेकर ही पशु खरीदे व पशुओं के कोठे की छत डाली थी। इसी कारण उसका गुजारा (निर्वाह) कठिन हो गया था। सहनशीलता से उसने यह दिन भी काट लिए।

कर्जे के मार तथा पशुओं के नुकसान के कारण, करमली की घरवाली बीमार रहने लगी। करमली ने उसे बहुत समझाया कि जीवन में अच्छे-मन्दे दिन आते जाते रहते हैं तथा दाते की रज़ा (परमात्मा की मर्जी) से ही सब कुछ होता है, परन्तु उस स्त्री को कोई भी दलील काट नहीं रही थी। दिन प्रतिदिन बड़ रहे कर्जे तथा ब्याज का गम उसे घुन की तरह खा रहा था। शरीके भी उसे डरा रहे थे कि एक न एक दिन करमली का सब कुछ कुर्क हो जाएगा। उनके परिवार में से उन्होंने जीवन में प्रथम ही कर्जा लिया होगा, इस लिए वह अधिक व्याकुल हो गई थी। उसे रात को नींद नहीं आती थी। कोई दवा दारू उस पर असर नहीं कर रही थी। इन कुलक्षणे दुखों कलेशों का भार सहती हुई, वह अल्ला को प्यारी हो गई तथा पीछे छोटे-छोटे तीक लड़के छोड़ गई।

करमली को कर्मो बचाने के लिए ऐरे गेरे नत्थु खेरे से भी और कर्जा उठाना पड़ा। उसने कोई डाक्टर, हकीम तथा सियाना भी नहीं छोड़ा। इन शुभचिंतकों ने करमली का एक दाना भी न छोडा। आखिर जब वह मरी तो आधा वह स्वयं भी मर चुका था। अब उसके लिए रोटी का मसला भी खड़ा हो गया था। उसकी कोई लड़की नहीं थी, जो इस क्षण समय को सम्भालती। उदासी के इस आलम में वह मियां लाल शाह के मज़ार पर गया तथा मज़ार के सांई के साथ अपनी मुसीबत के बारे विचार विमर्श किया। साईं ने उसे सलाह देते हुए कहा, देख बई करमली यह मुसबीतें तेरे कर्मो का फल है, तूने गाऐं जलाई हैं, उनका पाप तो तुझे लगना ही लगना। मियां लाल शाह स्वयं गाय रखते थे तथा उसका दूध पीते थे। तेरे गुनाह को बस वही बख्श सकते है। तू ऐसा कर दो दुधारू गाय लाकर लाल शाह को भेंट कर, तेरी बला टल जाऐगी मरता क्या न करता। करमली के पास दो दुधारू गाएं थी,

वे उसने साई के खूंटे पर बाँध दी। उसके घर बच्चों को पिलाने के लिए दूध न बचा, परन्तु सिर का भार उतारने के लिए यह भी बहुत जरूरी था।

उसने अपना घर बसाने के लिए एक विधवा और कर ली, जो उसका खाना बनाती व सौतले बच्चों को संभालती। उसके अपने बच्चे नहीं थी।, इसलिए करमली तथा सौतेली माँ बच्चों को प्यार करने लगे। अगले वर्ष दाते की कृपा अर्थात मेहर हुई कि उसके घर पुत्री ने जन्म लिया। सांई ने फरमाया कि यह कन्या करमली के घर का कायाकल्प कर देगी। परन्तु हुआ विपरीत। करमली के घरवाली का शिले का बुखार लम्बा होता गया तथा दिनोंदिन तेज़ होता गया। वह बुखार के भेंट हुई तथा साथ ही बेटी। साई के कथन अनुसार घर का भाग्य बदल गया।

यह सारा दुख भी करमली ने सांई के साथ बाँटा। सांई ने सहजता से दाड़ी खुजलते हुए कहा, देख भाई करमली, तुने सच्चे दिल से गाएं नहीं मनसी (चढ़ाई) तेरी नीयत दान के समय डोल गई थी। इसी कारण तेरी आफत पूरी तरह से नहीं टली। तुझे अब दस तौले सोने की गाए सांई को भेंट करनी होगी। करमली ने अपनी दो भैंसे बेची व दस तोले की गाय बना कर सांई को श्रद्धा से भेंट की। इस बात का गांव में किसी को पता नहीं था परन्तु भाईयों ने सारा पोल खोल दिया था। सांई बहुत ही लालची होने के कारण पहले ही बदनाम था। करमली की खस्ता हालत देखकर तथा उसके साथ की ठगी सुनकर, वे बहुत दुखी हुए। उन्होंने करमली को सांई की सभी करतूतों (दुष्कर्मो) के बारे में बताया तथा भविष्य में हर तरह का फिक्र छोड़ कर, नेक कमाई करने की सलाह दी। करमली को भी सांई की चालों पर शक होने लगा।

करमली अपनी शंका निवृत करने के लिए शहर गया तथा एक बड़ी मस्ज़िद के मौलवी को मिला। बड़े सांई ने उसका दुख समझते हुए, हमदर्दी से कहा, "तूने गुनाह नहीं किया। गायों को चाहे आग ने जलाया है परन्तु उनकी मृत्यु में तेरा कोई रत्ति भर भी हाथ नहीं, किन्तु उल्टा तूने तो उन्हें बचाने के लिए पूरा जोर लगा दिया। पुत्र तूने कोई पाप नहीं किया। पाप तो तेरे गाँव के मज़ाहर ने किया है। जिसने धोखे से तुमसे दस तोले सोना ऐंठ लिया है। उससे सोना वापस ले। तेरी पत्नी का मरना, उन गायों की मौत के

साथ संबंध नहीं रखता। शिले के बुखार से कई औरते ज्यादातर अल्ला को प्यारी हो जाती हैं, उसकी आई थी वह चली गई। इस तरह वहम भ्रम में न पड़, तथा अल्ला की इब्बादत करके पाक कमाई कर।

बड़े सांई की हदायातें व परामर्श सुनकर कर्मली लोहा लाखा हो गया उसको गाँव के सांई की बगला भक्त वाली ठगी सुनकर क्रोध आ रहा था। वह लौटते ही मियाँ शाह की मज़ार पे गया व सांई के साथ गर्म ठण्ड़ा होने लगा। सांई क्रोध में आकर उल्टा उसे गालियां निकालने लगा। गुस्से से पागल हुए कर्मली ने छुरी सांई के पेट में घुसा दी तथा वह वहीं चित हो गया। मज़ार पर माथा टेककर वह सीधा गांव के सरपंच के सामने पेश हुआ। पुलिस के सामने भी उसने अपना पूरा गुनाह कबुल कर लिया। उन्होंने कर्मली के विरूद्ध कोई गवाह न पेश होने दिया। कर्मली छः माह के बाद शक का फायादा लेकर साफ बरी हो गया।

उसके बरी होने से गांव की फिज़ा में असर (फर्क पड़ा) हुआ सांई घुल्ले शाह ने मज़ार पे गदर मचा रखा था, उसने कर्मली की तरह कई भद्र पुरूषों को बहला फुसला कर ठगा था। वह मीठी छुरी था। उसके सताए हुए लोगों ने कर्मली का साथ व सर्मथन देकर उसको साफ बरी करवाया था। यह भी सुनने में आया था कर्मली ने अपनी रक्षा के लिए ही सांई घुल्ले शाह को चाकू मारा था। यदि वह ना मारता तो सांई उसे मार देंता। बरी होने के बाद उसने फिर मज़ार पर माथा टेक तथा साई मियां लाल का धन्यवाद किया। कर्मली का घर छिन्न-भिन्न हो चुका था। उसने बड़ी हिम्मत जुटा कर फिर पशुओं का व्यापार शुरू किया वहाँ खिदमत (सेवा) करने के लिए कई पंख तोल रहे थे। सावन के पहले रविवार को मज़ार कमेटी ने सर्वसम्मति से कर्मली को इस मज़ार का मुख्य सांई बनाया। कई लोगों ने कर्मली से कत्ल होने के कारण इसका विरोध किया परन्तु अधिकतम लोगों ने इसका साथ ना दिया। फलस्वरूप कर्मली घरबार त्याग कर मज़ार पर जा बैठा। कर्मली आज भी इसी मज़ार का सांई है। घुल्लेशाह ने सांई के वकार को मिट्टी में मिला दिया था। कर्मली इस बिगड़ी को बनाने के लिए तथा हज़ारों नगर निवासियों के विश्वास को बहाल करने के लिए अपना घरबार छोड़ कर मज़ार पर ही रहने लगा था। इस मज़ार से उसकी जीवन यात्रा शुरू हुई थी। इस मज़ार के सांई

घुल्लेशाह ने उसे दोनों हाथों से लूटा व जलील किया था तथा अब इस मज़ार से ही फिर उसका घर बना था तथा लोगों ने सर्वसम्मति से उसे इसका मुख्य सेवादार नियुक्त किया था। उसने भी घर जंजाल की सारी जिम्मेदारियां लड़कों पर डाल दी, मज़ार को ही अपना असली तथा आखिरी घर मान लिया था। जब उसके पुराने मित्र-दोस्त यहाँ माथा टेकने आते तो कर्मली को वहाँ बैठा देख कर कहते, बहुत समय के पश्चात् सांई मियां लाल शाह यहाँ आ विराजै हैं।

उसका अन्दर बाहर एक था। बल-फरेब वह जानता नहीं था। उसके कत्ल को लोगों ने करके, गाँव के वशिष्ठ व्यक्तियों ने सर्वसम्मति से खुशी-खुशी उसको बहुत पवित्र स्थान का ग़द्धीनशीन बना दिया। बाबे कर्मली ने इसी भावना से कई वर्ष इस मज़ार की तन-मन-धन से सेवा की।

○

फुकरा

थोड़ा बहुत तो हर कोई फुकरा होता है, परन्तु सीमा से अधिक दिखावा करने वालों को लोग नफरत करने लगते हैं तथा उनको चिड़ कर फुकरा कहते हैं। बलवन्त सिंह उसका नाम था परन्तु उस के फुकरेपन के कारण लोग उसे केवल बलवन्त ही कहते। वह एक ऐसा व्यक्ति था जो अपनी सोने की अंगुठी दिखाने के लिए अपनी कुल्ली को आग लगा सकता था। वह जब किसी अमीरजादे से बात करता तो अपनी आँखे नीचे गाड़ता परन्तु गरीब से बातचीत के वक्त नज़र नीचे ना करता। ताकतवर की खुशामद व कमज़ोर को जलील करना उसके स्वभाव कर हिस्सा बन चुका था।

आरम्भ से ही जब अभी वह स्कूल में पढ़ता ही था तब ही वह बड़े चमकीले व भड़कीले कपड़े पहनता था। लड़कियों की तरह उसके कपड़े रंग बिरगें तथा शानदार (फैशन वाले) होते थे। उसके सहपाठी उसे लड़की कहकर चिढ़ाते थे। परन्तु इस हँसी ठिठोली को वह हँसकर टाल देता। वह बड़ा बन संवर कर, सुरमा डालकर स्कूल आता था तब श्रेणी में रौनक आ जाती थी। दिन निकल जाता था। लड़के विभिन्न प्रकार के वस्त्र देखने को उत्सुक रहते तथा वह भी प्रति दिन कोई न कोई झाँकी पेश करता। वह मध्यम वर्ग के जिमींदार का इकलौता पुत्र था तथा घरवाले भी उसकी प्रत्येक इच्छा पूरी करते रहते थे। उसे पुस्तकों की अपेक्षा विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का अधिक शौक था। यदि उसकी कमीज सफेद होती तो उसके बटन लाल होते। नीचे की बनियान नीले रंग की होती। जिसको दिखाने के लिए वह ऊपर के बटन खोल कर रखता था। लोगों का ध्यान खींचने के लिए वह गर्मियों में बड़े-बड़े फूलों बालीटी शर्टे तथा सर्दियों में फर्रवाला कोट लण्ड़े बाज़ार से लाकर पहनता था।

उसका तौर तरीका (रहन-सहन) देख कर गाँव वाले उसे हिप्पी कहते थे क्योंकि उसे हिप्पियों की तरह अपने बाल पीछे की तरफ लटकाए हुए थे तथा कंघी उसकी पैंट की जेब में होती थी।

जब उसकी बारात निकली तो उसने एक सौ कारें किराये पर लीं तथा गाँव के बाहर सड़क पर खड़ी कर दीं। प्रत्येक कार में एक बाराती तथा उसको शराब की एक बोतल, भुजिया तथाएक गिलास दिया गया। अपने लिए उसने फूलों से लदी बड़ी कार मंगवाई तथा इस तरह से यह कारों का कारवाँ/काफिला नाचता, कूदता, खाता पीता व पैंले डालता रात के समय लड़की वाले घर पहुँचा। वहाँ जाकर उसके पिता ने वहाँ पैसों को लुटाई नहीं कि बल्कि पर्चियां डाली। एक पूर्ची पर दुधारू गाय लिखा था जिसके हाथ यह पर्ची लगेगी, उसको यह गाय देनी थी। जब यह पर्चियां फैंकी गई तो लोग टूट कर पड़ गए। एक बुढ़ी मंगती को यह पर्ची मिली। सब के सामने उसको यह गाय भेंट की गई, जिसको बलवन्ते के साथ लेकर आए थे।

बारात का जलुस देखकर दूर-दूर के गाँवों के लोग बारात देखने आऐ यही दृश्य बारात की विदाई के वक्त हुआ था। वृद्धा गाय को हॉक कर अपने घर की तरफ ले जा रही थी तथा बछड़ा फुदकियां मारता उसके पीछे-पीछे जा रहा था तथा शेष खाली पर्चियों वाले वृदा के भाग्य को बढ़ा रहे थे। तथा आपने भाग्य को कोस रहे थे। बलबन्ते के ससुराल वालों ने बारात की चढ़त देखकर अपनी आर्थिकता से अधिक दहेज दिया तथा उसका घर भर दिया। बलवन्ते को एक कार भी दी गई जब कि उस समय ज्यादा लोग साईकल तथा सिलाई मशीनें ही दहेज में दिया करते थे। विवाह के बाद बलवन्ते ने अपने दहेज की नुमाईश लगाई तथा लोगों को दिखाने के लिए मुनादी पिटी। सारा गाँव कार तथा शेष सामान अलग-अलग किस्म का देखने के लिए उमड़ा। लोग चाय पानी पीते तथा वाह-वाह करते उसके बाप को बधाई देकर जा रहे थे। इस विवाह की चर्चा कई दिनों तक इस गाँव में रही।

विवाह में बलवन्त ने सीमा से बढ़कर खर्चा किया था। जब विवाह हुए को महीना ही बीता, तो लेने-देने वाले चक्कर लगाने लगे। कपड़े वाले चुन्नी शाह के अभी पूरे पैसे देने थे। टैक्सी वालों के आधे पैसे देने वाले थे। विवाह से पहले बलवन्त ने अपने लिए भव्य भवन बनवाया था, जिसे वह

कोठी कहता था। ठेकेदार के साथ अभी हिसाब करना बाकी था। सरिये, लक्कड़ तथा सीमेंट वाले भी चक्कर पे चक्कर काट रहे थे। लोगों ने पहले समझा कि यह बलवन्ते को बधाई देने आते हैं। परन्तु बाद में उन्हें उनकी मन्दी हालत का पता लगने लगा। इन लेनदारों को लारे लप्पों से ही टरकाया जाने लगा तो उन्होंने इधर-उधर की बातें करनी शुरू कर दीं। बलवन्ते की लला-लला होने लगी। पानी सिर से गुजर रहा था। बलवन्त ने अपने बाप से परामर्श करके पाँच एकड़ खेत गिरवी रखे तथा लेनदारों को दफा किया।

सारे इलाके को बलवन्ते की नकली चौधर का पता चल गया था। बलवन्त का बाप तो इस बदनामी से ही खाट पर पड़ गया तथा उसकी लापरवाही ही उसकी मौत का कारण बनी तथा वह चन्द महीनों में ही चलता बना। उसके चाचे ताऊ उसको इस कुकर्म कारण कोसते रहते थे परन्तु बलवन्ते का ध्यान केवल अपनी शानो-शोकत तथा चौधर को फिर से बहाल करने की तरफ था। उसकी कार को खड़े छः महीने हो गए थे। पिता की मौत के बाद उसने कार को बाहर निकालना शुरू कर दिया था। वह प्रत्येक रविवार शहर से दोपहर का खाना खाने के लिए परिवार सहित कार लेकर जाता व शाम को गाँव लौटता। वह गाँव का चक्कर लगाकर कार हवेली में लगाता। जब कार चलती देखकर के गांव के लोग ललचाते तो बलवन्त खुशी में फूला ना समाता। रंगदार चश्मा लगा वह कार में बैठा लोगों की तरफ नज़र फेरता, छिपकिले की तरह गर्दन सीधी किए रहता था।

बलवन्त अब अपना खोया हुआ सम्मान वापस लाने करने की ताक में था। लोहड़ी के मौके वह पर अपनी बहन को लोहड़ी देने गया। आगे वहाँ भांजे के जन्म के कारण खुसरे नाच रहे थे। काफी लोग खा-पी-कर नाच रहे थे। बलवन्ते ने भी दो पैग लगाकर खुसरो के पश्चात भण्डों पर पैसे लुटाने शुरू कर दिए। एक तरफ उसकी बहन का देवर नोटों की वर्षा कर रहा था दूसरी तरफ बलवन्ता भी उसे मात देने के लिए बार-बार बटुआ निकाल कर दस-दस, बीस-बीस के नोट ज़ोर-ज़ोर से बांटने लगा। खुसरे व भाण्ड प्रतिस्पर्था करते हुए बेवस होने तक नकले करते व नाचते रहे तथा गाते रहे। थक हार कर बलवन्त सो गया। दिन को उठकर नहा धोकर जब वह लौटने लगा तो जेब्र खाली थी। शर्मीदा होकर बहन से सौ रूपए उधार लेकर वापस आने योग्य हुआ।

इसी तरह बलवन्ता एक दिन कुछ खरीददारी के लिए शहर घूम रहा था। राम बाग के पास उसे इलाके का थानेदार मिला। बलवन्ते ने उसे सेवा पानी की निवेदन की। निवेदन को ना ठुकराते हुए वह दो तीन सिपाहियों को लेकर नज़दीक के अहाते जा बैठा। थानेदार ने दो किलो मछली खाने के पश्चात् दूसरी बोतल मंगवा ली। पुलिस वाले मुफ्त के माल का आनन्द उठाकर, बलवन्ते से हाथ मिलाकर चलते बने। बलवन्ते ने मछली वालों तथा ठेकेवालों का भुगतान अभी करना था। उसके पास केवल 150 रूपए थे तथा बिल 350 रूपए का था शेष राशी के भुगतान के लिए वह अपना सोने का कड़ा अमानत रख आया तथा अगले दिन गांव से शेष राशि देकर कड़ा छुड़वा कर ले गया। उसने बहुत ज्यादा अपमान का सामना करना पड़ा था परन्तु ऐसी परिस्थियों का सामना करना उसकी आदत बन चुकी थी।

उसने अपने दोनों बच्चों को पहले शहर तथा फिर डलहोजी शिक्षा के लिए भेजा था। वह बड़ी कठिनाई से फीसों के खर्चे चला रहा था तथा उधर बच्चे महानालायक थे। लड़के तथा लड़की दोनों को वहाँ से उठाकर शहर किसी सरकारी स्कूल में दाखिल करवाया गया तथा उन्हें विशेष नकल करवाकर बड़ी मुश्किल से दसवीं में पास करवाया गया। परन्तु लोगों को वह अक्सर अपने बच्चों की योग्यता की प्रशंसा करता तथा दोनों को श्रेणी में प्रथम आने के बारे बड़े गर्व से कहता। इस तरह उसने मार कर बच्चों को डलहोजी पड़े होने का झांसा देकर, उनकी अच्छे घरों में शादी की तथा मुँह मांगा दहेज लिया। इसी दहेज नकदी की उल्टी-पल्टी लगाकर अपनी पुत्री की शादी करवा दी तथा उसे भी चौगुना दहेज दिया था। चाहे उसका पुत्र के ससुर व साले दहेज की इस खुर्द बुर्द करने में घुर्राते रहे परन्तु बलवन्ता अपना उल्लु सीधा करके ही हटा।

अपने बुजुर्गो की याद में वह हर साल कीर्तन दरबार करवाता था तथा दूर-दूर से रागी बुलाकर, संगतों को निहाल करता था। रागी तथा कथाकार उसकी सिफतें करते थे तथा उसकी गुरू घर से प्रेम की गुड्डी बाँधते थे। कीर्तन के बाद बलवन्ता गांव में खीर तथा जलेबीयां का लंगर बाँटता तथा गाँव वाले उंगलियां तथा होंठ चाटते घर का रास्ता मापते। कीर्तन दरबार के पश्चात् रागी सिंह सेवाफल के लिए उसको फोन मारते तथा करियाने वाले

शाह भी उसे 'सत श्री अकाल' बुला कर बकाये के बारे पूछते। बलवन्त बातचीत से प्रत्येक का पुत्र देकर लौटाता तथा लेनदार बुड़बुड़ाते हुए वापस जाते। वे बलवन्ते को पांखवडी व दंगी कहने लग गए थे। वह प्रत्येक वर्ष नये रागी बुलाता था क्योंकि उसने पिछले साल वालों के आधे खर्चे-बर्चे भी देने होते थे।

उसने शहर में कई कमेटियां डाली हुई थी। वह पहली कमेटी उठाकर आगे से कमेटी देनी बंद कर देता था। वे उसके पीछे दौड़ते, घर वह दाव नहीं देता था। गाँव के सहकारी बैंकों से उसने लाखों का कर्जा लिया हुआ था परन्तु वह बैंकों को पल्ला ना पकड़ाता। वह अंदरखाते सोचता कि किसी समय सरकार ने चुनाव से पहले माफ कर ही देने हैं। इस आशा में ही वह बड़ी नमोशी में जी रहा था। बलवन्ते के रिश्तेदार तथा शरीक उसके साथ ऊपरी तौर पर ही मिलते थे। वे हमेशा उसके फुकरेपन के अफसाने लोगों के साथ बाँटते रहते थे। उसका सही अर्थों में कोई भी मित्र नहीं था। चाहे लोग उसके साथ खुश होकर बोलते थे परन्तु बलवन्ते का कोई जिगरी दोस्त नहीं था। चाहे वह भीडों में विचरता था परन्तु असल में वह अकेला था। वह किसी को भी गंभीरता से नहीं लेता था तथा ना ही उसे कोई गंभीरता से लेता था। उसकी घरवाली को पहले पहल बलवन्ते की कार्यप्रणाली अलग सी तथा कुरुप लगती थी परन्तु धीरे-धीरे उसे भी चमारों की पुत्रबधु की तरह बदबू मार गई थी। अब वह भी बलवन्ते के फुकरे कर्तव्यों में रस-मिस गई थी तथा हर फुकरी के वक्त उस के अंग संग होती थी।

बलवन्ते जैसे लोग शहरों में आम होते हैं परन्तु गाँव में ऐसी नस्ल विरली ही होती है। इसी कारण वह ग्रामीण समाज में मकबुल न हो सका। यहाँ तक की उसे अपने ही शकभरी नज़रों से देखने लगे।

हँसते वसते गाँव में वह ही एक अकेला रह गया था।

○

तुंबी वाला बुकन

उसका घरवालों की तरफ से रखा नाम नघबीर सिंह था, परन्तु उसके दोस्त व विद्यार्थी उसे बुकन साहिब कह कर बुलाते थे। रेडियो तथा टी.बी. पर उसकी तुंबी के साथ गीत आम आते थे। इस लिए वह हमेशा अपने उस्ताद की तरह तुम्बी के साथ ही गाता था।

वह वेरके में पैदा हुआ। जहाँ उसका पिता प्राइमरी शिक्षक था। वह अपने बहन-भाईयों में सब से छोटा तथा लाडला था। पढ़ाई में चाहे मध्यम ही था परन्तु संगी-साथी उसके मिलनसार व गर्मजोश घरवालों से था वे सभी उसका आदर-सत्कार करते थे।

चाहे जाति से वह चमार सिक्ख का बेटा था, परन्तु उसकी जाति-पाति को कोई गंभीरता से नहीं लेता था। उस के मानवी गुणों के नेहभरे स्वभाव के कारण, उसे बड़ा अच्छा इन्सान समझते थे। वह स्वभाव का निर्मल व विशाल हृदय था। जब भी उसके पास पैसा आता तो वह अपने दोस्त मित्रों में खर्च कर देता।

वह मैट्रिक करके खालसा कालेज दाखिल हो गया। वहाँ भी उसने गाना जारी रखा। उसकी ज्यादातर पहचान एक गायक होने से ही थी। वह कालेज के समागमों व महफिलों का श्रगांर बन गया। एक बार कालेज की सीढ़ियों से उतरते एक सहपाठन ने बताया की उसकी अंगूठी कहीं उसके हाथ से निकल गई है। उसे निराश देखकर बुकल ने कहा, कोई परवाह ना कर, एक की दो अंगुठियां बनवा दुँगा। यह सुनकर लड़की फिर कायम हो गई तथा कहने लगी, मिस्टर बुकन, आप बड़े जौली गुड़ फैलो हो। हँसते-हँसते दोनों सीढ़ियों से नीचे आ गए।

उसकी नज़र शुरू से ही बड़ी कमज़ोर थी तथा दारू अधिक पीने के

कारण उसकी आँखों का नंबर बढ़ता गया। वह खादी की पगड़ी बाँधता था तथा कभी-कभार अचकन व चूड़ीकदार पजामा पहनता तथा पूरा नेता लगता। उसका चेहरा एक कांग्रेसी नेता महेन्द्र सिंह गिल जैसा था। लोग भुलेखा खाकर उसके आगे खड़े होकर कहते, यह तो गिल साहिब हैं। उस की दस्तार की तरफ देखकर उसके एक दोस्त सौखी ने मखौल से कहा, दूर से देखा, मोटी-मोटी ऐनक, मोटी-मोटी पगड़ी तथा मोटी-मोटी अक्ल वाला बुकन ही होगा, और कौन हो सकता?

उसने पहली बार जब अचकन व चूड़ीदार पजामा पहना तो देखते ही उसके पिता गियानी महेन्द्र सिंह ने कहा,

यह क्या पहनकर आ गया है। ऐसा लगता है जैसे भाटड़ों का दामाद हो। बाप का स्वभाव भी मिलनसार था, इस कारण बाप-बेटे, शेष भाईयों से अलग, इक्टठे रहते थे।

एक बार बुकन साहिब को किसी मित्र ने हैदराबाद होटल में शाम को पार्टी में बुलाया। जिगरी यार इक्टठे हुए। जैसे-जैसे महफिल गर्म होती गई, वह गीतों से सभी का मनोरंजन करता रहा। धीरे-धीरे दोस्त मित्र बिखरने शुरू हो गए पर वह निश्चिंत अपने मेज़ पर दोस्तों से गपशप करता रहा। वह बाथरूम करके आया तो मेज़ खाली था तथा चारों तरफ नज़र घुमाई तो हाल में कोई भी उसका साथी वहाँ हाज़िर ना था। उसको अकेला देख बेहरे ने बिल उसके आगे ला रखा। उसने बताया कि वह तो स्वयं मेहमान है तथा पार्टी तो कोई और दे रहा था। क्योंकि मौके पर वह ही हाज़िर था इसलिए बिल उसे ही देना पड़ेगा।

बुकन के लिए अब मुसीबत बन गई। उसे अपने यारों पर बहुत क्रोध था परन्तु वह इस वक्त बेबस था। उसकी जेब में बस पचास-साठ रूपए थे जब कि बिल सात सौ रूपए था। उसने अपनी घड़ी मैनेजर को देते हुए कहा कि वह इसे गिरवी रखले, वह प्रभात को पैसे देकर छुड़ा लेगा मैंनेजर ने घड़ी बड़े ध्यान से देखी। उसकी कीमत सौ रूपए या एक सौ पचास रूपए से अधिक ना थी। उसने तुरन्त घड़ी वापस कर दी तथा कहा, जनाब, इसमें नहीं पूरा होगा, बिल अदा को। मरता क्या ना करता। बुकन साहिब ने अपनी खादी की पगड़ी जो कि बीच में सिलाई की हुई थी, उतारकर मैनेजर के

आगे रखी तथा कहा–जनाब, मैं सरदार हूँ। सरदारों की इज्जत पगड़ी होती है, मैं कल पैसे देकर जाऊँगा तथा पगड़ी ले जाऊँगा। मैनेज़र को यह तजवीज पसन्द नहीं थी। उसने पगड़ी को वापस देते हुस कहा, यह खादी की पगड़ी है तथा वह भी बीच में सिली हुई, इन आठ–दस रूपए से पूरा ना होगा? सरदार जी पैसों का प्रबन्ध करो।

बुकन साहिब के लिए यह दूसरा झटका था, उसने मायुसी में दूसरी पगड़ी बाँधी तथा अपने एक कारोबारी दोस्त से पैसे मँगवाकर बिल का भुगतान करके अपनी जान छुड़ाई। वह होटल से निकल कर सीधा वेरके जाने के लिए रेलवे स्टेशन गया। वेटिंग रूम में उसके सभी दोस्त; जो कि उसको होटल में छोड़कर चोरों की तरह भागे थे, सोए हुए मिल गए। उसने जूता उतारा तथा जूते के संगीत से सभी को जगाया। उसने अपनी हास्यपद व्यथा सुनाई तथा सभी पहले हँसे फिर उससे अफसोस करते हुए गुस्तारवी माफ करवाने लगे।

उसकी कम हो रही नेत्र ज्योति उसकी मुख्य चिन्ता का विषय थी। एक बार जब वह मुख्य अध्यापक था, दफतर से स्टाफ की पगार निकलवा कर लाया। रास्ते में उसे कुछ यार–मित्र मिल गए, जिनके साथ वह किसी होटल में पीने बैठ गया। जब सभी टल्ली हो गए तो सब ने नाचना शुरू कर दिया। बुकन ने अपने मित्रों पर पगार वाले नोटों को वारण शुरू कर दिया। कुछ नोट दोस्त ले गए तथा कुछ बेहरे। सुबह गिनने लगे तो पाँच सौ कम था।

एक बार उसने एक शादी में तुंबी के साथ सेहरा बोला। जूतों की तरह नोटों (रूपयों) की बरसात हुई। बाद में हमने गिने तो छः सौ से ज्यादा थे। इतनी देर में कुछ लोगों ने बड़े नोट तुड़वा कर उससे सिर पर वारने तथा शगुन डालने के लिए छोटे लेने शुरू कर दिए। उसकी नज़र ने पूरा साथ ना दिया, जब फिर से गिने तो पाँच सौ से कम रह गए थे। इतनी देर में एक और नोट तुड़वाने आया। बुकन ने खीझ कर कहा, सरदार जी माफ करो... मेरे पहले ही छः सौ के पाँच सौ रह गए हैं लोग उसकी कम नज़र का फायदा उठाकर पचाँस का नोट देखकर, सौ का नोट ले जा रहे थे।

बुकन साहिब को दारू पिलाने वालों की कैमी नहीं थी। शिव कुमार बटालवी की तरह उसको भी उसके जिगरी यारों ने मरवाया था। बुकन साहिब

एक दिन आप एक आप बीती सुनाने लगे। कहने लगे, फतेहपुरी, हमें दिन को दिखाई नहीं देता। हम दारू पीकर स्कुटर चलाते हैं तथा अंजाम देखलो। एक दिन मैं नपोली (रैस्टोरैंट) में से एक पार्टी से फारग होकर रात के दो बजे कंपनी बाग के रास्ते वेरके जाने लगा। मेरा स्कुटर जब हस्पताल की दीवार के नज़दीक से गुजरा तो मैं एकदम रूक गया। धर्र-धर्र करता जाए। ना आगे ना पीछे। मैंने बड़ा हैंडल घुमाया परन्तु वह आगे ना जाए, फिर एकदम स्कुटर निकल आया।

वास्तव में दो पुलिस वाले वृक्ष के नीचे घोड़ों पर खड़े थे। वह रात की गशती पुलिस थी। मुझे अन्धेरे में पता ही ना चला कि वे खड़े हैं। मेरा स्कुटर उन दोनों के बीच में से निकलने के कारण उनकी रकाबों में फंस गया था फिर जोर लगाने पर निकल गया। मेरा आगे निकल जाने के बाद वे पीछे से सीटियाँ मारने लगे। परन्तु मैंने ध्यान नहीं दिया था तथा बाग में से निकल गया। फतेहपुरी मेरे जैसों का तो परमात्मा ही रखवाला है।

वह बहुत भावुक आदमी था। उसकी जान पहचान का घेरा बहुत विस्तृत था। एक दिन मैं उसके साथ कचहरी की तरफ जा रहा था तो रास्ते में उसका कोई ज्ञाता मिला। उसके साथ कोई उसका दोस्त मित्र था। उसके ज्ञाता ने अपने मित्र से बुकन की जान पहचान करवाते हुए कहा, “यह है बुकन साहिब, रेडियो कलाकर।” यह सुनकर वह कहने लगा, यह बुकन है, यह तो बुकनी जैसा है, यह तो एक दम बुकनी (गोलक) है। ज्ञाता के मित्र से बुकन की थोड़ी बहुत मित्रता थी, इसलिए उसने यह मज़ाक किया था। बुकन बहुत हाज़िर जवाब था। उसने कहा, भाई साहिब बिल्कुल ठीक कहते हैं... एक कुत्ते होते हैं पामेरियन, जिनको मेमें (अंग्रेज औरतें) गोद में लिए फिरती हैं, मैं वही हूँ तथा आप आवारा फिरने वाले, जो हर नत्थु खेरे से डांगे खाते हो। बुकन की हाज़िर जवाबी पर हम सभी हँस पड़े तथा मज़ाक करने वाले ने मोम की तरह बुकन को अपनी बाहों में ले लिया अर्थात भीच लिया।

एक शाम को बुकन मेरे घर आया। उसके साथ उसका मित्र भी था। समय देखकर मैंने पैग पीने का निवेदन किया। बुकन तो पी लेता था परन्तु उसके मित्र का मुझे पता न था। मैंने पूछा यह भाई साहिब पी लेते हैं? बुकन बोला, इस भाई साहिब की बात करते हो, इनको नीचे भी उड़ेल दो तो भी पूरी चाट

जाएंगे। हम हँस-हँस कर दोहरे हो गए। उसका मज़ाक करने का अपना ही अन्दाज़ था। उसके मज़ाक का बुरा नहीं मनाता था।

एक बार वह तथा मैं गोंईदवाल के मेले जा रहे थे। हम बस से उतरकर बातें करते गुरूद्वारे की तरफ जा रहे थे। अचानक एक कुत्ते ने बुकन की टाँग पकड़ ली तथा दौड़ गया। हम एक दम सुचेत हुए तो कुत्ते के बारे में खेलते बच्चों से पूछा, वह जो काला कुत्ता जा रहा है, कहीं हल्का तो नहीं, एक बच्चे ने कहा, वह कुत्ता नहीं... प्रीतो की कुत्तिया है, हल्काई नहीं। उसने बच्चे दिए हैं, इसलिए सब को काटने दौड़ती है, यह सुनकर बुकन कहने से ना रह सका, अरे लड़कों, प्रीतो को कहो आप आकर काटे, कुत्तिया को क्यों छोड़ रखा है। नज़दीक सुनने वाले सभी हँस पड़े तथा बात आई गई हो गई।

वह जिंदादिल, वे फिक्र तथा हर वक्त खिला रहने वाला इन्सान था। वह हर बात को हँस कर टाल सकता था। वह स्कूल का मुख्य अध्यापक था परन्तु कमेटी के साथ उसकी हमेशा अनबन रहती थी। इसी महौल में उसे थानों व अदालतों में खज खराब होना पड़ता था। परन्तु इन राहों का राही वह बिल्कुल नहीं था। इस झगड़े के कारण वह चिंतित रहने लगा तथा उदासी की परछाई उसकी सारी शख्सीयत पर पड़ने लगी। वह धीरे-धीरे नीम बाबरा हो गया तथा एक दिन दिल की धड़कन बंद होमे के कारण इसी फानी संसार से सब को रोते बिलखते छोड़ कर, कुच कर गया।

बुकन ने कुच नहीं किया, अपने दोस्तों मित्रों के दिल में रहता है तथा रहेगा। ऐसे लोग समाज के हीरे होते हैं। जहाँ भी चाहते हैं, हँसी खुशियां तमाशे परछाई की तरह उनका पीछा करते हैं। बुकन साहिब की बातें आज भी उसके दोस्त बड़े गर्व से करते हैं। हर कोई उसके साथ बिताए क्षणों को याद कर गौरव महसूस करता है। उसकी साधारण सी बातचीत चुटकलों का रूप धारण कर चुकी है। उसके मित्र आज जब भी अपने रोमार्ग जीवन में उदास होते हैं तो बुकन की बातें याद कर फिर जीने योग्य हो जाते हैं।

अरे बुकना! जिस रात को तू पैदा हुआ था रोज-रोज नहीं पैदा होंगे तेरे जैसे हीरे।

○

पंगेबाज

पूर्णचन्द्र हीरा लाल व्यापारी का इकलौता पुत्र था। कहते हैं कि हीरा लाल को वलैती अजवाईन बेचने से एक जबरदस्त उछाल आने से उसको अन्नतका फायदा हुआ था। उसने व्यापार त्याग दिया तथा दिन रात दारू तथा तितर की तरफ हो गया। उसके पास इतना पैसा आ गया था कि उसकी मति ही मारी गई थी। वह रात दिन दारू चार पाँच वर्ष पीता रहा तथा दारू में डूब गया। काफी धन उसने बर्बाद छोड़ा था परन्तु फिर भी कुछ बच गया था। घर की बाग डोर अब पूर्ण के हाथ आ गई थी। पूर्ण ने अपने पिता को दारू की बाढ़ में गोते खाते हुए देखा था, इस लिए उसने पिता की मृत्यु के पश्चात् दारू से सदा के लिए तौबा कर ली थी।

वह अपने बाप दादओं के गर्व तथा स्थान को नये सिरे से स्थापित करना चाहता था। उसके दिमाग में इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कई योजनाएं थी। वह बहुत हिम्मती व उद्यमी था पर मेहनत की कमी से, उसकी कई योजनाए धरी-धराई रह गई थी। सरकारी कार्यों की तरह वह किसी काम को बड़ी दृढ़ता तथा श्रद्धा से शुरू करता परन्तु उसे मंजिल पर पहुँचाने के लिए उसके कदम लड़खड़ा ने लगते तथा लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही वह लौट आता। इस तरह उसके धन का बहुत क्षय हुआ था तथा बहुत ज्यादा खजलखुआरी भी हुई थी।

पिता के देहांत के पश्चात् घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए उसने सर्वप्रथम लक्की ड्रा की स्कीम शुरू बड़े धूमधाम तथा इच्छाओं से शुरू की। गांव के सरपंच ने पहला ड्रा निकाला तथा लोगों ने नज़दीकी गाँव से भी सदस्य बनकर इस योजना का लाभ उठाया। जिसका महीने के अन्त में लक्की ड्रा निकलता, उसके पांव जमीन पर ना लगते। दो वर्ष तक तो बहुत

काम चला। ऊपर से पाकिस्तान से जंग शुरू हो गई। हर रोज़ की बमबारी अनेक लोगों को बर्बाद कर दिया था तथा लोग अपने घर छोड़ कर सीमा से दुर अपने रिश्तेदारों की तरफ भाग रहे थे। पाकिस्तान दिनों-दिन आगे बढ़ रहा था। लोगों को अपनी जान के लाले पड़े थे। पुर्ण का काम बहुत प्रभावित हुआ। उसकी अदायगी तथा भुगतान रूक गए। लोग कमेटियां उठाकर भाग गए। चाहे जंग महीने के बाद ही बन्द हो गई पर उसका असर बड़ी देर तक रहा। पुर्ण से पैसे माँगने वाले ज़ोर डाल रहे थे तथा लेने वाले लारे लप्पे लगा कर समय निकाल रहे थे। लेने वालों ने तो पैसे लेकर ही उसकी जान छोड़ी परन्तु देने वालों ने उसे ठेंगा दिखाया। इस तरह उसने अपनी जेब से पैसे देकर यह स्कीम बन्द की। पाकिस्तानी जंग पुर्ण को ले बैठी थी।

रोज़ की खीच-खीच से पिण्ड छोडने के लिए उसने शहर मे अपना कारोबार शुरू किया। उसने चार सिनेमाओं की कंटीनौं के ठेके ले लिए। उसने बोली ज्यादा देकर ठेके लिए थे। उसने प्रमाणित समान डाल कर कर्मचारियों के साथ धंधा शुरू किया। बिक्री तो खूब होती थी परन्तु उसे एक सिनेमा से दूसरे सिनेमा की तरफ भाग दौड़ करनी पड़ती थी। वह बारह बज़े से रात के दस गयारह बजे तक सिनेमा घरों की गश्त करता रहता तथा जरूरत का समान भेजता रहता। उसके लिए यह काम वास्तव में नया था। उसके कर्मचारी इस धन्धे की धांधलियां समझते थे वर्ष के आखिर में, जब उसने हिसाब किया तो उसकी झोली तिनका भी ना पड़ा। सारी भाग दौड़ तथा खाना खराबी बेकार गई। वह अपने कर्मचारीयों से लड़ा-झगड़ा पर लड़ने से पैसे थोड़े वापस मिल जाते हैं। उसने मायूस होकर यह धन्धा त्याग दिया तथा वापस गांव आ गया। उसने अपने परिवारिक काम को फिर से शुरू किया। उसने करियाना (नमक तेल) की दुकान खोल ली तथा साथ ही जिनसों (फसलों) का व्यापार शुरू किया। नई फसल आने पर वह किसानों से अनाज़ सस्ते भाव खरीद लेता तथा सर्दी में मंहगे भाव बेचने लगा। उसने इस काम के लिए एक नया गोदाम भी बनवाया। कुछ सालों के बाद ही उसकी बल्ले-बल्ले होने लगी।

गांव में सरपंची के चुनाव आए। पैसे-रूपए वाले ही यह चुनाव लड़ सकते थे। पुर्ण शाह को उस के समर्थकों ने खड़ा कर दिया। उसने लोगों को

ज्यादा खिला-पिला कर यह चुनाव जीत लिया तथा अब लोग उसे पुर्ण सरपंच कहने लगे। सरपंची के केस में उसे ब्लाक, थाने कचहरी भी प्राय: जाना पड़ता था। वह अपनी जेब से पैसे खर्च कर लोगों का काम भी करवा देता था। गरीब लोग उसका पानी भरते थे। लोगों से तो उसने वाह-वाह लूट ली, सरकारी अधिकारी तथा पुलिस में तो वह मकबूल हो गया परन्तु रात दिन बहुत समय बाहर-अंदर रहने के कारण उसका अपना कारोबार चौपट हो गया। उसके नौकर उसे खाए जा रहे थे। दुकान पर मनों भर (बहुत ज्यादा) उधार चढ़ गया था। पैसे देने का कोई नाम नहीं था ले रहा। व्यापार का काम भी सरपंची के बीच में ठप ही रहा था। गोदाम खाली पड़ा था। उसके गले में घास उगने को फिरता था। उसकी धर्मपत्नी ने अपने भाईयों को बुलाकर पुर्णशाह पर दबाव बनाया कि वह सरपंची त्यागे तथा अपने घर-करोबार की तरफ ध्यान दे। उसने भी अपनी गलती तथा लापरवाही महसूस की। जितना नहाए उतना पुण्य। उसने अगले चुनाव में गांव की सियासत से किनारा किया तथा अपनी गलती तथा लापरवाही महसूस की। अपनी दुकान तथा गोदाम को फिर से भरना शुरू किया।

इलाके में कंपनी ने एक पैट्रोल पंप खोलना था। उसने अपने एक साथी बुढ़ सिंह, जो कि एक महज़बी सिक्ख था, उसके नाम लाईसेंस ले लिया तथा उसके साथ सांझीदारी कर ली। ज़मीन तथा इमारत को खड़ा करने में सारे पैसे पुर्ण शाह ने ही लगाए थे परन्तु बैंक तथा कंपनी का खाता बुढ़ सिंह के नाम ही था। बुढ़ सिंह पहले पहले कचहरी में सेवादारी का काम करता था। पुर्ण शाह ने उसे सरदार बुढ़ सिंह बना दिया था। बुढ़ सिंह की अब बहुत उठती थी तथा वह नोंकदार पगड़ी बाँधने लग गया था। वह पुर्ण शाह के गिर्द उपग्रह की तरह घुमता फिरता। पैट्रोल पंप इलाके में एकेला होने के कारण बहुत चलने लगा पंप पर ज्यादातर बुढ़ सिंह ही बैठता था। शाह का कर्जा तो उसने पहले ही उतार दिया था क्योंकि सब कुछ तो बुढ़ सिंह के नाम ही चलता था। इसलिए लोगों के बहकावे में आकर, उसने आँखें फेरनी शुरू कर दी। शाह की तरफ उसका उसका आना-जाना बहुत कम हो गया था। अब वे केवल पंप पर ही मिलते थे।

एक दिन पंप पर बुढ़ सिंह तथा उसके साले दारू खींच रहे थे तथा मौज

गटटु पहलवान

गांव में सुमों का कद सब से छोटा था। उसके शेष बहन भाई तो मध्यम कद काठी के थे परन्तु उसके जन्म के समय पता नहीं कौन सी बिल्ली छींक ग़ई थी, वह केवल पौने चार फुट ही रहा। वह गोल मटोल तथा पेटु सा था। उसकी शक्ल देखकर कोई हँसे के बिना नहीं रह सकता था। उसे कुदरत ने दो गुणों का वरदान दिया था, जिसके कारण गाँव में उसकी सदैव आवश्यकता बनी रहती थी। वह दस कलासें पास था। उसकी लिखाई बहुत सुन्दर थी तथा उसका गणित बहुत तेज था। गांव अनपढ़ नारियां उसके घर खत पत्र लिखवाने, पढ़ाने आती जाती रहती थी तथा नर उसके पास खेतों, घास तथा दिहाड़ियों का हिसाब किताब करने आते थे। जब हिसाब में कोई रूकावट आती तो वे भागे सुमों की तरफ आते थे। वह बड़ी पेचिदा तथा पुराने हिसाब की गुंजलें पल-क्षण में निकाल देता था।

उसके पास औरतें, गांव की पुत्रवधुएं तथा बेटियां खत पत्र के बहाने आती तथा आकर कितनी देर उसके साथ गपशप करती रहती। जाती दफा वे कभी उसकी गाल पर च्युटीं काट जाती या उसके पेट पर कई बार जब दाव लगे तो उसका मुख चूम लेती तथा सुमों हँसता रहता तथा उनकी अठखेलियां देखता मंत्र मुग्ध (मस्त) रहता। इसी तरह आदमी भी अंधेरे सवेरे उसके पास आकर अपने जोड़जमा ठीक करते रहते तथा उसके साथ अश्लील सवाल जवाब करते रहते। वे कहते, पहलवान यदि तेरी शादी हो गई तो क्या करोगे? वक्त को पकड़ा जाएगा। तेरी घरवाली ने तो दो दिन नहीं टिकना (रहना) सिर पर टांगे रखकर दौड़ जाएगी! अच्छा होगा तो शादी के झंझट में मत पड़ना। वह सुनकर हाँ-हाँ छोड़ता तथा इस प्रकार समय हँसते खेलते निकल जाता था।

लोगों ने उसके अपने-अपने नाम रखे हुए थे। कोई उसे गेंद, कोई गटटु पहलवान कहता, कोई सुमो तथा कोई लौटा कहता था सुमो किसी भी नाम का गुस्सा नहीं करता था। उसे गुस्सा बिल्कुल नहीं आता था। बल्कि वह सुनकर हँस देता। जो मुँह में आए लोग उसे कह देते तथा अपना रांझा खुश कर लेते। जब वह किसी समय आ रहा होता था तो ऐसा लगता था जैसे फुटबाल गोलों की तरफ जा रहा है। जाने के बाद भी वे उसे के पीछे कितनी देर उसकी बातें करते रहते थे। वह चलता फिरता मनोरंजन था।

चाहे उसकी शादी नहीं थी हुई तथा ना ही होने की संभावना थी अर्थात संभावना मध्यम थी परन्तु गांव की औरतों के साथ उसके धनिष्ठ संबध थे। खत पत्र की ओट में वे उसके साथ विभिन्न प्रकार के मज़ाक करती रहती थी। आते वक्त उनकी चाल धीमी होती थी परन्तु जाते वक्त वे घोड़े की तरह भागती जाती। चाहे उसमें मर्दों वाली या सुन्दरता वाली कोई गल-बात नहीं थी। परन्तु फिर भी उस में एक एसी चुंबकीय शक्ति थी, जिस सदके (कारण) वे बिना बुलाए उसकी तरफ भागी चली आती। गांव वाले उसको खुसरे की भांति गैर खतरनाक समझते अपनी औरतों को उसके पास जाना गलत नहीं थे समझते। वह लिखने पढ़ने तथा हिसाब किताब का किसी से कोई सेवा फल नहीं लेता लेता था। औरतों की सेवा करके वह खुश होता था तथा वे भी।

वह बच्चों का छोटा साइकल चलाता था क्योंकि बड़े साइकल पर उसके पैर नहीं पहुँचते थे। वह कभी कभार घर का ट्रेक्टर लेकर खेतों को निकलता। वह गियर लगाते वक्त खड़ा हो जाता था तथा लगाकर फिर बैठ जाता था। इसी तरह उसे ब्रैक भी खड़े होकर लगानी पड़ती थी। दूर से देखने पर वह ट्रेक्टर पर नज़र नहीं था आता। ऐसा लगता था कि जैसे टरैक्टर आप चल रहा हो। वह बस में बैठा चाहे दो सवारियों का स्थान ग्रहण कर लेता था पर पीछे से देखने पर प्रतीत होता था कि जैसे सीट खाली है। वह सीढ़ियां तो बड़ा ज़ोर लगाकर चढ़ता पर उतरता फटाफट नीचे लुढ़कता आता था। उसका पेट इतना बड़ा हुआ था कि खड़ा होने पर उसे अपने चरण नज़र नहीं आते थे। वह साइकल तो बैठकर ही चलाता था परन्तु देखने वाले को खड़ा होकर चलाता प्रतीत होता था।

वह दाढ़ी-मूँछ शेव करवाकर रखता था। इसी कारण, वह दूर से दस बारह साल का बच्चा लगता था। उसने बस या रेल में कभी पूरी टिकट नहीं ली थी। जब कभी टी.टी डिब्बे में आ जाता तो वह नज़दीक किसी औरत या आदमी की टांगों के पास जाकर खड़ा हो जाता। टी.टी. जब टिकट चैक करके आगे निकल जाता तो वह फिर अपनी सीट पर चौड़ा होकर बैठ जाता। आने जाने वाले उसे काका कह कर बुलाते तथा उसके साथ बच्चे के सतर की बातें करते। उसकी आवाज तो पहले ही बच्चों की तरह थी। जब वह तोतली-तोतली बातें करता तो ऐसा लगता कि जैसे वह गा रहा हो। उसकी सुरीली व दिलचस्प बातें सुनकर सुनने वाले की थकावट उतर जाती।

वह गुरू घर का बहुत प्रेमी था। एक बार गांव की औरतों की सभा ने हजुर साहिब जाने का प्रोग्राम बनाया। समान को संभालने के लिए गांव के बूढ़े चौकीदार को जोकि गुरू घर का बड़ा श्रद्धालु था, साथ ले गई। सुमो ने भी एक मन्नौती की पूर्ण करके वहाँ जाना था। वह भी स्त्री सभा के निमन्त्रण पर उनके साथ चल पड़ा। उन्होंने एक ट्रक किया हुआ था। सभी हँसते खेलते तीसरे दिन हजुर साहिब पहुँच गए। सुमो रास्ते में बीमार हो गया। वहाँ पहुँचकर वह माथा टेककर अपने कमरे में आ जाता वहाँ स्त्रियों में से कोई खराब तबीयत का बहाना बनाकर उसके कमरे में चली जाती तथा उसके साथ अठखेलियां करती ऐसा वे उसका हाल-चाल जानने के बहाने करती थी। उसके जाने के बाद कोई और आ जाती तथा इस प्रकार उसका दिल लगा रहता। दोनों अठखेलियां करने लगते। दिल खुश करके वह वहीं लेट जाता तथा वह बीबी फिर बीबीयों में जा मिलती।

दस दिन की यात्रा में चार-पाँच स्त्रियां, जो उसके गांव में से ही करीबी थी, उसके साथ किसी न किसी बहाने, समय या असमय सुमो के साथ दिल बहलावा करती रहती। उनके सुमो के संबध में एक दूसरे में राज सांझे थे। रात होती तो सुमो वृद्ध चौंकीदार के साथ हाल के कमरे में एक कोने में लेट जाता। जब वृद्ध पाठ कर रहा होता तो सुमो खर्राटे मार-मार कर उसको सोने के लिए मज़बूर कर देता।

एक बार गांव के सलाना मेले में कुश्तियां हुई दूर-दूर से पहलवान

अपनी ताकत अजमाने के लिए हुम हुमा कर पहुँचे। कई नामी पहलवानों की बड़ी रोचक कुश्तियां हुई तथा दर्शकों ने तालियाँ लगाकर उनको पूरी दात दी। अन्त में सुमो पहलवान का मुकाबला एक पड़ोसी गांव के एक बौने आदमी के साथ रख दिया। सुमो पटों को तेल लगाकर थापियां मारता अखाड़े में उतरा। उधर दूसरी तरफ से, पड़ोसी गांव का चिड़ा छलेड़ा पहलवान उसके मुकाबले पर खोरु डालता अखाड़े में आ धमका। लोगों ने तालियों से दोनों का स्वागत किया। दोनों पहलवान भूखे शेरों की तरह एक दूसरे पर टूट पड़े। वे एक दुसरे को चित करने के लिए, एक दुसरे के गिर्द चक्कर लगाने लगे। आधा घंटा कुश्ती होती रही। कभी सुमो उसे नीचे पटक लेता, कभी चिड़ा। अन्ततः कुश्ती बराबर छूटी। दोनों पहलवनों को इलाके विधायक ने दो-दो सौ रुपए नकद इनाम देकर निवाज दोनों पहलवान पैसे लेकर चिघाड़े मारते अपने साथियों के पास वापस चले गए तथा मेला उज़ड गया।

बारह वर्ष के पश्चात तो कहते हैं रूड़ी की भी सुनी जाती है। सुमो की भी आखिरकार सुनी गई। उसकी माँ की यह तीव्र इच्छा थी कि उसके जीते जीते उसका लड़का घोड़ी चढ़ जाए। उसकी एक भाभी अपने मायके से एक बौनी लड़की का रिश्ता लाई। उसकी माँ ने झट से कबुल कर लिया। सुमो के लिए एक घोड़ी सजा कर लाई गई। उसकी बहनों व भाभीयों ने वागें गुन्धी, सुरमें डाले तथा सारे कार-विहार तथा शगुन बड़े चाव से किए गए। वह घोड़ी पर बैठा ऐसे लग रहा था जैसे सरबाला हो। सुमो लड़की को विवाह कर के ले आया तथा गांव की कई औरतें उसकी बीबी को शगुन डालने आई। पाँच सात दिन अधिकतम उसके घर, शगुन वालों का शुगल-मेला चलता रहा। खुसरे नाचते रहे, भंड नकलें उतारते रहे तथा भिखारी मांगते रहे। अब सुमो अन्ततः गृहस्थी वाला बन बैठा था लोग जोड़ी देख कर हँसते तथा चले जाते।

दो तीन साल सूखे ही निकल गए। सुमो के घर कोई औलाद ना हुई। घरवाले सलाह (मशवरा) करके नौ दस साल के उसके एक भतीजे को उसकी गोद बिठा दिया। सुमो का पहले ही उसके साथ बड़ा स्नेह था। वह लड़का कुछ ही दिनों में भर जवान हो गया। एक दिन यह भतीता भागु अपने माता-पिता को साथ लेकर स्वर्ण मन्दिर माथा टेकने गया। वह चले तो

इक्टठे थे परन्तु उनकी उनकी चाल अलग-अलग होने के कारण, भागु व उनके बीच काफी दूरी पड़ गई। एक आफरे ने उसे आगे-आगे जाता देखकर कहा, भाऊ युँ ही मुँह उठाए आगे-आगे भागा जा रहा है, पीछे अपने बच्चों का ख्याल रख, कहीं भीड़ में ईधर-उधर ना हो जाऐं। फिर युँ ही खोज़ते फिरोगे। भागु बहुत शर्मीदा हुआ। जब उसने अपने मां-बाप से यह बात की तो सुमो हंस-हंस कर दुगना हो गया।

सुमो ने अपने लड़के का विवाह बड़ा सजधज कर किया तथा सभी संबंधी तथा रिश्तेदार बुलाए। घोड़ी के आगे जब बाराती नाचते तो सुमो ऐड़ियां उठा-उठा कर भंगड़ा डालने वालों के सिर से नोट वारता रहा था। वह घरवाली का हाथ पकड़कर नाचने लगा। एक जने ने सुमो को कंधों पर उठा लिया तथा भंगड़ा डालने लगा। संबंधी से मिलनी भी कंधे पर उठाकर करवाई गई। सब ने हँसते-हँसते ही इस मौके का आनन्द लिया।

शादी के बाद सारा कारोबार भागु ने संभाल लिया। अपनी मन्नौती पूरी करने के लिए सुमो घरवाली के साथ हज़ुर साहिब की तरफ चल पड़ा। स्त्री सभा की औरतें उसे स्टेशन पर गाड़ी चढ़ाने आई दोनों को हारों से लाद कर गाड़ी में बिठाया गया। उसके लिए रास्ते में खाने के लिए लड्डू, जलेबियां तथा मिठाईयां लेकर आई थी। सब ऐसा लग रहा था जैसे सुमो तथा उसकी सिंहनी उनके अपने ही सके सहोदरें हों बावन वर्ष तक वह जिंदा रहा। उसके स्वर्गवास होने के बाद गांव की चहल-पहल, मौज मैला व मस्तियां पंख लगाकर उड़ गई। सभी उसका बिछड़ना महसूस करने लगे।

OO



बलविन्दर सिंह फतेहपुरी

नाम : बलविन्दर सिंह फतेहपुरी

पिता का नाम : सरदार बिशन सिंह आड़ती

माता : श्रीमती नारायण कौर थिंद

शैक्षिक योग्यता : एम.ए. फिलासफी, अंग्रेजी, पंजाबी, इतिहास।

प्रकाशित रचनॉए : जागने के दिन आए, भारत की बेटी, मौजी लोग हिन्दी में।

पंजाबी में आठ उपन्यास, सात रेखा चित्र, चौदह पुस्तकें निबन्ध, दो पुस्तकें जनरल।

व्यवसाय : अध्यापन, प्रिंसिपल पद मुक्त

जीवन संगनी : श्रीमती रतजनीत कौर (प्रिंसिपल पद मुक्त)

संतान : डॉ. अमरदीप सिंह थिंद, पी.सी.एस डॉ. गगनदीप सिंह थिंद, एम.सी.एच.

निवास : ननकाना साहिब एस.बी.एस सीनियर से. स्कूल, फतेहपुर राजपूता, (अमृतसर)

मोबाईल : 09814619342



9788188017294